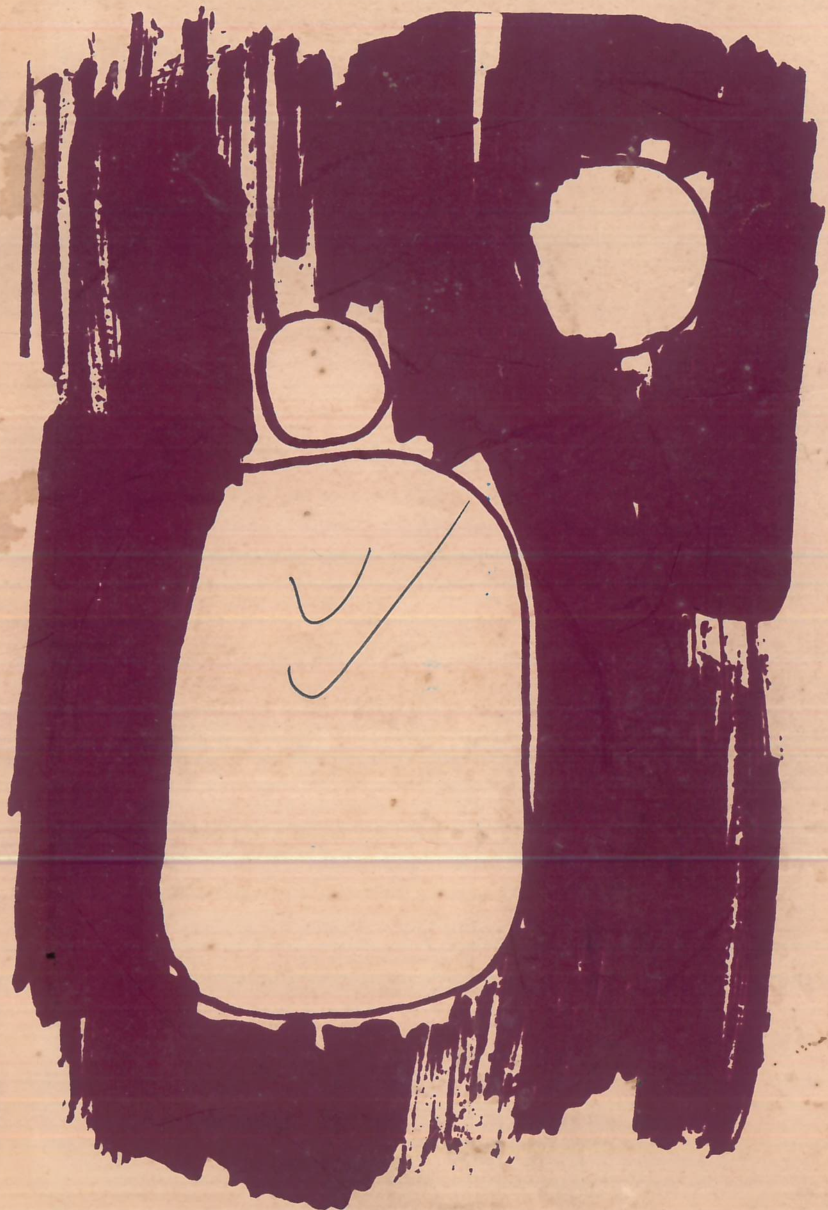
1

सन्धान



मिथिला समाजक प्रगतिशील चेतनाक जरूरी पोथी

सन्धान

सम्पादक

अशोक

प्रकाशक

मित्रम् प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स

भिखना पहाड़ी, नयाटोला

पटना-4

कविवर आरसी प्रसाद सिंहक स्मृतिमे

सन्धान-परिवार

परामर्श-हरेकृष्ण झा

प्रबन्ध-अरूण आचार्य

विज्ञापन-सुनीत

सम्पादन-अशोक

प्रकाशन, संचालन एवं सम्पादन
पूर्णतः अवैतनिक/अव्यवसायिक

सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र-
सी-407,आफिसर्स फ्लैट
बेली रोड, पटना-1

मूल्य-60 रु०

प्राप्ति स्थान :

1. फोटो कॉपी सेन्टर
   संजय गांधी मार्केट
   (इन्कमटैक्स ऑफिसक सामने)
   वीरचन्द पटेल पथ, पटना-1

2. सरस्वती पुस्तक महल
   (एस० टी० सेभरिंग्स हाई स्कूल कैम्पस)
   कदमकुआँ पटना-3

मुद्रक एवं प्रकाशकः
मित्रम् प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स,
भिखना पहाड़ी, नयाटोला
पटना-4, दूरभाष: 660060

मुखपृष्ठ-**शाहंशाह आलम**

वर्ष 1 अंक 1 : जनवरी 1997

सम्पादकीय : मिथिलाक खोज / 4

निबन्ध

हेतुकर झा : मैथिल अस्मिता: किछु विचारणीय बात / 7

महेन्द्र नारायण कर्ण : पुरान संरचना ओ नव परिवेश: बदलैत अन्तरजातीय सम्बन्ध / 11

गोविन्द झा : मैथिलीक भविष्य : समाजशास्त्रीय आकलन / 22

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' : कत्ते दिन जीयत मैथिली ? / 26

कविता

नारायणजी : उपज/अंगना/जल / 31-32-33

संजय कुन्दन : एकटा किशोरक प्रार्थनागीत / 34
प्रेमक आरम्भ/ 35
ओकर स्वप्न मे जेबा सँ पहिने / 36

धीरेन्द्र कुमार झा : की करितियैक /फेर एक बेर / 37-38
: इन्द्रधुनष / 40

कथा

शिवशंकर श्रीनिवास : सिनुरहार / 42

विमर्श

मोहन भारद्वाज : कथा कहबाक अर्थ दुर्गञ्जन नहि होइत अछि / 48

पुनर्मुद्रण

मनमोहन झा : मीनाक्षी / 55

अनुवाद

मूल-अनीता देसाइ
अनु० हरेकृष्ण झा : संगतिया / 67

अन्तरंग वार्त्ता

कथाकार राजमोहन झा
सँ अशोकक अन्तरंग वार्त्ता : आधुनिकता एकटा सकारात्मक आ धनात्मक मूल्य अछि / 78

पोथी-1

हसीना मंजिल : दूर देस पलायनक मृगतृष्णा आ 'श्रमशील स्त्रीक संघर्षगाथा / 88

पोथी-2

प्रसंग चारिटा

कविता-संग्रहक : एकपेरिया आ राजपथ टपैत कविता / 93

एहि अंकक रचनाकार / 101

सन्धान – 1

सम्पादकीय

मिथिलाक खोज

हमरा सभ सनक लोक जे मिथिला मे जन्म लेलक, मिथिलाक प्रति आकर्षण उपजलैक, आइ मिथिलाके ठीक सँ जनबाक लेल बेकल अछि । की थिक मिथिला? जे आइ धरि इतिहास, साहित्य आदि द्वारा कहल गेल अछि? अथवा किछु आन जे एखनधरि नहि कहल गेल अछि । हमरा सभक कान मे मैथिली, मैथिल आ मिथिला शब्द पड़ैत रहल । देखलहुँ किछु गोटे एहि पाछू बेहाल छथि । जाहि किछु लोक के बेहाल देखलहुँ ओहि मे किछु ब्राह्मणत्त्वक हड्डी पर मैथिलत्त्वक चाम चढ़बैत भेटलाह । किछु लोक अपन पतक्का ऊँच करबाक लेल मैथिलीक ढोल पीटैत भेटलाह। किछु के अपन सर्वस्व मैथिलीक पाछू स्वाहा करबाक उन्माद मे सेहो देखलहुँ। एतेक प्रताड़ना, पराभव, गिंजनक बाबजूदो कतेक आँखि मे आशा आ विश्वासक दीप ओहिना निरन्तर जरैत देखलहुँ । मुदा अधिकांश मैथिली आ मैथिलक नाम पर अपन मुँह नुकबैत भेटलाह । हीनताबोध सँ किछुके पतनुकान लेने त' उच्चताबोध मे गौरवे आन्हर सेहो देखलहुँ । मोटा मोटी ई सभटा बात मिथिला समाजक क्रीमी लेयर सँ सम्बन्ध रखैत अछि । विशिष्ट वर्ग सँ सम्बन्धित अछि । मिथिला समाजक सामान्यजन खास क' कए निरक्षर, अर्द्धसाक्षर, निम्नवर्गक आ निम्नमध्यमवर्गक लोक (जे संख्या मे अत्यन्त विशाल अछि) एहि हलचल सँ एकदम फराक, निरासक्त, निरपेक्ष रहल अछि । ओकरा धरि एहि विषयक कोनो चेतना नहि पहुँचि सकल ।

की मिथिला माने केवल गंगा, गण्डिकी तथा कौशिकी एहि तीनू नदीक तट पर स्थित भू भाग मात्र थिक ? की मिथिला माने खाली गौरवमयी सांस्कृतिक परम्परा सँ मण्डित एक उज्ज्वल अतीत मात्र थिक ? की मैथिलीक भजन करैत अपनहुँ पाग पहीरि अनको पहिरा क' अपना मे मिलेबाक भ्रम पसारैत मंचीय परम्परा क इतिहास, मिथिलाक इतिहास के प्रतिविम्बित करैत अछि ? की एहि सांस्कृतिक परम्परा पर गौरव बोध करबाक अधिकार मात्र मिथिला समाजक ब्राह्मण आ कर्णकायस्थ के छनि? की एहि गौरव बोधक जयघोष आन जाति वर्ग मे हीनताबोध भरैत अछि से सोचबा-विचारबाक पलखति विशिष्टवर्ग के भेटल अछि ? की वर्त्तमान मे मिथिला समाजक स्थिति एकदम दयनीय आ सोचनीय नहि भ' गेल अछि ? की एहू स्थिति मे जीवनक प्रति आसक्ति, संघर्षशीलता, उत्सवधर्मिता, अतिथिस्नेह, सामाजिक-साम्प्रदायिक सदभाव सनक मूल्य कोन संजीवनीक बलें मिथिला समाज मे बचल अछि से तकबाक बेगरता नहि होइत अछि ? वर्त्तमान मे मिथिला समाजक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक उन्नति आ विकास लेल सोचैत-विचारैत की ई नहि लागि रहल अछि जे मिथिलाक

खोज नवछोर सँ प्रारम्भ कर' पड़त । एकांगी दृष्टिक पटाक्षेप क' सर्वांगी दृष्टि आ एकात्म भावक संग वैज्ञानिक पद्धति एहि लेल जरूरी नहि बुझाइत अछि?

पं० जवाहरलाल नेहरू भारतक खोज मे सभ उपलब्ध पोथी पढ़लनि । हजारो कि० मी० क यात्रा केलनि । विभिन्न जाति, वर्ग, क्षेत्र, भाषाक लोक सभ सँ भेंट केलनि। महल सँ खोपड़ी धरि गेलाह तखन हुनका ज्ञात भेलनि जे भारत अपन विशाल जन सामान्य, जन समुदाय मे बसैत अछि । एही सन्दर्भक संग कोनो स्वतंत्रता सेनानी आ विचारकक लिखल किछु पंक्ति मोन पड़ि रहल अछि । 'हमरा सभके अगस्त 1947 मे स्वराज्य भेटल । केवल एहि दुआरे नहि भेटल जे अंग्रेजी पढ़ल-लिखल उच्च, मध्यमवर्ग स्वराज्य के लड़ाई मे सम्मिलित भेल । एहि दुआरे भेटल जे गाँधी जीकेँ नेतृत्व मे जतेक व्यापक सहयोग भरिसक भगवान बुद्ध के समय मे ओहि जन आन्दोलन, ओहि सुधारवादी आन्दोलन के भेटल छलैक ताहू सँ बेसी व्यापक सहयोग भरिसक गाँधी जी के भेटलनि । गाँधीजी एकरा कोना सुलभ केलनि ? गाँधी जी अंग्रेजी पढ़ल-लिखल विशेष वर्ग केँ एहि प्रकारें सुशिक्षित केलनि जे ओ वर्ग जनसामान्य, अपन भूमि, अपन भूमिजन, अपन परम्परा सँ पीठ नहि फेरलक। कोनो नदीक द्वीप सन लोक कटल-कटल नहि रहल । स्वराज्य लेल जनसामान्य सापेक्ष होयब जरूरी छल आ जनसामान्य सापेक्ष लेल ओ अनेक रचनात्मक कार्यक्रम चलौलनि। ओ हमरा सभके एक सोझ-साझ मन्त्र देलनि जकरा चरखा कहल जाइत अछि । जे एक प्रतीक रूप मे सभ केँ जनसामान्यक लग पहुँचा देलक । गाँधीजी जे चरखा के यन्त्र बना दलनि ओ यन्त्र प्रतीक छल ओहि मन्त्र के जे ओ देलनि कि अपन विशेषताक उपयोग हमरा लोकनि जनसामान्यक सेवा लेल करब- सामाजिक विकास लेल करब। .भेष आ भाषा दूनू सँ ।'

मुदा मिथिलाक प्रसिद्ध समाजशास्त्री डा० हेतुकर झा मिथिलाक सन्दर्भ मे विशिष्ट जन आ जनसामान्यक सम्बन्ध पर टिप्पणी करैत एक निबन्ध मे दूनूक बीच विरोधाभासक चर्चा करैत छथि । ओ कहैत छथि जे मिथिला समाजक विशिष्ट जाति आ जनसामान्यक विरोधाभास मे अनेक ऐतिहासिक ओ संस्थागत कारण विद्यमान अछि।ओ इहो कहैत छथि जे मैथिलीक उन्नति बिना मिथिलाक उन्नति सँ असम्भव अछि । संगहि मिथिलाक सर्वांगीण विकास लेल आवश्यक अछि विशाल जनसमूहक विकास जकरा उच्चवर्ग सँ बहुतो पुश्त सँ विरोधाभासक सम्बन्ध रहलैक अछि । अन्ततः डा० झाक कहब छनि जे निम्नवर्गक विशाल जनसमूहक जागरण सँ मिथिलाक पुनर्जागरण संभव ।

आइ एहि सभ कथन-चिन्तन पर विचार करैत ई आवश्यक बुझना जाइत अछि जे हमरा सभहक लेल जनसामान्यक पीड़ा जानब जरूरी अछि । जनसामान्यक दुख, कष्ट सँ एकाकार होयब जरूरी अछि । तखनहि विरोधाभासक विडम्बनाक अन्त सम्भव अछि । तखनहि अपन विशेषताक, उपयोग हमरा लोकनि जनसामान्यक सेवा लेल क' सकब-सामाजिक विकास लेल क' सकब । वास्तव मे जनसामान्यक पीड़ा जानब मिथिलाक पीड़ा जानब थिक ।

एकटा पौराणिक प्रसंग मोन पड़ैत अछि । नारदकेँ सनत कुमार एक महान मेधावी मनोवैज्ञानिक विद्यालय शिक्षकजकाँ शिक्षित क' रहल छलथिन। ॠषि नारद क प्रश्न सभहक अंतिम रुप सँ उत्तर दैत ओ कहलथिन जे हमरा लोकनि किछुओ

नहि जानि सकैत छी यदि हमरा लोकनिकें सभ किछुक जानकारी नहि अछि । जेना एक नीक चिकित्सक शरीरक कोनो भागक पीड़ा तावत तक नहि जानि सकैत अछि जावत तक ओ शरीरक भौतिक, संरचनात्मक आ दैहिक सम्पूर्ण जानकारी नहि रखैत हो ।

तैं मिथिलाक पीड़ा जनबाक लेल, किछु अनकहल कहबाक लेल मिथिलाक खोज जरूरी अछि पहिने । मिथिलाक खोज अर्थात सभ किछुक जानकारी, सम्पूर्ण जानकारी। की मिथिलाक पैघ-पैघ विद्वान, समाजशास्त्री, राजनीतिविज्ञानी, दार्शनिक, भाषाशास्त्री, वैज्ञांनिक, तकनीकी विशेषज्ञ, न्यायविद्, धर्मशास्त्री आदि एहि दिशा मे डेग उठेबाक लेल प्रस्तुत छथि ? की जाहि माटि-पानि सँ ई देह पोसाएल अछि जाहि परिवेश मे विभिन्न संस्कारक वीजारोपण भेल अछि, तकरा प्रति, ताहि समाजक प्रति अपन विकसित दिमागक उपयोग करब बहुत लज्जाजनक अछि? मिथिलाक सेहो हमरा सभ किछु धारने छियैक से चुकेबाक विकलता अनुभव किएक नहि भ' रहल अछि ?

ई पोथी मिथिला समाजक प्रगतिशील चेतनाक रचनात्मक अभिव्यक्ति लेल समर्पित ओ प्रतिवद्ध अछि । मुदा कोनो प्रकारक रूढ़ि सँ सर्वथा पृथक सेहो अछि । प्रगतिशील चेतनाक लेल जरूरी पोथी बनि जाय तकर सेहन्ता त' कएल जा सकैत अछि मुदा लक्ष्यक पूर्ति बिना लेखक आ पाठकक सहयोगें सम्भव नहि लगैए । सन्धान कें अनियतकालीन रूपें निकालबाक लेल तत्काल अभिशप्त छी । ओना कम सँ कम दू बेर वर्ष मे निकलि सकय तकर कोशिश रहबे करत । प्रस्तुत अंक लेल अपन रचना द' जे लेखक, कवि सहयोग केलनि अछि हुनका प्रति आभार व्यक्त करब आवश्यक बुझैत छी । कवि-चिन्तक हरेकृष्ण झा सामग्री संग्रह एवं परामर्श लेल विशेष रूप सँ धन्यवादक पात्र छथि । अन्य सभ मित्र, शुभचिन्तक जे सन्धानक संचालन ओ सम्पादन लेल अपन सुझाव देलनि हुनको प्रति आदर व्यक्त करैत आशा करैत छी जे भविष्य मे हुनका लोकनिक संग अन्य पाठक लोकनि सेहो त्रुटिक दिस ध्यान आकर्षित करबैत अपन सुझाव सभ सँ अपनत्वक परिचय देताह ।

प्रसिद्ध कथाकार राजमोहन झा कें सन्धानक दिस सँ वर्ष 1996 क साहित्य अकादमी पुरस्कार लेल बधाइ । एहि अंक मे प्रस्तुत हुनका सँ भेल अन्तरंग वार्त्ता पुरस्कार घोषणाक किछुए दिन पूर्वक थिक ।

अन्त मे विज्ञापनसँ सहयोगक लेल विज्ञापनदाता लोकनिक प्रति सेहो आभार व्यक्त करैत छी । शेष त' सभ पाठकक हाथ मे अछिये....। इति ।

✍–अशोक

निबन्ध-1

हेतुकर झा

मैथिल अस्मिता : किछु विचारणीय बात

स्वतंत्रता प्राप्तिक तुरत बाद 1950क दशक मिथिलाक इतिहास मे बहुत महत्त्वपूर्ण रहल अछि । एहि दशकक आरम्भे सँ मिथिलांचल में मिथिला राज्य लेल उथल-पुथल शुरू भय गेल । 27 जुलाई, 1952 ई०कें पहिल बेर दरभंगा टाऊन हॉलक सभा मे सर्वसम्मति सँ प्रस्ताव स्वीकृत भेल जे भारतीय गणतंत्रक अधीन बिहार राज्य सँ अलग मिथिला राज्य बनय एवं एहि राज्य मे शिक्षाक माध्यम मैथिली होअय । 26 जुलाई, 1953 ई० के उक्त प्रस्तावक कार्यान्वयन लेल सभा भेल ओहीठाम (दरभंगा टाऊन हॉल) । 22 नवम्बर, 1953 ई० कँ 'मैथिल संघ' कलकत्ता मे बहुत पैघ प्रदर्शन कयलैन आ गिरीश पार्क मे सभा कयलैन । एकर प्रचार प्रेसक माध्यमे बहुत भेल जाहि सँ बिहारक तत्कालीन सरकार चिन्तित भय गेल । फलत: मिथिला राज्य लेल सभा प्रदर्शनक आयोजन लेल कलकत्ता जाइत कॉंग्रेस पार्टीक किछु वरिष्ठ सदस्य लोकनिक संग आओर किछु व्यक्ति सभ कें आसनसोल स्टेशन पर 22 जनवरी 1954 ई० कें गिरफ्तार कय लेल गेल ।

ई सभ हलचलक संदर्भ छल जे केन्द्रीय सरकार भाषाक आधार पर राज्यक पुनर्गठनक सिद्धांत कँ मान्यता दैत एक कमीशन नियुक्त कयलक आओर सरकार क ई रुखि देखि मिथिलाक कतोक नेता लोकनि उत्साहित भय गेलाह मिथिला राज्यक औचित्य सिद्ध करय लेल । मुदा सफल नहि भय सकलाह । हमरा हिसाबे एहि असफलताक निम्नलिखित कारण छल : पहिल आ मुख्य तँ ई जे एहि लेल जन-आन्दोलन नहि भय सकल; मिथिलाक गाम-गाम मे रहनिहार लोकसभ मे मिथिला-मैथिलीक प्रति जागरूकताक अभाव छल (आ अछि) । कलकत्ता, पटना, दिल्ली आ बम्बई मे रहि विभिन्न पेशा कय जीवन-यापन केनिहार मैथिल लोकनि प्रयास अवश्य कय सकैत छथि, चेतनाक प्रसार कय सकैत छथि, मुदा सफलता एहि प्रसंगे तखने भेटि सकैत अछि जखन कि मिथिलांचल जागत । दोसर कारण राष्ट्रीयता-भावना क इतिहास सँ जुटल अछि । यूरोप मे पूंजीवादक संगहि राष्ट्रीयताक सेहो विकास भेल आओर जर्मनीक राजनीतिक चिन्तक लोकनि भाषा कें संस्कृतिक सभ सँ सशक्त अंग मानि राष्ट्रीयताक सभसँ उपयुक्त आधार मानलैन । पश्चिमीय राजनीतिक दर्शनक एहि पक्ष सँ भारतोक प्रमुख नेतागण अवश्य परिचित रहल हेताह आ तैं वैह दर्शन कँ ओ लोकनि एहूठाम प्रतिपादित कयलैन ।

मुदा एहि उपनिवेशवादी नकल मे एकटा व्यवधान छल । भारतीय नेता लोकनि भारतक एकताक प्रतिपादन लेल ततेक दृढ़ संकल्पित छलाह जे हुनका लोकनि केँ भारतक विविधताक चर्चा सँ आशंका भय जाइत छलैन जे भारतीय एकताक खंडन ने भय जाय । तेँ विविधता केँ यथाशक्ति छिपयबाक, दबयबाक दिस बेशी प्रयास करैत छलाह। विविधता हमर पूंजी थिक गौरव थिक-से मनोदशा भारतक राजनीतिक विशिष्टवर्ग (elite)कें 1980 क दशक सँ प्रारम्भ भेल । तेँ, प्राय: 1950 क दशक मे मिथिला राज्य क निर्माण लेल हलचल-प्रदर्शन कें भारतीय एकताक विरुद्ध वा बिहारी एकताक विरुद्ध मानि बिहार-सरकारक तत्कालीन भाग्यविधाता लोकनि दबाय देलै ।

ई भूमिका हम एहि द्वारे उपस्थित कएल जे उक्त दशक मे जे किछु भेल तकर असर एतेक भेल जे 'मिथिला' की थिक ओ 'मैथिल' के थिकाह तकर जे विचार पूर्व मे छल से बदलि गेल । पहिने भौगोलिक आधार मुख्य रूप सँ मान्य छल 'मिथिला' एवं 'मैथिल' क परिचय लेल। 1960 ई० क बाद ई स्थान 'मैथिली' भाषा ग्रहण कयलक। भाषाकेँ सर्वोपरि आधार 'मिथिला' एवं 'मैथिल'क अस्मिता लेल मानबाक क्रम धीरे-धीरे बढ़िते गेल । एकर एक कारण इहो प्राय: भय सकैत अछि जे 'मिथिला' एवं मैथिली' केँ राष्ट्रीय वा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आधुनिक ऐतिहासिक, समाजिक एवं भाषा-वैज्ञानिक अध्ययनक क्षेत्र मे आनयबाला ग्रियर्सन भेलाह मुख्य रूप सँ। ग्रियर्सन मिथिलाक सीमा निर्धारण लेल भाषा/बोली कें आधार मानलैन । मिथिला-मैथिली पर कोनो तरहक साहित्यिक, ऐतिहासिक वा समाजवैज्ञानिक दृष्टि सँ काज केनिहार व्यक्ति लेल ग्रियर्सन प्रेरणाक पात्र भय गेलाह-आ, तेँ, ग्रियर्सन क दृष्टि (मिथिला-मैथिलक अस्मिताक प्रसंग) सँ सभ प्रभावित भेल हेताह ।

भाषा केँ मिथिला-मैथिलक अस्मिताक आधार मानला सँ एक दिस उदारता भेल तँ दोसर दिस किछु संकुचित भावनाक उदय सेहो भेल । उदारता एहि संदर्भ मे भेल जे मैथिल-महासभाक आयोजन सभ सँ एक भ्रम समाज मे पसरि गेल छल (एखनो ई भ्रम अछिये) । ई भ्रम छल मैथिल-अस्मिताक जातीय आधार । अर्थात मात्र मैथिल ब्राह्मण ओ मैथिल कायस्थ लोकनि 'मैथिल' मानल जाइत छलाह; मिथिला मे युग-युग सँ रहैत अन्य जाति समूह मैथिल-अस्मिता सँ वंचित छलाह । मैथिल महासभाक कागज-पत्र हमरा उपलब्ध नहि भय सकल तेँ ई कहनाइ कठिन जे एहन भ्रामक विचार एहि महासभा मे कहिया वा कोना आएल ? कारण जे यदि जातिये के मैथिल-अस्मिताक आधार मानी तँ ब्राह्मण ओ मैथिल कायस्थक अतिरिक्त अन्यो जाति समूह मे हरबर्ट रिज़ले उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्ध मे मैथिल शाखा के विद्यमान देखलैन यथा दुसाधक एक उपजाति-मैथिल दुसाध, मुसहर मे तिरहुतिया मुसहर, अमात मे तिरहुतिया अमात इत्यादि । तेँ अन्य मैथिल जाति सभ केँ हटाय मात्र मैथिल ब्राह्मण ओ मैथिल कर्ण कायस्थ लोकनि केँ मैथिलक संज्ञा देब कतेक उचित छल से कहब कठिन। मुदा जखन भाषा केँ मैथिल-अस्मिता लेल जोर देबय जाय लागल तँ जातीय

आधारक संकुचित भावना सँ एकर उद्धार भेल, एकर परिधि बहुत व्यापक भेल तथा कोनो भ्रामक आग्रह सँ मुक्त भय गेल।

संगहि एहि सँ किछु हानिक संभावना सेहो भय गेल । एडवर्ड सईद एहि बीच एक महत्वपूर्ण पोथी लिखलैन 'ओरएन्टलिज्म' । एहि पोथी मे ओ अपन विचार शास्त्रीय दृष्टि सँ बहुत सशक्त ढंग सँ प्रस्तुत कयलैन जे यूरोपीय देश सभ जकर साम्राज्य संसार मे उपनिवेशकाल मे पसरल छल से हमरा लोकनि पर मात्र राज्ये टा नहि कयलैन, वल्कि हमरा लोकनिक सोचबाक, बुझबाक धारणोके प्रभावित कयलैन-एतेक तक जे हमरालोकनि हुनकेलोकनिक द्वारा स्थापित वैचारिक-विधान के धयने छी; अपन इतिहास, परंपरा एवं संस्कृतिक आधार पर अपन धारणा नहि तैयार कय पबैत छी; संस्कृति ककरा कहैत छैक? देश की थिक? राष्ट्रक की परिभाषा भेल? इत्यादि सभ लेल हुनकेलोकनि पर निर्भर रहैत छी; हुनकेलोकनि क परिभाषा एवं अवधारणा केँ मान्यता दैत छी। एडबर्ड सईद सँ पहिनहुँ विद्वान लोकनि एहि दिस सचेत करबाक प्रयास करैत छलाह । मुदा सईद बहुत सांगोपांग रूपें हमरालोकनिक दशाक विवरण कयलैन आ संगहि आग्रह कयलैन जे हमरालोकनि एहन सांस्कृतिक उपनिवेशवाद सँ मुक्त होइ ।

भाषा केँ राष्ट्रीयताक मुख्य आधार होयबाक श्रेय यूरोपे मे भेटल । जर्मनीक इतिहास एहि सन्दर्भ मे स्पष्ट अछि । अंग्रेजी तथा फ्रेंचक विकासक संगहि इंगलैंड आ फ्रांसक राष्ट्रीयताक बृद्धि भेल । लोकभाषाक महत्व लोकक राष्ट्रीयता लेल मानब यूरोपीय राजनीतिक दर्शनक देन थिक । स्वतंत्रता प्राप्ति सँ पूर्व भारत मे भाषा लय बहुत विवाद ठाढ़ भेल रहय । उक्त यूरोपीय दर्शन सँ प्रभावित भय नेता लोकनि भारतीय राष्ट्र लेल एक राष्ट्रीय भाषाक होयब आवश्यक बुझलैन। एहिसँ भाषाक राजनीति शुरू भय गेल । एहि राजनीतिक प्रभाव मैथिलीयो पर पड़ल । मैथिलीक पक्ष मे सेहो किछु गोटे ठाढ़ भेलाह मैथिलीक लड़ाई लड़बाक लेल । मैथिलीक उन्नतिक एक रास्ता हिनका लोकनि कें स्पष्ट बुझा पड़लैन जे मिथिलाकेँ राजनीतिक आटोनामी भाषाक आधार पर भेटय । मैथिलीक संकटक समाधान लेल ई रास्ता बहुत उत्तम छल वा अछि; मुदा एहि सँ मैथिल संस्कृतिक अन्य अंग (भाषाक अतिरिक्त) दिस सँ हमरा लोकनिक ध्यान हटि गेल । मैथिल अस्मिता सिमटि कय मात्र भाषा धरि रहि गेल । मैथिल संस्कृतिक आओर पक्ष सभहक महत्त्वे मैथिल-अस्मिता क संदर्भ मे गौण भय गेल-ई धारा मिथिला एवं मैथिली लेल बहुत लाभदायक नहि अछि । भाषा पर जोर अवश्य देबाक चाही । भाषा संस्कृतिक एक महत्वपूर्ण अंग होइत अछि । मुदा संस्कृतिक अन्यो पक्ष सभकेँ मैथिल-अस्मिताक सन्दर्भ मे महत्त्व देब उचित होयत ।

मैथिल संस्कृतिक किछु अन्य पक्ष सभहक विषय मे चर्चा करब एतय संगत होएत। एहिठाम संस्कृत विद्याक अक्षुण्ण परंपरा रहल । भारतीय सभ्यताक परंपरा केँ सुदृढ़ करैत एहिठामक मनीषी लोकनि स्वतंत्र रूप सँ "मिथिलाक धर्मशास्त्र',

'मिथिलाक न्याय', 'मिथिलाक ज्योतिष', 'मिथिलाक संगीत' आदिक परम्परा बनौलनि। संस्कृते टा नहि पर्सियन एवं अरबी शिक्षाक केन्द्र सेहो मिथिला मे छल–जे बात आईन-ए-तिरहुतक अवलोकन सँ स्पष्ट होइत अछि । एहि सँ ई निश्चित होइत अछि जे एहिठामक संस्कृति मे विद्या-व्यवसायक बहुत महत्त्व रहल । भारतक इतिहास मे मिथिलाक नाम कोनो तरुआरिक बलें वा कोनो उद्योग-धंधाक बलें नहि लेल गेल। मात्र विद्येक बलें मिथिला अपन स्थान भारतीय सभ्यताक इतिहास मे सुरक्षित कय सकल । ओइनवार एवं खण्डवला राज्यक उदय विद्येक प्रसादात् भेल। धनोपार्जनक मुख्य आधार विद्ये रहल-म० म० सचल मिश्र, मोहन मिश्र, गोकुलनाथ प्रभृति कतेको विद्वान विद्येक बल सँ धनक प्रचुर उपार्जन कयलैन ।

संस्कृतिक दोसर पक्ष जे हमर दृष्टि सँ एतय पूजित रहल से थिक 'व्यक्तित्त्व'। विद्याक संग व्यक्तित्त्वो एतय ओतबे महत्त्वपूर्ण रहल अछि । व्यक्तित्त्व क आदर एहिठाम प्रचुर भेल । अयाची मिश्र (भवनाथ मिश्र) बहुत पैघ विद्वान छलाह। मुदा विद्या व्यवसायक दृष्टि सँ पक्षधर हुनका सँ बहुत आगू छलाह। अभिनव वाचस्पतिक बहुतो पोथी उपलब्धे अछि; गोकुलनाथक कृतिक तँ कथे कोन! मुदा अयाची सँ मिथिला क जनमानस एतेक परिचित प्रभावित अछि जे ओ एखनहुँ पूज्य मानल जाइ छथि; उदाहरण-स्वरूप उपस्थित कएल जाइत छथि प्रतिदिन, प्रत्येक गाम मे । अयाची लिजेण्ड बनि गेलाह-किएक ? एहि हेतु जे ओ व्यक्तित्त्वक एक विलक्षण आदर्श उपस्थित कयलैन।

व्यक्तित्त्वक मीमांसा हमरा जनैत जेहन मिथिला मे भेल से अद्भुत । विद्यापति क पुरुष परीक्षा व्यक्तित्त्वेक विभिन्न आयामक विश्लेषण करैत अछि । पारावार राजाक प्रश्न पर सुबुद्धिनामा ऋषि हुनक कन्या लेल कहलथीन जे 'पुरुष' वर करू। ओ ई नहि कहलथीन जे अमुक वर्णक वर हो, वा अमुक तरहक राजाक बेटा हो, वा अमुक तरहक योद्धा हो वा अमुक तरहक धनीक हो । व्यक्तित्त्वक एहिठाम स्वतंत्र आदर्श रहल । जनक 'विदेह' छलाह तैं स्मरणीय रहलाह, कोनो बड़ धनीक राजा छलाह वा बहुत पैघ योद्धा छलाह तकर चर्चा नहि अछि । महाभारत मे मिथिलाक महिमा कोनो योद्धा/महारथी लेल नहि अछि । मिथिलाक महिमा एहि लेल अछि जे एहिठामक व्याध सँ जीवन-दर्शनक निर्देश लेल तपस्वी ब्राह्मण लोकनि अबैत छलाह। व्याधक कथा हुनक व्यक्तित्त्वक अद्भुत आख्यान प्रस्तुत करैत अछि । व्याध रहितहुँ अपन व्यक्तित्त्वक बलें ओ एतेक यशस्वी भेलाह ।

मिथिलाक संस्कृतिक ई दूटा मूल्य-विद्या एवं व्यक्तित्त्व सदा सँ जीवित रहल अछि आ मैथिलत्त्वक परिचायक अछि । हमरा जनैत, जेना हमरा लोकनि भाषा पर मैथिल अस्मिता लेल जोर दैत छी तहिना प्रयास करी जे विद्या ओ व्यक्तित्त्व सेहो एहि अस्मिताक मुख्य आयाम बनय । कम सँ कम ई दूनू कें हमरा लोकनि बिसरि नहिं दी-जकर खतरा बढ़ल जाय रहल अछि ।

□

निबन्ध-2

महेन्द्र नारायण कर्ण

पुरान संरचना ओ नब परिवेश : बदलैत अन्तरजातीय सम्बन्ध

सभ दिन सँ जाति प्रथा भारतीय समाजक विशिष्टता रहलैक अछि । एकर सिड़ही सन स्वरूपओ एहि सँ जुटल अन्तःसम्बन्ध लोकक जीवनक सभ पक्ष कें प्रभावितेटा नहि, समेटितो आबि रहल छैक । जीवनक जतेक पैघ कृत्य छैक जनम-मरण,विवाहदान, भोज-भात, सुख-सराध-सभजातियेक चौकठिक भीतर होइत आयल अछि । तैं जाति अत्यन्त सहज ओ स्वाभाविक तथ्य पहिनो छलैक आ आइयो बनल छैक । जे गोटे सिद्धान्त रूपें जातिकें नहियो मानैत छथि ओहो सभ व्यवहार मे ओकरे बनाओल रस्ता पर चलैत छथि । एही कारणें सुसंस्कृत लोक जातिक विरोध मे नहुऐं-नहुऐं बजताह, मुदा कर्म मे एकरा छोड़ब नहि सुझतन्हि । जखने हिनका लोकनिकें विचार आ कर्मक एहि अन्तर दिस ध्यान दियबियौन्ह, तुरन्त अहींकें उनटि क' कहताह जे अहाँलोकनि जातिवादी छी, जाति कें बेर-बेर मोन पाड़ि समाज कें तोड़' मे लागल छी । ओना एकटा दोसरो प्रवृत्ति देखबा मे अबैछ । किछु गोटे एहनो छथि, जिनका मोनसँ जातीय संस्कार नहियों हटनि, व्यवहार मे, बाजब-भूकब मे, एहितथ्य के रहरहां नुकबैत छथि। एकर यथार्थ सँ भगैत छथि । एहि द्वन्द्वक मुख्य कारण ई अछि जे परंपरागत जातीय व्यवहार आधुनिक सामाजिक मूल्य सँ मेल नहि खाइत छैक । आइ दृष्टि ओ दर्शन, आदर्श ओ सिद्धान्त, समतामूलक भ' रहल छैक । यद्यपि आइयो जातीय विषमता व्याप्त छैक, छोट-पैघक विचार ओहिना बनल छैक मुदा समतामूलक परिवेश मे लोक एकरा व्यक्त नहि कर' चाहैत अछि । तैं, अछोप ओ रारोहिया सँ बाबूभैया अपना कें फराक रखबाक प्रयत्न मे भने रहथि, सार्वजनिक रूप सँ लोकक सोंझामे अपन व्यवहार कें सदिखन नुकेबाक प्रयास मे रहैत छथि । वस्तुतः एखनो लोक जाति संस्कारसँ ग्रसित अछि, परन्च एकरा सोझे-सोझ स्वीकार करबा सँ कंछी कटैत अछि। सिद्धान्त ओ व्यवहारक जतेक फर्क जातिक बिन्दु पर रहैत आबि रहल छैक, ओतेक शायद कोनो दोसर सामाजिक तथ्य पर नहि ।

प्रस्तुत आलेख मे आजुक बदलैत अन्तरजातीय सम्बन्ध पर किछु विस्तार सँ चर्चा करबाक प्रयास कएल गेल अछि । समाजशास्त्रीय संदर्भ कें केन्द्र मे राखि, एहि विषय पर ऐतिहासिक दृष्टिसँ विचार करब एहि विश्लेषणक अभीष्ट अछि ।

I

जाति एकटा जटिल व्यवस्था छैक । ओना विकासक क्रम मे जातिवर्ण सँ निकललै, परन्तु, प्राचीन वर्ण व्यवस्था मे जेहेन सिड़ही सन चारि स्तरीय संरचना पाओल जाइत छलैक तेहेन साफ ओ सोझ स्थिति जाति मे नहि छैक । परिवर्त्तनक प्रक्रिया मे समस्त भारतक स्तर पर जातिक विकास एक्के रंग नहि भेलैक । विभिन्न भौगोलिक ओ भाखा क्षेत्र मे एकर फराक-फराक संरचना जन्म लेलकै । पवित्रता ओ अपवित्रताक आधार पर जातीय अधिक्रमक उदय भेलैक एवं व्यवसायक विशेषीकरण एकरा पुष्ट केलकै। एहि क्रम मे समाजक फाँकेटा नहि भेलैक, बल्कि समाजिक प्रतिष्ठा, शक्ति ओ सम्पत्ति सभ तत्व एकठाम आबि विभिन्न जाति कें फराक-फराक पदस्थिति मे स्थापित कय देलकै । मुदा एहि संरचनात्मक भिन्नताक होइतो एहि व्यवस्था मे किछु मौलिक विशिष्टता सभठाम विकसित भेलैक जाहि मे अन्तःविवाह, अधिक्रमात्मक विभाजन, जातीय व्यवसाय, पवित्रता आ अपवित्रतासँ जुड़ल पारस्परिक सम्बन्ध; जातीय संस्कार पर आधारित संस्कृति आदि प्रमुख अछि । एहि संरचनात्मक विशेषताक फलस्वरूप जे सामाजिक स्तरीकरण बनलै, से खाली सामाजिक-सांस्कृतिक पक्षेटा कें प्रभावित नहि कयलकै, आर्थिक ओ राजनीतिक जीवन सेहो प्रत्यक्ष रुपें जातीय विभाजन सँ नियंत्रित होमय लगलै । ऊँच जातीय समूह कें मात्र सामाजिक श्रेष्ठते टा नहि प्राप्त भेलैक, ओकरा आर्थिक सम्पन्नता एवं राजनीतिक प्रभुत्व सेहो हाथ लगलै। दोसर शब्द मे, ई कहल जा सकैछ जे जातीय अधिक्रम ओ आर्थिक अधिक्रम मे तादात्म्य स्थापित भ' गेलै। एहि सन्दर्भ मे जाति आ भूस्वामित्वक स्वरूपक पारस्परिकता कें उदाहरणक रूप प्रस्तुत कयल जा सकैछ । सामाजिक पद-प्रतिष्ठा ओ आनुष्ठानिक पदस्थिति पर जमल जातीय फांक त' स्पष्टे बुझना जाइछ मुदा, एकरा जीवनक दोसर-दोसर उपलब्धि सँ जोड़िक' देखला सँ एहि व्यवस्थाक विसंगतिकें बेसी साफ जकाँ बुझल जा सकैछ । सभ प्रकारक अयोग्यता-सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक, राजनीतिक-एक्के संगे जातीय संकीर्णता सँ कड़ी जकाँ जुड़ल चलि आबि रहल छैक। ई संस्थागत विषमता समाज के गतिहीन ओ लोककें दुर्बल आ अक्षम बना देलकै । सौंसे समाज के छोट-छोट टुकड़ी मे बांटि, खानपान, बैसब-उठब, विवाहदान, सार्वजनिक काज सभ दृष्टि सँ बान्हि श्रेणीबद्ध क' देलकै। एहि श्रेणीबद्धताक कारणें समाज निष्क्रिय होइत गेल ।

जातीय निठुरताक एकटा दोसरो पक्ष छैक । विभिन्न युग मे जातिक बाह्य स्वरूप त' बदलैत गेलैक मुदा एकर मूल तत्व मे परिवर्त्तन नहि अयलै । स्थान ओ समयक अनुरूप अपनाके बदलैत रहबाक शक्ति एहि व्यवस्था मे रहलैक अछि । एकर ऐतिहासिकता कें लग सँ देखला उपरान्त एहि तथ्य कें बूझल जा सकैछ । जेना, आधुनिक युग मे एकर आनुष्ठानिक पक्ष त' दुब्बर भेलैक अछि, किन्तु कतेको अन्य अकल्पित स्रोत सँ एकरा शक्ति प्राप्त भ' रहल छैक । लोकतांत्रिक राजनीति मे जातीय एकात्मता पैघ माध्यमक काज केलकैक अछि जाहि रस्ते चलि लोक संगठित भ' अपन प्रभुत्व के बनौलक अछि। एहि विषय पर चर्चा आगां होयत ।

जातिक ई सरंचनात्मक पृष्ठभूमि थिक । एहि तथ्यकें यदि प्रत्यक्ष सामाजिक अनुभवक आलोक मे देखल जाय त' मिथिला सँ नीक उदाहरण भेटब कठिन । यद्यपि

समस्त भारतीय परम्परा सँ फराक कोनो जातीय संरचना मिथिला मे चलैत आबि रहल छैक से त' नहि कहल जा सकैछ तैयो ऐतिहासिक दृष्टि सँ एहि भौगोलिक सांस्कृतिक क्षेत्र मे जाहि प्रकारक व्यवस्थाक उदय भेलैक से ध्यान देबाक योग्य थिक । भौगोलिक परिवेश, परिस्थितिकीय अवस्था, भाखाजन्य विशिष्टता, काज-धन्धाक कठोरता आदि कारक मिलि क' क्षेत्रीय स्तर पर जातिक पृथक स्वरूप निर्मित कयलक। एही अर्थ मे मिथिलाक जातीय संरचना अन्य प्रान्तक तुलना मे फराक मानल जा सकैछ।

II

संरचनाक स्वरूप ओ सम्बन्धक स्वभावक आधार पर मिथिला मे जातीय समुदाय सभकें तीनटा वृहत समूह मे बाँटल जा सकैछ-बड़का, छोटका, ओ अछोप। ओना लोक परंपरा सँ दुइएटा समूह बड़का, ओ छोटका, मानैत आबि रहल अछि, किन्तु एहन विभाजन सँ जाति विशेषक व्यावसायिक आधार ओ जातिक सिड़ही मे ओकर स्थानक सुस्पष्ट ज्ञान प्राप्त नहि भ' सकैछ । तैं, एकरा तीन खण्ड मे बाँटब बेसी उचित बुझना जाइछ।

जातिक सिड़ही मे ब्राह्मण सभ दिन सँ सभ सँ उपर रहलाह अछि । ओना बड़का जातीय समूह मे भुइँहार, राजपूत ओ कायस्थ कें रखबाक परिपाटी त' छइहे । संख्या ओ सांस्कृतिक-समाजिक प्रभुताक कारणें, ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ मिथिलाक भू भाग मे बहुत पहिने सँ अपन प्रभाव जमौने रहलाह अछि, किन्तु भूइँहार ओ राजपूतक बर्चस्व दोसर-दोसर क्षेत्र जकाँ एहिठाम नहि रहलन्हि अछि । ई चारू जाति सामाजिक पद प्रतिष्ठा, सांस्कृतिक आधिपत्य, राजनीतिक प्रभुत्व, आर्थिक सम्पन्नता सभ दृष्टिएँ जातीय अनुक्रम मे सभ सँ ऊँच स्थापित रहलाह अछि । जमीन पर स्वामित्व, उँच नौकरी ओ पढ़ाइ-लिखाइ मे श्रेष्ठता तथा नेतागिरी ओ पलटन मे उत्कृष्टता प्राप्त कय सौंसे समाजकें अपन प्रभाव मे रखने रहलाह अछि ।

दोसर श्रेणी मे ओ जातीय समूह अबैछ जे जातीय अधिक्रममे बड़का सँ नीचा ओ अछोप सँ ऊपर अवस्थित अछि । आजुक भाखा मे जेकरा पिछड़ल जातिक नाम सँ जानल जाइत छैक, से वस्तुतः कतेको जातिक एकटा पैघ समूह थिक जकर पदस्थिति ओ सामर्थ त' ओना एकरंग नहि छैक, तैयो एहि समूहक सभ जतिके छोटके वर्गक कहल जाइत छैक । आर्थिक अवस्था, अनुष्ठानिक स्थिति ओ राजनीतिक भूमिकाक दृष्टि सँ ई श्रेणी मध्यम एवं निम्न मध्यम जातिक रुप मे सेहो विश्लेषित भेलैक अछि। एहि जातिक लोक मुख्यतः खेतीबारी, पशुपालन, व्यापार, जातीय काजधन्धा सँ जुड़ल रहलाह अछि । शारीरिक श्रम ओ परिश्रम मे लागल रहबाक कारणे हिनका लोकनिक आर्थिक अवस्था कृषि आ व्यवसायक स्वरूप मे होइत परिवर्त्तन सँ लागल-भिड़ल रहलनि अछि । फलस्वरूप, भूस्वामित्वक बदलैत रूप एवं परंपरागत जातीय व्यवसायक ह्रासक कारण एहि जातीय श्रेणीक दूटा मुख्य फांक भ' गेलैक अछि । पहिल खंड मे ओहिजाति कें शामिल कएल जा सकैछ जे खेतीबारी ओ व्यापार सँ प्रत्यक्ष रूपें जुड़ल छथि । हाथ सँ काज नहि करबाक बंधन सँ मुक्त रहलाक कारणें ई लोकनि कोनो प्रकारक सामाजिक असमर्थता सँ ग्रसित नहि रहलाह । खेती मे स्वयं परिश्रम करबाक कारणें एहि श्रेणीक बेसी लोक आर्थिक स्थिति कें ठोस आधार देबा मे सफल रहलाह । यादव (गुआर), कोयरी, कुरमी, सूड़ी, एहि खण्डक प्रभावशाली जाति थिक।

मध्य जातिक दोसर खण्ड मे मुख्यत: ओहिजाति कें सम्मिलित कएल जा सकैछ जे परंपरागत जातीय व्यवसाय मे लागल रहलाह अछि । कृषिक सामाजिक संरचना मे हिनका लोकनिक स्थान बड़ नीचा रहलन्हि अछि ।अधिकांश लोक भूमिहीन छथि तैं जन-बोनिहारी ओ बटैया प्रमुख धन्धा छन्हि। लोहार, बढ़ई, हजाम, केओट, ततमा, कुम्हार आदि एहि श्रेणीक देखनहर जाति छथि। हर-कोदारि कुटनी-पिसनी, टहल-टिकोरा, खबासी इत्यादि काज मे लागल रहबाक कारणें ई समूह सभ दृष्टि सँ दुर्बल ओ असहाय स्थिति मे रहैत आबि रहलाह अछि।

मध्यजातिक दूनू खण्ड-'ऊँच पिछड़ल' आ' 'नीच पिछड़ल' मे एकटा मौलिक फर्क ई छैक जे पहिल श्रेणीक जाति खेतीबारी, व्यापार सन काज मे लागल रहबाक कारणें जातीय बंधन सँ ओतेक बान्हल नहि रहलाह जतेक दोसर श्रेणीक लोक । कारीगर ओ सेवक जाति हयबाक दुआरे, दोसर श्रेणीक लोकसभ पर कतेको प्रकार बंधन रहलन्हि । तैं ई सभ शोषण ओ उत्पीड़न दूनूक मारि सहैत रहलाह । एक दिस 'ऊँच पिछड़ल' जाति जमीन-जिरात लग ससरैत रहला, त' दोसर दिस' नीच पिछड़ल' जाति आरियो टपय सँ वंचित रहला ।

जातीय सिड़ही मे सभ सँ नीचा अछोपक नामे जानल जाइत समूह अबैछ । एहि श्रेणी मे आबयवला विभिन्न जातिक स्थान प्राचीन वर्ण व्यवस्था मे कतय ओ केहेन रहनि से एखनो बहस-मुशविराक विषय अछि । किछु गोटे ई मानैत छथि जे अछोप जातिक बेसी समूह वर्ण व्यवस्था क बाहरे छल (पंचम वर्ण)। ओना इहो प्राय: मान्य अछि जे किछु जाति वर्ण व्यवस्थाक शूद्र श्रेणी मे अबैत छलाह। जे होइक, ई देखब कठिन नहि जे परंपरा सँ जाहि जाति सभ के अछोप कहल गेलैक अछि, ओहि मे सम्मिलित सभ समूह सामाजिक पदस्थिति ओ अनुष्ठानिक अवस्थाक दृष्टिएँ एके पाइट पर नहि छलाह । एहि जाति सभक उत्पत्तिक प्रश्न कें यदि फराक राखि देखल जाय त' एकर तीनटा मुख्य श्रेणी बनैत छैक । ई श्रेणी थिक-अदृष्ट, अगम्य ओ अस्पृश्य। एहि शब्दे सभ सँ स्पष्ट अछि जे अदृष्ट क श्रेणी मे ओहेन लोक सभ अबैत छलाह जिनका सँ ई अपेक्षा रहैत छलैक जे दिनक इजोत मे ओ अपना कें ऊँच जातिक सोंझा नहि आनथि । अपना कें देखार नहि करथि । अगम्य ओ छलाह जिनकर सम्पर्क अन्य सभ जति सँ अप्रत्यक्षे रहन्हि । गामक सामाजिक संगठन मे एहन लोकक कोनो भूमिका नहि रहैक । दोसर दिस 'अस्पृश्य' सभहक सम्पर्क गामक संगठन सँ त' रहनि मुदा हिनका लोकनिक छूति सँ दूनू, व्यक्ति आ सामग्री, छुआ जाइत छल । एहिप्रकारें, शुद्ध जाति सभ सँ दूरीक आधार पर अछोपक तीनटा सामाजिक संस्तर छल । ओना एहि स्तरीकरणक कोनो ऐतिहासिक वर्णन प्राप्त नहि अछि जाहि आधार पर ई कहल जा सकए जे एहि व्यवस्था मे अस्पृश्य सभ सँ ऊपर अगम्य बीच मे ओ अदृष्ट सभ सँ नीचा अवस्थित छलाह ।

एहि जातिक विभाजन एकटा दोसरो आधार पर कएल जा सकैछ । एकटा समूह ओहेन जातिक बनैत छैक जे साफ काज मे लागल छलाह ओ दोसर जे मैल काज मे । पासी, खतबे, दुसाध ओ मुसहर पहिल श्रेणी मे एवं चमार, डोम ओ मेहतर कें दोसर खण्ड मे शामिल कयल जा सकैछ । पहिल श्रेणीक जाति तुलनात्मक्र रूपें

साफ काज करैत रहलाह अछि तथा भोजन-साजन मे सेहो व्यवहार दोसर श्रेणी सँ भिन्न रहलन्हि अछि । ताड़ी उतारब, महफा ढोअब, पहरादेब, माटिकाटब निश्चित रूपें मरल मालजाल कें फेंकब, चाम तैयार करब, मैला उठायब, सूगर पोसब सँ साफ काज छैक । एहि भेदक कारणें अछोप श्रेणीक जातिक बीच सेहो दूरी छैक । एक दोसर सँ छूति मानबाक व्यवहार सेहो देखल जाइत छैक ।

मिथिलाक भू भाग मे एहि सभ जाति कें अछोपे कहल जाइत रहलैक अछि जे अस्पृश्यक समानान्तर मानल जा सकैछ । तैं, निश्चित रूपें ई कहल जा सकैछ जे अदृष्ट ओ अगम्य सनक जातीय श्रेणी अथवा ओहेन व्यवहार एहिठाम नहि रहलैक अछि। अहीदुआरे, आन्तरिक पृथकता एवं भेद रहितो अछोप समूह कें एक्के श्रेणी मे रखबाक परिपाटी अछि । गाँधीजीक 'हरिजन', अम्बेदकरक 'दलित' ओ संविधानक 'अनुसूचित जाति' सभठाम एकरा एक्केटा श्रेणी मानल गेलैक अछि ।

सामाजिक स्तरीकरणक दृष्टिएँ, सभ सँ निम्न अवस्था मे रहबाक कारणें अछोपक श्रेणी मे आबयवला सभ जातिक सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक ओ राजनीतिक स्थिति अमानवीय स्तरक रहलै अछि । आनुष्ठानिक बंधन, सार्वजनिक पाबनि-तिहार सँ बाहर रखबाक व्यवहार, पूजापाठ करबा ओ मंदिर मे पैसबा सँ मनाही, इनार-पोखरि सभक उपयोग सँ रोक वा ई कहल जाय जे जीवनक सभ महत्वपूर्ण पक्षक दृष्टिएँ समाजिक मुख्यधारा सँ फराके रखबाक चलनिसार दुआरे समाज एहि सभ जातिक लोक कें नाम मात्रे मनुखक गनती मे रखने रहलैक अछि । एहन परिस्थिति मे ई अत्यन्त स्वाभाविक जे शोषण, उत्पीड़न, दरिद्रता, दीनता हिनका लोकनिक नियति रहलन्हि अछि । व्यावसायिक स्वतंत्रताक अभाव, भूमिहीनता क मारि ओ उँच एवं मध्य जातिक अत्याचार सँ ग्रसित रहबाक कारणें कहियो ई जाति अमानुषिक स्थिति सँ उपर नहि उठि सकल ।

ऊपर क विश्लेषण सँ ई स्पष्ट होइछ जे मिथिलाक समाजक जातीय संरचना परंपरा सँ चलि अबैत सक्कत सामाजिक विषमता क प्रतिरूप थिक । विषमताक सांचक रूप मे जाति मात्र सामाजिक व्यवस्थेटा नहि, मूल्य-व्यवस्था सेहो थिक । समाज व्यवस्थाक रूप मे जातिक काज सिड़ही सन श्रेणीवद्धता उत्पन्न कय समाज कें टुकड़ी-टुकड़ी मे बाँटब रहलैक अछि तथा मूल्य-व्यवस्थाक अर्थ मे जाति एहि विषमता कें उचित मानि'मान्यता दैत आबि रहल छैक । अही दुआरे खतम हेबाक बदला मे जाति रूप बदलि-बदलि मजगूत भ' रहल छैक । एकर सिड़ही पर सभ सँ नीचा रहयबला सेहो व्यवस्था के ओतबे स्वाभाविक मानि क' चुप रहलैक, जतेक सभ सँ उँच मे अवस्थित सर्वशक्तिमान लोक । तैं, असमानता जातीय विभाजनक जाठि रहितो, ई प्रथा कहियो अतीव संकट मे नहि रहलैक अछि ।

'एखन तक जाहि तथ्य पर विचार कयल गेल अछि तकरा आजुक सामाजिक संबंध मे आबि रहल परिवर्तनक संरचनात्मक पूर्वपीठिका मानल जा सकैछ । स्थानीय स्तर पर अन्तर्जातीय संबंध मे आयल कटुता ओ वैमनस्यता कें एही पृष्ठभूमि मे नीक जकाँ बुझल जा सकैछ ।

III

आब जाति प्रथा मे एक प्रकारक असार-पसार अयलैक अछि जे कतेको स्थापित तथ्य ओ मान्यताक विरोध मे तालठोकि रहल छैक। परिवर्त्तनक ई प्रक्रिया कोनो एकेटा स्रोत सँ उत्पन्न नहि भेलैक अछि। समसामयिक समाज मे आबि रहल व्यापक बदलावक स्पष्ट छाप जाति व्यवस्था पर ओहिना पड़लैक अछि, जेना जीवनक आन-आन पक्ष पर। सामाजिक परिवर्त्तनक दूटा पैघ स्रोतक चर्च एहिठाम पर्याप्त हयत। एकटा स्रोत समाजक भीतरे सँ उदित होइत छैक ओ दोसर बाहर सँ अबैत छैक। तथ्यक खुलासाक लेल एकरा हम 'अन्तर्जात ओ बहिर्जात' स्रोत कहय चाहैत छी।

भारतीय समाजक संदर्भ मे अन्तर्जात स्रोतक अन्तर्गत दूटा कारक उल्लेखनीय अछि-समाज सुधार आंदोलन ओ संस्कृतीकरण। भारतक भूमि स्वामी, संत, गुरू आदिक स्थल रहलैक अछि। ई लोकनि खाली धर्म ओ अध्यात्मे टा मे नहि लागल रहैत छलाह; हिनका सभक प्रयास समाजक अधलाह व्यवहार आ प्रथा पर प्रहार कय ओकरा उचित मार्ग पर ल' जयबाक सेहो रहैत छलनि। समाज सुधारक ई प्रक्रिया ओना मध्ययुगे सँ आबि रहल छैक, मुदा उनैसम शताब्दी अबैत-अबैत एहि मे बेस तेजी आबि गेलैक। इतिहासकार जकरा पुनर्जागरणक युग कहैत छथि ओ वस्तुत: समाज सुधारक युग छलैक। देशक प्राय: सभ क्षेत्र मे एकर संगठित स्वरूप सोझाँ अयलैक। बंगाल मे ब्रह्मसमाज, पश्चिमोत्तर भारत मे आर्य समाज, महाराष्ट्र मे प्रार्थना समाज ओ सत्य शोधक समाज, केरल मे श्री नारायण गुरू सन कतेको आन्दोलन चललै जे जाति प्रथाक निठुरता, छूआछूत, बालविवाह, स्त्रीगणक निम्न सामाजिक पदस्थिति, शिक्षाक अभाव आदि क विरोध मे ठाढ़ भ' एहि सभ दुर्गुण कें समाप्त करबाक पृष्ठभूमि बनौलकै। एहि प्रकारक सामाजिक आन्दोलन सँ सभ सँ पैघ बात ई भेलैक जे उपेखल ओ अबडेरल समुदायोक बीच चेतना आबए लगलैक जे गहींर अन्हार के तोड़ि लोक कें इजोत मे लयबा मे सफल भेलैक।

ओना यदि देखल जाय त' मिथिला मे उनैसम शताब्दी अथवा एकर बादो तक कोनो विशिष्ट सुधार आन्दोलन फराक सँ नहि चललै, किन्तु दोसर-दोसर ठाम चलैत आन्दोलनक इजोत सँ ई क्षेत्र फराको नहि रहि सकलै। एहिठाम एकबातक स्मरण करा देब बेजाय नहि हयत। प्रशासनक दृष्टि सँ कोनो क्षेत्र विशेष भने कोनो प्रान्तक हिस्सा रहैत आबि रहल हो परंच, जाबत धरि ओहि क्षेत्र सभहक बीच सामाजिक-सांस्कृतिक तादात्म्य नहि रहैत छैक ताबत धरि ओकर सामाजिक संरचना एक रंग नहि भ' सकैछ। उदाहरण स्वरूप सन् 1912 धरि आजुक बिहार बंगालक भाग छलैक मुदा, छोटानागपुर क किछु छोट-छीन इलाका कें छोड़ि आन-आन सभ क्षेत्रक सांस्कृतिक संबंध बंगाल सँ नहि भ' पश्चिम में अवस्थित प्रान्त सभ सँ रहलै। तैं देखबैक जे जातीय संरचना ओ आचार-विचारक दृष्टिएँ मिथिला बंगाल सँ बेशी उत्तरप्रदेश सँ ल'ग अछि। ओना मिथिला ओ बंगालक सम्पर्क परंपरा सँ रहलैक अछि, सएह विचार आइ धरि प्रचारित कएल गेलैक अछि। लोक सभ निश्चित रूपमे

कमाय-खटाय लेल पूब भर (बंगाल-असम) जाइत रहलाह अछि, मुदा सांस्कृतिक अपनैती पश्चिमे सँ बुझाइत छैक। तीर्थवर्थ करय लोक इम्हरे जाइत रहल अछि। सभ प्रमुख तीर्थस्थान पश्चिमे छैक। खाली गंगासागर बंगाल मे छैक जे लोक एके बेर जाइत अछि 'सभतीर्थ बेर-बेर, गंगासागर एक बेर'। तैं बंगालक कोनो सुधार आन्दोलनक प्रत्यक्ष प्रभाव मिथिलाक समाज पर नहि पड़लै। थोड़ बहुत प्रभाव यदि रहलै त' ओहने आन्दोलनक जे पश्चिमभर उदित भेल छलै। एहिठाम हमर तात्पर्य आर्य समाज ओ कबीर पंथ सँ अछि। मिथिलाक मध्यजातिक (जकरा हम पहिने छोटका' जाति कहने छी) बीच कबीर पंथक नीक पसारदेखल जा सकैछ। ई कहब ओना कठिन अछि जे एहि विचारधारा क पसार सँ लोकक होश-हवास मे कतेक परिवर्त्तन भेलैक एवं जड़ता आ अन्धविश्वास सँ छुटकारा दियेबा मे ई कतेक सक्षम भ' सकलै मुदा ई देखब सोझ अछि जे एकर प्रभावक दुआरे लोकक आचार-विचार मे परिवर्तन अयलै। यादव, केओट, धानुक, खतबे सनक जातिक बीच आइयो सभ सँ बेशी बैष्णव भेटताह। ई लोकनि पूजापाठक अपन पद्धति बनौलनि अछि तथा आध्यात्मिक स्तर पर कबीरक बिचार सँ अत्यन्त प्रभावित छथि।

मूलत: एहिठाम हमर प्रयास एहि तथ्य पर जोर देब अछि जे सामाजिक आन्दोलन परिवर्त्तनक सशक्त साधन थिक। देशक ओहि सभ क्षेत्र मे जतय एहन आन्दोलन क वेशी पसार रहलै जातीय निठुरता कम ओ लोक चेतनामय बेसी रहल अछि। मिथिला मे किएक त' कोनो पैघ समाज सुधार आन्दोलन नहि भेलैक लोक विचार-व्यवहार मे जड़ ओ अनुदार एवं समाजिक संबंध मे निर्मम ओ असहिष्णु रहैत आबि रहल अछि।

समाजक अन्दर सँ उत्पन्न होमयवला परिवर्त्तनक कारक मे सुधार आन्दोलनक अतिरिक्त जे प्रक्रिया सभ सँ स्पष्ट अछि से थिक आनुष्ठानिक ओ सामाजिक अनुक्रम मे उपर उठबाक प्रयास। लोकप्रिय समाजशास्त्रीय भाखा मे एकरा संस्कृतीकरण कहल गेलैक अछि। वर्त्तमान शताब्दीक शुरू मे कतेको छोटका जाति अपन वंशकें प्रतिष्ठित करबाक प्रयास मे जुटि गेल छल। एहि लक्ष्यक पूर्तिक लेल साधु-महात्मा ओ अन्य ओहने व्यक्तिक समर्थन हाथ मे लेबाक प्रयत्न भेलै जिनका लोकनिकें शास्त्र-पुराणक नीक ज्ञान छलन्हि। ई लोकनि कतेको छोट जाति कें कोनो महात्मा विशेषक वंशज घोषित क' देलखिन्ह तथा यदि ई जाति सभ धर्मविधि ओ व्यवहार मे अत्यन्त खसल नहि छल त' जनेउ आदि पहिरबाक अधिकार सेहो भेटि गेलै। यद्यपि जाति व्यवस्था मे उपर उठबाक ई रास्ता आब कनेक सेराय गेलैक अछि, मुदा कतौ-कतौ सँ आबो एहन समारोहक समाद भेटिये जाइत छैक। तैं, ई प्रक्रिया पूर्णत: समाप्त भ' गेलैक अछि से नहि कहल जा सकैछ।

संस्कृतीकरण मे एकटा दोसर प्रवृत्ति सेहो रहलैक अछि। कतेको निम्न जाति अपना कें जातीय अनुक्रम मे उपर उठयबाक लेल ऊँच जातिक रहन-सहन, आचार-व्यवहारक अनुकरण मे लागि जाइत छथि। बेसी ठाम एहि नकल मे ब्राह्मणक आचार-विचार ओ प्रतिमान कें सोझा राखल जयबाक प्रवृति रहलैक अछि। परन्तु सभठाम एहन चलनि नहि छलैक। वस्तुत: अनुकरणक लेल कतेको मॉडल रहलैक अछि। एक वा एक सँ बेसी जातिक अनुकरण सेहो कतेठाम भेलैक अछि, जेना कतौ

रेड्डी, कतौ राजपूत, कतौ कायस्थ त' कतौ मराठा अथवा नैयर । मिथिला मे मुख्यत: ब्राह्मण ओ कायस्थ एहि भूमिका मे रहलाह अछि । संस्कृतीकरणक प्रक्रिया मे छोट वा अछोप जातिक चेतना मे ई तथ्य बड़ गहीर तक जाइत छैक जे हमरो सभ कें ओहने जीवन पद्धति दिस बढ़क चाही जेहेन ऊँच जाति सभक छन्हि तथा संग-संग ओहेन आदति ओ व्यवहार त्यागि देबाक चाही जे हमरा लोकनिकेँ नीच ओ अशुद्ध रखने अछि । ऊँच जाति सन बाजब, ओहने कपड़ालत्ता पहिरब, जनेउ धारण करब, मांछ-मासु, ताड़ी-दारू त्यागब, आदिक पसार अही संदर्भ मे भेलै । अनुकरणक ई परिस्थिति अत्यन्त स्वाभाविक छल, किएक त' जखन परिवर्त्तनक लालसा कोनो समूह मे अबैत छैक त' ओकर दृष्टि आगू-पाछूक लोक पर जाइत छैक । लोक ओहने व्यवहार करय चाहैत अछि जे ओकरा उपर उठयबा मे मदति करैत बुझाइत छैक।

ओना संस्कृतीकरणक दुआरे जाति मे कोनो आमूल संरचनात्मक परिवर्तन नहि अयलै, तैयो ठाम-ठामक अनुभव सँ ई ज्ञात होइछ जे एक-दू पीढ़ी धरि जाइत-जाइत निश्चित रूपें जातीय सिड़ही मे किछु हेर फेर भ' जाइत छैक । मिथिला मे सेहो एहन प्रवृत्तिक अभाव नहि रहलैक अछि ।

परिवर्त्तनक बहिर्जात स्रोत, जेना शब्दे सँ स्पष्ट अछि, समाजक बाहर अवस्थित रहैत छैक । परिवर्त्तनकारी तत्व एहि स्रोत सँ बहराय, विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भ मे आनो-आनो समाज मे पसरैत छैक । आधुनिक युग मे विश्वस्तर पर जे परिवर्तन भेलैक तकर प्रभाव सँ भारतीय समाज सेहो अलग नहि रहलै । एहि प्रकिया सँ आयल बदलाव कें पश्चिमीकरणक परिप्रेक्ष्यमे देखबाक परिपाटी बनि गेल छैक । ब्रिटिश शासन काल मे अर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्र मे आयल परिवर्तन कें पश्चिमीकरण कहल गेलैक अछि। उनैसम शताब्दी सँ प्रारम्भ भ' बीसम शताब्दीक पूर्वाद्ध धरि कृषिक सामाजिक संरचना, न्याय व्यवस्था, औद्योगिक ढांचा, शिक्षा पद्धति, सभ एकर प्रभाव क्षेत्र छलैक । औपनिवेशिक राज्य अपन शासन के मजगूत बनयबाक उद्देश्य सँ कतेको महत्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तन आरम्भ कयलकै जकर दूरगामी प्रभाव पड़लै । एकर स्वरूप ऋणात्मक ओ धनात्मक दूनू छलै । जेना-जेना शासन मजगूत होइत गेलै, देशक आर्थिक शोषण बढ़ैत गेलै । गरीबी, भुखमरी, उत्पीड़न, दमन सभ चारुकात सँ समाज कें बान्हि देलकै । मुदा भारतीय इतिहासक ई एकटा रोचक प्रसंग अछि जे एहने विकट परिस्थिति मे विदेशी शासनक प्रतिक्रिया स्वरूप लोक मे एकटा नव आत्मविश्वास जगलै जे भारतीय पुनर्जागरण लेल प्रवर्त्तकक काज केलकै । अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त बुद्धिजीवी, जकरा पहिने प्रशासनक हेतु भक्त नौकरक रूप मे तैयार कयल गेल छलै, एकटा नव भंगिमा धारण क' अंग्रेजी कुशासनक विरोध मे संघर्ष शुरु क' देलकै। दोसर दिस भारतीय समाज कें स्वयं अपन गलती, कमजोरीओ कमीक बोध भेलै आ' इएह नवचेतना सुधार ओ परिवर्त्तनक लेल अन्त:प्रेरणाक काज केलकै। एहि पृष्ठभूमि मे आर्थिक, राजनीतिक ओ सामाजिक जींवन मे तदनन्तर आएल परिवर्तन ओ अन्तरजातीय संबंध पर एकर प्रत्यक्ष प्रभावक चर्चा दिस बढ़ल जा सकैछ ।

विभिन्न जातिक पदस्थिति मुख्यत: कृषिक अवस्था ओ ओहि मे आयल ऐतिहासिक परिवर्त्तन सँ जुड़ल रहलैक अछि। स्वतंत्रताक बाद कृषि क्षेत्र मे कतेको महत्वपूर्ण परिवर्त्तन अयलै । यदि अहिठाम खाली मिथिला क्षेत्रेटा कें सोझा राखि विचार

कयल जाय त' सभ सँ पैघ बात भेलै जमीन्दारी उन्मूलन । जमीन्दारी शोषण आ' उत्पीड़ण सँ प्राय: जीवनक सभ पक्ष दबल छल । ने उपजाबारीक स्थिति नीक, आ ने एकरा दुरूस्त करबाक स्वतंत्रता । जमीन्दारी उत्पीड़नक बिना कोनो विस्तृत चर्चा कयने, एतबा धरि कहब उपयुक्त हयत जे कृषि संरचना मे निहित वर्गीय व्यवस्था मूल रूपें जमीन्दारी सँ उत्पन्न भेल छलै । तैं, संरचनात्मक स्तर पर जमीन्दारी उन्मूलन सँ व्यापक बदलाव अयलै । भूस्वामित्वक स्वभाव मे परिवर्त्तन सँ वर्गीय संरचना मे सेहो हेर-फेर भेलै ।

सामान्य रैयत कें नव प्रकारक जीवन भेटलै । ई सभ सँ बेसी मध्य जातिकें प्रभावित केलकै । परंपरा सँ खेतीबारी सँ जुड़ल ओ स्वयं खेत मे काज करबाक अभ्यस्त हेबाक कारणें राज्य ओ काश्तकार क बीच चलि आबि रहल बिचौलियाक समाप्ति सँ ई जाति सभ सँ बेशी फायदा मे रहल । जमीन्दारी युग मे बेसी रैयत ओ दररैयत अही जातिक छलाह, ओना जन-बोनिहारी करयबला लोकक कमी सेहो एहि जाति मे नहि रहै । य़द्यपि एहि जातिक बहुसंख्यक लोक मध्यम एवं छोट जोतक मालिक छलाह मुदा, जमीन्दारी उन्मूलनक बेर मे जतेक जमीन बिकेलै तकर बेसी भाग यादव, कोयरी, कुरमी, सूड़ी सभकें हाथ लगलन्हि, किएक त' ओ बेसी दाम देबाक स्थिति मे छलाह। ब्राह्मण, कायस्थ, सोनार सभ अधिक काल जमीन बेचबे कयलन्हि । पूर्व जमीन्दार ओ महंथ स्थानक जमीन, जाहिमे बकास्त ओ भौली शामिल छल, अही प्रकारें उँच जातिक हाथ सँ मध्य जातिक हाथ स्थानांतरित भेलै । जमीनक एहि हस्तांतरण सँ एक दिस कृषिक अवस्था मे उपजाक दृष्टि सँ परिवर्त्तन भेलै ओ दोसर दिस गाम-घर मे चलि आबि रहल शक्ति ओ सत्ताक संरचनामे गुणात्मक बदलाव आबय लगलै।

भूस्वामित्वक एहि परिवर्त्तन सँ एकटा आओरो तथ्य नीक जकाँ जुटि गेलै । खेतक उपजा बढ़ाबक उद्देश्य सँ जे नब रणनीति अपनाओल गेलै, तकर सभ सँ बेसी फायदा ओहि मध्य किसान सभकें भेलै जे स्वयं अपने खेती करैत छल । पटौनीकनब साधन, नबका बीआ, खाद, किटाणुनाशक दवाइ, नब कृषि औजार सभ साधन मिलि खेतीक आकृतिये बदलि देलकै । ई सभ प्राविधिक परिवर्तन 'हरित क्रांतिक' रूप मे प्रकट भेलै । एहि क्रांतिक लाभ सेहो खेतिहर जातिये कें भेटलै । ओना मिथिला मे ओहेन हरितक्रांति नहि अयलै, जेहन दोसर क्षेत्र मे, मुदा प्रवृतिक दिशा निश्चित रुपें एके रंग रहलैक अछि । भूमि सुधारक क्षेत्र मे, जमीन्दारी उन्मूलनक अतिरिक्त सन् साठिक बाद हदबन्दी (सीलिंग) ओ बटैया कानून सेहो भूसंबंध के प्रभवित कयलकै। सभदिन सँ चलि आबि रहल शक्ति सम्पन्न ऊँच जातिक धनीक भूस्वामी प्रभावहीन होमय लगलाह, ओ हुनकर आर्थिक सामर्थक संग-संग सामाजिक महत्व सेहो दिन-दिन कमजोर पड़ैत गेलैन । कृषि क्षेत्र मे आयल व्यापक ओ असालतन परिवर्त्तन मात्र अर्थ-व्यवस्थे कें प्रभावित नहि केलकै बल्कि राजनीति ओ सामाजिक सम्वन्ध सेहो एकर चपेट मे अयलै ।

न'ब आर्थिक सम्पन्नता मध्य जातिकें राजनीति दिस प्रेरित केलकै आ ओ कमे समय मे एकरा नियंत्रित करबा मे सक्षम भ' गेलाह । वयस्क मताधिकार पर जमल संसदीय राजनीति मे संख्याक जे महत्व छैक तकर फायदा बिना कोनो झंझटिकें हिनका लो[illegible]नि कें भेटि गेलैन । सामुदायिक विकास कार्यक्रम ओ पंचायती राजक पसार सँ

स्थानीय स्तर पर सेहो राजनीति करबाक अवसर लोक कें भेंटलै । अही पृष्ठभूमि मे ग्रामीण विशिष्ट वर्गक उदय भेलै जे पहिले-पहिल पारंपरिक उँच जातिक चौकठि सँ बाहर संगठित भेलै । लग सँ देखला उत्तर ई स्पष्ट बुझना जाइछ जे एहि वर्ग मे मध्य जातिक लोक बेसी शामिल छथि, यद्यपि उँच जातिक सदस्यता एकदम खतम नहि भेलैक अछि । ई विशिष्ट वर्ग स्थानीय, क्षेत्रीय ओ राष्ट्र स्तरीय राजनीति मे सक्रिय भूमिका मे छथि।

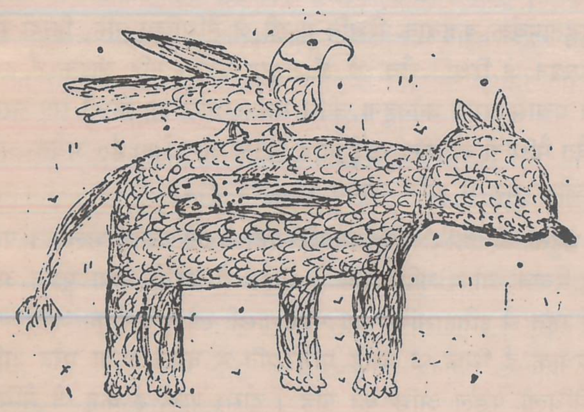
राजनीति मे दोसर मुख्य परिवर्त्तन जनसामान्य कें दल विशेष दिस आकर्षित करबाक प्रक्रिया मे अयलैक अछि । सभ दिन सँ राजनीतिकदल ओ संगठन अपन आधार कें बढ़ेबाक लेल कतेको साधनक उपयोग करैत आबि रहल अछि । परन्तु भारतीय समाजक विशिष्ट संरचनाक दुआरे जाति एकर एकटा मजगूत साधन रहलैक अछि । एकर स्वरूप यद्यपि बेर-बेर बदलैत रहलैक अछि तथापि पछिला किछु दिन सँ राजनीति अपना चांगुर मे एकरा नीक जकां फांसि लेलकैक अछि । वस्तुतः जातीय विभाजनक दुआरे राजनीतिक महजाल मे एकरा घिसिआयब हल्लुक भ' जाइत छैक। आइ सयह भेलैक अछि । ओना पहिने सँ उँच जाति अपन आधिपत्य जमौने रखबाक लेल एकर उपयोग करैत आबि रहल छथि मुदा आब सभ जाति मे एकर असर छैक। तैं आब एकर असार-पसार बेसी बुझना जाइछ ।

उँच ओ मध्यजातिक तुलना मे अछोप जातिक सामाजिक आर्थिक स्थिति मे कोनो मौलिक परिवर्त्तन नहि भेलैक अछि । आइयो एहि जातिक लोक सभ मुख्यतः भूमिहीन जन-बोनिहार छथि । ओना किछु गोटे बटैया करबा मे सेहो लागल छथि । वस्तुतः आजुक कृषि विकास सँ प्राप्त नफा मे हिनका लोकनिकें हिस्सा नामे मात्र भेटलन्हि अछि। शिक्षा ओ अधुनातन व्यवसायक दृष्टिएँ सेहो एखन तक उपेखले छथि । एहि सभक होइतो एकटा महत्वपूर्ण प्रवृति एहि समुदाय मे परिलक्षित भ' रहल अछि । सामाजिक-आर्थिक अवस्था मे भने कोनो सुधार नहि भेल हो परन्तु राजनीतिक दिशा मे एकटा उल्लेखनीय प्रवाह अयलैक अछि । अबडेरल ओ उपेखल हेबाक चेतना सँ प्रतिबद्ध राजनीतिक दल एवं संगठन नियोजित रीति सँ हिनका लोकनिकें संगठित कयलक अछि ओ एकर स्पष्ट छाप हिनका सभक चेतना पर पड़लन्हि अछि । फलस्वरूप ई लोकनि आब असक्रियता ओ अक्षमता सँ ग्रसित नहि बुझा रहल छथि। एहि नव चेतनाक उपयोग आन्दोलन ओ संघर्षक हेतु भ' रहल छैक । जे जाति सदा सँ आत्मसमर्पण करैत आबि रहल छल से आइ ताल ठोकबाक स्थिति मे पहुँचि गेल अछि । एहि प्रसंग मे एकटा दोसरो तथ्य पर ध्यान देब आवश्यक । दलित समुदायक संघर्ष मात्र आर्थिक शोषणओ राजनीतिक पक्षपातेक खिलाफ मे नहि भ' समाजिक उत्पीड़नक विरोध मे सेहो चलि रहल छैक जे 'इज्जतिक लड़ाइक'रूप मे प्रकट भेलैक अछि । वस्तुतः ई जातीय विषमता कें जड़ि सँ समाप्त करबाक मौलिक लड़ाइ थिक।

एखन धरि प्रस्तुत तथ्य ओ विश्लेषण सँ स्पष्ट हयत जे गामघरक परिवेश मे जे समीकरण बदललैक अछि तकर सोझे-सोझ प्रभाव अन्तरजातीय संबंध पर पड़लैक अछि । आइ चारुकात जे असंतोष ओ निराशा व्याप्त छैक ओएह अन्तरजातीय द्वन्द्व क रूप मे प्रकट भ' रहल छैक । वस्तुतः ई द्वन्द्व कोनो कानून-व्यवस्थाक प्रश्न नहि, व्यापक सामाजिक परिवर्त्तनक लक्षण थिक । जातीय तनाव ओ संघर्ष रूप मे उठैत

घटनाक्रम मूलतः वर्गहितक अन्तर्विरोध पर ठाढ़ छैक । आइ जाति हित ओ वर्ग हित दूनू एक दोसरा सँ घनिष्ठ भ' गेलैक अछि । एहन परिस्थिति मे परंपरागत मूल्य, संस्कार ओ सौहार्दक स्वरूप मे गुणात्मक परिवर्त्तन स्वाभाविक थिक । एक दिस पूर्व सँ सेबल उँचजातिक अधिकार ओ शक्ति समाप्त भ' रहल छैक, त' दोसर दिस मध्य ओ दलित जाति एकरा समकक्ष ठाढ़ हेबा मे सक्षम भ' रहल छैक । एकटा समूह अपन शक्तिक ह्रास सँ तमसायल अछि त' दोसर नब प्राप्त सामाजिक सत्ता सँ चमकि रहल अछि। एहेन परिवेश मे आपसी स्नेह ओ सौहार्द पुनः तखने स्थापित भ' सकैछ जखन बड़का उदार हेताह आ' छोटका प्रतापी बनि ओहेन समाजक पुनर्निमाण मे लागि जेताह जतय ने हेतैक जातीय उत्पीड़न आ ने वंश पर आधारित पक्षपात ।

❑



निबन्ध-3

गोविन्द झा

मैथिलीक भविष्य : समाजशास्त्रीय आकलन

कोनो भाषाक भविष्य मुख्यत: वक्तृवर्गक भाषिक अभिरुचि आ क्षमता पर निर्भर रहैत अछि। मैथिलीक प्रति एकर तथाकथित वक्तृवर्गक अभिरुचि केहेन छैक आ ओकर आर्थिक, सामाजिक आ राजनैतिक प्रतिपत्ति केहेन छैक तकर विधिवत् अध्ययन कदाचित् एखन धरि नहि भेल अछि वा जँ किछु भेलो अछि तँ से हमरा ज्ञात नहि। तें एतय हम जे किछु कहब से हमर व्यक्तिगत अनुमान मात्र बूझल जाय; आ तहिं एहि प्रबन्ध मे प्रमाणीकरणार्थ उद्धरण वा स्रोत निर्देश नाम मात्र दए सकलहुँ अछि।

लगभग पचीस वर्ष पूर्व हम आशंका व्यक्त कएने रही-की मैथिली मरि जायत? आइ किछु आओर दृढ़तापूर्वक कहबाक स्थिति मे छी जे मैथिलिए नहि, हिन्दी सेहो मरणोन्मुख अछि। एखन जे स्थिति छैक से जँ सहसा बदलि नहि जाइक तँ हमरा जनैत मैथिली आओर पचास बरख कोनहुना जीबि सकैत अछि आ हिन्दी सए बरख। 2050 ई० अबैत-अबैत मैथिली कें हिन्दी/उर्दू गीड़ि लेतैक आ 2100 ई० अबैत-अबैत हिन्दी अपनहु अंङरेजीक पेट मे चलि जायत।

हमर ई धारणा बहुतो कें हास्यास्पद लगतनि-एह, एहनो कतहु भेलैए। परन्तु प्रश्न हँसि के उड़ाए देबाक योग्य नहि अछि। अतीत मे बहुतो भाषा मुइल अछि आ भविष्यहु मे मरैत रहत से इतिहासविद् आ भाषाशास्त्री लोकनि नीक-जकाँ जनैत छथि। तखन विचारबाक ई थिक जे जाहि परिस्थिति मे कोनो भाषा मरैत अछि, तेहन परिस्थिति मे मैथिली पड़ल अछि की नहि। दोसर शब्दें ई कहू जे मैथिली जीवित रहबाक स्थिति मे अछि की नहि। हमरा तँ देखि पड़ैत अछि जे मैथिली सभ तरहें मरबाक स्थिति मे सम्प्राप्त भए गेल अछि। जाहि भाषा कें जनता 'अपन भाषा' नहि बुझए आ सरकार मारए चाहैक तकर आयु एहि सँ बेसी कतेक आँकल जाय सकैत अछि?

भाषा मानवक जन्मजात गुण नहि, अर्जित सम्पदा थिक-शरीर नहि, परिधान थिक, जे रूचि आ सुविधाक अनुसार अरजल आ बदलल जाए सकैत अछि। अतीत मे भाषा बदलब बड़ कठिन होइत छलैक। बच्चा माइक मुह सँ भाषा सिखैत छल

आ आन कोनो भाषा, ओकरा घर-आङन मे नहि रहैत छलैक। आइ जन्म लितहिँ माइक बोलहुँ सँ पहिने ओकरा कान मे दूरक यन्त्र प्रक्षिप्त भाषा पड़ैत छैक आ स्थानीय मौखिक माध्यम सँ बहुत अधिक मात्रा मे यान्त्रिक माध्यम ओकरा भाषा सिखबैत छैक। तें आब मातृभाषा शब्द अर्थहीन भए गेल अछि। सम्प्रति मैथिली भाषीक घर मे यन्त्र भाषा मैथिली नहि, हिन्दी अछि। अत: आइ जे बच्चा मैथिली क्षेत्र मे जन्म लेत से जँ मैथिली कोनहुना सीखिओ लेत तँ ओकर 'संस्कार' मैथिलीक नहि, हिन्दीक होएतैक। आगाँ ओकर शिक्षा-दीक्षा हिन्दी मे होएतैक। ओकरा सहजता आ प्रवीणता मैथिली मे नहि, केवल हिन्दी मे होएतेक। ओ मैथिली ने लिखि सकत, ने पढ़ि सकत। ई स्थिति बहुत दूर धरि आइयो आबि चुकल अछि। मैथिली एखनहु धरि केवल ठोर पर जीबैत अछि, तें एखन धरि मैथिली क्षेत्र मे हिन्दी कें एकाधिकार नहि प्राप्त भेलैक अछि, परन्तु एहि मे सन्देह नहि जे आइ मैथिल समाज आबाल वृद्ध-साक्षर-निरक्षर पूर्णत: द्विभाषी भए चुकल अछि आ ओकर भाषात्मक शरीर पक्षाघात सँ पीड़ित अछि-एक अंग हिन्दी मे संचार छैक, दोसर अंग मैथिली संचारहीन छैक।

एहन अवस्था मे बहुधा देखल गेल अछि जे दूनू भाषा संग-संग किछुए दिन चलैत छैक। कालक्रमेण समाज दू मे कोनो एक भाषाकें निरसि पुन: एकभाषी भए जाइत अछि। कोन भाषा जीअत तकर निर्णायक होइत अछि मात्स्यन्याय। तदनुसार अगिला पीढ़ी मे आबि मैथिलीक पोठी कें हिन्दीक भाकुर गीड़ि लेतैक आ मैथिल समाज पुन: एकभाषी भए जायत। तदुत्तर द्वितीय भाषाक रूप मे अङरेजी आओत आ समाज पुन: द्विभाषी भए जाएत। पश्चात् हिन्दीओ मरि जायत आ रहि जायत एकमात्र अङरेजी। ई प्रक्रिया सए वर्ष मे पूर्ण भए सकैत अछि। एही प्रक्रिया सँ अमेरिकाक बहुतो कबीला सभक भाषा मुइलैक अछि आ यूरोपक विभिन्न देश सँ आबि अमेरिका मे बसनिहार बहुतो लोकक मातृभाषा कें अङरेजी गिड़लक अछि।

दुर्बल भाषाकें प्रबल भाषा गीड़ैत अछि। मैथिली बड़ दुर्बल भाषा अछि। विद्वान लोकनि पता लगओलनि अछि जे मैथिली मे की की दुर्बलता छैक ? किछु प्रमुख दुर्बलताक चर्च एतए करब।

मैथिलीक सभ सँ पैघ दुर्बलता थिक एकर वक्तृवर्ग मे अर्थात मैथिलीभाषी समाज मे एकात्मता वा समरसताक अभाव। ई समाज मानू विशृंखलित बहुरंगीवर्ग सभक समुदाय थिक। सभ सँ प्रमुख विभाजन अछि डीही आ पाहीक। डीही ओ वर्ग थिक जे अदौ सँ अर्थात सुदूर अतीत काल सँ मिथिला मे बसैत आएल अछि जेना मुसहर, चमार, दुसाध, गोढ़ि, केओट, धानुक, गोआर, तिरहुतिआ काएथ, गन्धबरिया राजपूत, तिरहुतिआ बाभन इत्यादि। एहि वर्गक प्रमुख लक्षण ई थिक जे एकरा सभक वैवाहिक सम्बन्ध मिथिला सँ बाहर कदाचिते होइत अछि, आ दोसर लक्षण ई छैक

जे एहिवर्गक सभ जाति परम गृहासक्त, प्रवासकातर आ घरघुसना होइत अछि (हँ, विशिष्ट पण्डित लोकनि कें अपवाद बूझू) । पाही ओ वर्ग थिक जे परवर्त्ती काल मे, विशेषत: तेरहम शताब्दी क बाद बाहर सँ आबि मिथिला मे बसल, जेना अगरबाल, बरनबाल, कुलीन मुसलमान (शेख, पठान, सैयद), पछिमा काएथ (अर्थात श्रीवास्तव आ अम्बष्ठ) पछिमा बाभन (अर्थात भूमिहार ब्राह्मण) इत्यादि । एहि मे पछिमा शब्द ध्यान देबाक थिक । ओना द्वितीय वर्गक सभ जाति पश्चिम सँ आएल अछि तें सभ पछिमा भेल, मुदा ई विशेषण केवल बाभन आ काएथ मे लगाओल जाइत अछि, कारण जे ई दूनू डीही वर्ग मे सेहो अछि । अत: तिरहुतिआ बाभन आ तिरहुतिआ काएथ सँ विभेद करबाक हेतु ओहि दुनू मे विशेषण लगाएब आवश्यक भेल, आन मे नहि।

उपर्युक्त दूनू वर्ग चिरकाल सँ एकठाम रहितहुँ भाषाक विषय मे (तथा आनो अनेक विषय मे) एक नहि भए सकल । दूनू मे तिलतण्डुल सम्बन्ध रहलैक, नीरक्षीर सम्बन्ध नहि । सभ सँ अधिक दूरत्व शिक्षित कुलीन मुसलमान आ ब्राह्मणक बीच अछि । दूरत्वक अनुमान एही सँ लगाउ जे मिथिलावासी मुसलमान मे कदाचिते एकोटा संस्कृतक आचार्य वा मैथिलीक एम० ए० भेटताह । एहिना मैथिल ब्राह्मणहु मे प्राय: एकोटा फारसीक विद्वान (आलिम/फाजिल) नहि भेटताह । ब्राह्मण मैथिलीकें अपन मातृभाषा बुझलन्हि आ उर्दू सँ दूरे हटल रहलाह आ ताहिना मुसलमान केवल उर्दू कें अपन भाषा बुझलनि, आ मैथिली कें अछोप । ई पारस्परिक छूआछूत मैथिलीक हेतु बड़का घातक भेल । एकर विपरीत बंगाल मे, हैदराबाद मे, केरल मे आ महाराष्ट्र मे दखैत छी मुसलमानो लोकनि प्रचुर संख्या मे संस्कृत पढ़लनि आ स्थानीय भाषा सभकेँ अपन बुझलनि; तहिना ब्राह्मणादिओ फारसी आ उर्दू किछु ने किछु पढ़लनि। आश्चर्य जे मिथिला मे एहि प्रकारक भाषिक एकात्मता वा पारस्परिकता किएक नहि अएलैक आ आइयो ई दूरी घृणात्मक स्तर धरि किएक पसरल जाय रहल छैक। कारण अन्वेषणीय अछि । ताहि क्रम मे प्रथमत: ई देखल जाय जे मैथिलीक प्रति पाही वर्गक मुस्लिमेतर शिक्षित जातिसभक (अर्थात पछिमा काएथ आ पछिमा बाभनक) की रूखि अछि। वर्त्तमान सँ आरम्भ करी तँ स्पष्ट देखि पड़ैत अछि जे मुसलमाने जकाँ इहो दूनू जाति मैथिली सँ दूर रहल । प्रमाण इएह जे सम्प्रति शिक्षा मे अग्रणी रहितहुँ एहि दूनू जातिक लोक मैथिलीक विशाल शिक्षक वर्ग मे वा सहित्यकार वर्ग मे कदाचिते भेटताह । लगैत अछि,जेना मुसलमान लोकनि फारसी आ उर्दूक मोटरी चानि पर चढ़ओनहि मिथिला मे प्रवेश कएलनि तहिना इहो दूनू जाति हिन्दी/उर्दू कँ मथा चढ़ाओने अएलाह आ ओकरहि अपन भाषा बुझलनि।

मिथिला मे डीही आ पाहीक बीच जे एकात्मता नहि भेल तकर एक कारण अछि स्तर भेद । एकात्मता समकक्ष मे होइत छैक । मिथिला मे जे जाति सभ बाहर सँ

आएल तकरा सभक आर्थिक क्षमता आ राजनैतिक शक्ति बहुत अधिक छलैक। ई सभ अपना तर दबल डीही जनता कें अपन आर्थिक उन्नतिक संसाधन आ राजनैतिक उन्नतिक सीढ़ी मात्र बूझैत रहल । एही उद्देश्य सँ तँ ई सभ पश्चिम सँ एतय आयल छल। एहि परिप्रेक्ष मे मिथिला आ झारखंडक स्थिति समान अछि: स्थानीय विपन्नता सँ लाभ उठएबाक हेतु बाहर सँ सम्पन्न लोकक अन्त:प्रवेश । एहि बाहरी लोकक हेतु मैथिली भेल शासितक भाषा आ उर्दू, हिन्दी भेल शासकक भाषा । शासितक भाषा सदा हेय दृष्टि सँ देखल जाइत छैक, आ शासकक भाषा शासित पर सभदिनसँ लदाएल जाइत रहलैक अछि आ बहुधा ओहि लाद सँ दबाए मरैत रहलैक अछि ।

डीही जाति सभ मे केवल तिरहुतिआ बाभन आ तिरहुतिआ काएथ प्रबुद्ध रहलाह अछि । इएह सभ अपन मातृभाषाकेँ चिन्हलनि आ समय-समय पर तकर अस्तित्व रक्षा लए चिचिआइत रहलाह । परिणाम उनटे भेल । मैथिली एही दू जातिक भाषा कहि आओर दबाओल जाय लागल । आन जातिक डीही लोक सभ मैथिली कें 'आनक भाषा' बूझए लगलाह, मैथिली बाजब गमरपन बुझए लगलाह, आ इहो बूझए लगलाह अछि जे ई गमरपनक दाग अर्थात मैथिली जतेक जल्दी मेटाए जाय ततेक नीक । पटना आ दिल्ली दूनू हुनकालोकनिकेँ एहि मे पूरा प्रोत्साहन आ सर्वविध सहायता उपलब्ध कराए रहल छनि । तें कहल जे आइ ने काल्हि मैथिलीक मृत्यु अवश्यम्भावी छैक ।

तैओ जे एखन मैथिली जीबि रहल अछि से निर्धन, निरक्षर, निरीह, निमूह लोक सभक ठोर पर; अथवा मुट्ठीभरि जिद्दी मातृभाषा प्रेमी लोकनिक उन्मादी संघर्ष क बलपर । मुदा ई उन्माद, ई निर्धनता, ई निरक्षरता कतेक दिन टिकि सकैत अछि? प्राय: अधिक सँ अधिक पचास वर्ष । तहिँ कहल जे मैथिलीक आयु-सीमा पचास वर्ष । हँ, पचासवर्ष, जँ एहने स्थिति रहलैक । परन्तु आजुक राजनीति मे कखन की भए जायत से केओ नहि जनैत अछि । आइ मैथिलीक जे स्थिति छैक सएह स्थिति एक दिन पंजाबीक छलैक जकरा क्षेत्र मे उर्दूक एकच्छत्र राज्य छलैक, आ पंजाबी केवल अनपढ़ लोकक ठोर पर जीबैत रहय । आइ की स्थिति छैक से देखिए रहल छी । इजराइली भाषा तँ बूझू कबर सँ कोड़ि के बाहर कए लेल गेल। राजनीति मे कोनहु क्षण एहन विस्फोट भए सकैत छैक जे मैथिली मरबाक बदला राजगद्दी पर चढ़ि बैसए । मैथिली जीबओ कि नहि, मैथिलीक प्रेमी एही आशा पर जीबैत छथि आ मैथिलीकेँ जिअओने रखबा से सक्रिय छथि ।

❑

निबन्ध-4

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

कत्ते दिन जीयत मैथिली ?

कत्ते दिन जीयत मैथिली ? ई प्रश्न मैथिली-भाषीक रूप मे हमरा अहाँके जत्तेक चिन्ता करै' ले' बाध्य करैत अछि तहिना अन्यान्य गौण-भाषी के सेहो सोच मे ध' देलक अछि । हमर कोनो भाषा-विद् मित्र तथा विद्वान बंधु कहैत छथि, 'आब पचासे वर्ष मात्र रहल बाँकी ! तैं जे किछु करबाक हो एखनहि क' लिअ'। क्यों-क्यो, जे अति आशावादी छथि से '*जीवेत् शत-सहस्रञ्च*' कहि अपना के तथा हमरा लोकनि के प्रबोध द' रहल छथि । एहि शंकाक समाधानक लेल हमर कवि-लेखकवर्ग जे सदुत्तरक आशा एकटा समाज-भाषा विज्ञानीक रूप मे हमरा सँ करैत होथि तनिका लोकनिकेँ हम इयैह कहबन्हि जे भावुकताक ज्वारि मे नहि बहि कए एहि विषयक गंभीर अध्ययन करू !

गंभीरता सँ विचार करबाक हे त' पहिनहि देखि सकै छी जे भाषा-जीवनके संग मानव-जीवनक जत्तेक साम्य अछि, विरोध आ विषमता ततबहि प्रखर अछि। मानव-विशेषक जीवनकेँ जँ जीववैज्ञानिक आकस्मिकता (Biological accident) कहि सकै' छी, कोनो भाषाक आविर्भाव केँ तकरा सँ तुलना करैत कालिक आकस्मिकता कहब उचित हैत। प्रथमोक्त जनन-प्रक्रिया मे मातापितरौ आवश्यक छथि-मुदा भाषाक प्रजननक हेतु कतेको कारण भ' सकैछ:

एक: ई सम्भव छैक जे आइ जकरा हम सभ एकटा विशेष भाषाक नाम सँ जनै छी, से भाषेतिहासक दृष्टियें एकटा प्राचीन अथबा मध्ययुगीन भाषा के एकटा पर्याय-मात्र थिक । कोनो-कोनो भाषा एहनो होइ छैक जकर नाम रहैत अछि अपरिवर्तित; उदाहरण-'तमिल' जकर नाम पृथक-पृथक काल मे 'तमिले' रहल । मुदा एहन-एहन प्रभेद पाओल जाइत अछि, एहन दूटा पर्याय मे जे 'हिन्दी' तथा बंगला' भाषाक इतिहास मे एहन पर्याय-भेदक लेल हम सभ पृथक भाषा नामक प्रयोग करै छी; उदाहरण 'अवहट्ठ' तथा 'बंगला' । तैं मात्र नामकरणक इतिहास के देखैत जँ क्यों कहै छथि जे तमिल अति प्राचीन भाषा थिक आर बंगला वा मैथिली अति नवीन त' ओ गलतीकरैत छथि ।

दू: कोनो भाषा-विशेषक जन्म भ' सकैछ कोनो युद्ध क्षेत्र मे भेल हो-जतय अनेक तरहक वाचन-शैली तथा भाषा-भंगिमाक अधिकारी लोकनि एकत्रित भए (राजनैतिक कारणें) एकजुट सँ कोनो सामान्य शत्रुक संग लड़ि रहल छथि; एहन ऐतिहासिक आकस्मिकताक श्रेष्ठ उदाहरण रूप मे उर्दू कँ लेल जा सकैत अछि, जकर विस्तृत वर्णन अमृत राई अपन ग्रंथ 'The House Divided' मे देने छथि ।

तीन: उपरोक्त कालिक आकस्मिकता कँ छोड़ियहु कए भ' सकैछ मात्र भौगौलिक अवस्थितिक कारणें कैकटा भाषाक संमिश्रण सँ जन्म होइत अछि एकटा मिश्र भाषा जकरा Pidgin कहल जाइत अछि आ जतय संमिश्रण ध्वनि, शब्द तथा वाक्य-एक वा एकाधिक स्तर मे भ' सकैत अछि । जखन एहन बाजारू भाषा आगाँ चलि कए कोनो नवीन प्रजन्मक मातृभाषा बनि जाइत अछि त' तकरा एकटा स्थायी रूप भेटि जाइत अछि। तखनहि एकरा 'creole' कहल ज सकैत अछि, जेना मोरिशीयन क्रेओल भेल, जाहि मे फ्रांसिसी, भोजपुरी, अंग्रेजी तथा हिन्दीक संमिश्रण भेल अछि।

चारि: कोनो-कोनो भाषाक जन्मक संग एकटा महान साहित्यकार अथवा साहित्यिक धाराक जन्म जुड़ल रहैत अछि । जे किछु काल्हि धरि उपभाषा मात्र छल कोनो प्रतिष्ठित आ' मानकीकृत (Standardized) भाषाक से एहि तरहें एकटा पृथक भाषाक रूप मे आत्मप्रकाश करैत अछि; जेना जर्मनी सँ डच बहिराओल अछि। सामान्य रूप मे एहि तरहें जात भाषाक संग मूल भाषाक भाषिक दूरी बहुत कम्मे होइत अछि।

पाँच: कखनहुँ ईहो भ' सकैछ जे मात्र एकटा उद्देश्यक पूर्तिक लेल कोनो गोष्ठी अथवा व्यक्ति एकटा भाषाक निर्माण करैत अछि जे कोनो स्वाभाविक वा प्राकृतिक भाषा नहि थिक । मूक-वधिर लोकनिक भाषा आ 'अन्तर्राष्ट्रीय भाषा' एस्पेरांतो' सँ ल' कए गणितक भाषा धरि-सभटा एहि तरहें आयल अछि हमरा सभक समाज मे।

एहि तरहें भाषाक जनन-प्रक्रियाक आर कतेको प्रविधि दय बात-विचार कैल जा' सकैत अछि जाहि सँ अंतत: ई बात स्पष्ट भ' जाइत अछि जे भाषाक जन्म अनेकों तरह सँ होइत अछि । तैं इहो सोचब स्वाभाविके हैत जे भाषाक मृत्यु जीव-जगत मे कोनो प्राणीक मृत्युक संग तुलनीय नहि भ' सकैत अछि । भाषाक विलोपक पाछाँ सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, शैक्षणिक आदि कतेको कारण भ' सकैत अछि, मात्र एतबा कहब यथेष्ट नहि हैत जे कोनो भाषा विशेष मे जँ साहित्यिक सर्जनशीलताक स्वस्थ धारा रहैत अछि त' ओ युग-युग धरि टिकि जायत । ईहो ठीक नहि अछि जे कोनो संस्कृतिक संग तकर भाषा जँ ओतप्रोत रूप सँ जुड़ल रहैत अछि त' तकर विनाश संभव नहि होइत अछि । भाषा संस्कृतिक समिति सम्मेल केँ होइतहु संयोग सँ कोनो भाषाक स्रोत सूखि सकैत अछि । अत: अनेक रास कारण जखन रहै अछि तखनहि कोनो भाषा-विशेषक 'निधन' संभव होइत अछि ।

आब देखल जाय मैथिलीक की स्थिति अछि ! प्रथम पर्व सँ ल' कए एखन धरि मैथिलीक साहित्यिक गतिशीलता उल्लेखनीय अछि । ई बात अवश्य ठीक अछि जे बीच-बीच मे लेखनक इतिहास मे ज्वार-भाटा दूनू आएल अछि । विशेष रूप सँ किछु विधा एहन रहल जाहिमे सर्जनशीलता एक तरहक नहि रहल । जेना उदाहरण क रूप मे नाट्य रचना के लेल जा सकैत अछि । जतय प्रथम पर्व मे मैथिली नाटक आ' नाट्याभिनयक एतेक बोलबाला छल, आधुनिक युग मे आबैत-आबैत ई स्रोत लगैछ जेना सूखि गेल हो । 1860 ई० क बाद सँ जतय अन्य सभ भाषा आ' साहित्य मे उपन्यास और नाटकक चर्चा क्रम-वर्धमान रहल अछि, मैथिली तकर तुलना मे पछुआएल रहल । आधुनिकोत्तर कालहुमे, अर्थात 1911 सँ 1956 क भीतरहुमे

उल्लेखनीय सर्व भारतीय स्तरक प्रदर्शन योग्य अथवा पठनेयोग्य नाटकक अभाव सभ संस्कृति सम्पन्न लोक कँ खटकै छलन्हि जाहि हेतु अनुवाद नाटकक धाराक श्रीगणेश भेल और तैं 1970 ई० केर बादे आबि कए नीक मूल नाट्य-रचना रचित, मुद्रित, मंचित होमय लागल ।

एहि तरहें देखल जाय त' सभटा विधाक प्रगतिक ने परिमाणं तथा सीमा एक रहल आ' ने गतिए एक तरहक रहलैक । तथापि जँ क्यों अन्य भाषा तथा साहित्यक संग तुलनात्मक दृष्टियें देखताह त' तैयहु मैथिली साहित्यकें प्रगतिशीले बुझताह । जे किछु अभाव एहि मे बाहरी लोक कें लगैत छन्हि तकर कारण ई भेल जे सर्व-भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तरक भाषा सभटा मे मैथिलीक नीक सँ नीक रचना आइ धरि नहि पहुँचि सकल । हम सभ अपनहि सभक भीतरक छोट-छोट कलह-कोलाहल मे ओझरायल रहलहुँ, मुदा सार्थक अनुवादक लेल जे अथक प्रयासकं आवश्यकता अछि, ताहि दिस ध्याने नहि देलहुँ । मैथिली सँ हिन्दी मे अनुवाद भेल अछि-विशेषरूप सँ कथा आ कविताक-मुदा अधिकतर आवश्यकता अछि बंगला, मराठी, मलयालम, तमिल, तेलगू तथा कन्नड़ मे अनुवादक तथा अंग्रेजी मे नीक अनुवादक प्रबंध करब।सर्वभारतीय साहित्यिक पृष्ठभूमिक विषय मे जे क्यो अध्ययन कयने छथि वैह कहताह जे एखन हिन्दी कें छोड़ि कए साहित्यिक सर्जनशीलता तथा सजीवताक (Creativity and vitality) दृष्टियें इयैह छहटा भारतीय भाषा अछि जे बाकी सभ सँ और कोनो क्षेत्र मे हिन्दीयहु सँ आगाँ रहल अछि । तैं मैथिलीक साहित्यक उपलब्धि तथा सफलताक परिचय जँ एहि सभ सजीव भाषा-साहित्य धरि हम सभ पहुँचा सकी तखन जीवन तथा जीवितताक परंपरा सँ मैथिली नहि छूटत । और तैं अनुवाद-कर्मक दिस ध्यान देब आवश्यक अछि । नीक नीक अनुवादक लोकनि कँ ताकि कए हुनका लोकनि कें जँ एहि सृष्टि-कर्म मे प्रवृत्त करा सकियन्हि त' ई बड़का काज हैत । एकर प्रारंभ भेल अछि अनुवाद कर्मशालाक माध्यम सँ मुदा मात्र सरकारी अनुदान और अनुबंध पर निर्भर कयला सँ नहि चलत ।

सांस्कृतिक क्षेत्र मे मैथिली चित्रकलाक तथा हस्तशिल्पक जयजयकारक विषय मे अधिक किछु बाजब अनावश्यक अछि । मुदा मिथिलाक सांगीतिक परंपराक विषय मे बाहरक पृथ्वी किछु नहि जानैत अछि । गीत-संगीतक आवेदन त' सर्वमानवीय होइत अछि । तैं एहि दिशा मे सटीक डेग बढ़ायब कोनो कठिन काज नहि हैत । उपरंतु विद्यापतिक नाम मे एखनहु एहन ऐन्द्रजालिक क्षमता छैक जे एहि दिशा मे ठोस डेग उठाबै मे कोनो बाधा नहि आओत । मिथिलाक लोक-कथा तथा लोकगीत विषयक शोध-कर्म तथा चर्चा जेना बन्न भ' गेल अछि । मैथिलीक विश्वविद्यालय स्तरीय शोधकर्मक मान एत्तेक निम्नस्तरक भेल जा रहल अछि दिनोदिन जे ई अपेक्षा करब अनुचित हैत जे एहन गवेषणा, मिथिलाक लोक साहित्यकें सर्वभारतीय स्तर पर ल' जा सकत और मिथिलाक संस्कृति सँ लोकं के परिचित करा सकत। मुदा एहि विषय पर काज त' समाजविज्ञानी, नृतात्विक, भाषाविद्, इतिहासकार-जे क्यो क' सकैत छथि एवं मैथिली भाषी विद्वत्समाज मे एहन ज्ञाता बा कर्मठ लोक नहि छथि से विश्वास नहि होइत अछि ।

राजनीतिक तथा समाजिक क्षेत्र मे साधारणतया ई देखल गेल अछि जे मैथिलीक कोनो पृथक स्वर नहि अछि । झारखंडी तथा नेपाली कें जाहि तरहें जे० एम० एम०

तथा जी० एन० एल० एफ० जकाँ राजनीतिक समर्थक दल भेटल छन्हि, मैथिलीक आन्दोलनक इतिहास मे एहि तरहक कोनो योजना वा चिन्ता कहियहु गंभीर रूप मे नहि कैल गेल अछि । आ' ने कोनो सर्वभारतीय राजनीतिक दलक समर्थने कखनहु मैथिल समाज कें भेटल छन्हि । मुदा एकर अर्थ ई नहि जे मैथिली-भाषी लोक मे क्यो एहन राजनीतिक नेता नहि भेल छथि जनिका कोनो ने कोनो महत्वपूर्ण शासकीय पद नहि भेटल छन्हि प्रोदेशिक तथा केन्द्रीय स्तर पर । मुदा से होइतहु मात्र एक-दू गोटे के छोड़ि कए किनकहु मैथिलीक सपक्ष मे किछु करबाक वा कहबाक साहसे नहि भेलन्हि-डर रहलन्हि सर्वदा जे हुनक पद ने छूटि जाइन्ह । ईहो देखल गेल अछि जे मैथिली आन्दोलनक फलस्वरूप जे किछु लाभ आइ धरि मैथिली भाषी कें भेल छन्हि तकर बेसी भाग अमैथिली भाषी मुख्यमंत्रीक समय मे भेलन्हि । इहो देखल गेल जे एहन कतेको सिद्धान्त मैथिली भाषी मुख्यमंत्री लोकनि लेलन्हि जे मैथिलीक हितक विरूद्ध लेल गेल छल ।

तकर अर्थ ई जे सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्र मे मैथिले मैथिलक शत्रुता करैत आयल अछि । एहि तरहक प्रवृत्ति सँ मैथिलीक लाभ त' नहिये भ' सकैत अछि, मैथिलीक क्षति अवश्य भ' सकैत अछि । तैं मैथिली भाषाक हेतु जँ क्यों नहियो सचेष्ट होमय चाहथि, त' कम सँ कम मैथिली भाषी मनुक्खक स्वार्थ रक्षाक लेल राजनीति तथा समाजिक स्रोत सँ मैथिली कें जोड़थि । दुर्भाग्य क गप्प ई जे अन्तर्कलहक सभ सँ नग्न रूप तखन नजरि मे आबैत अछि जखन इ देखेत छी जेतबे स्वीकृति मैथिली कें भेटल अछि तथा जाहि जाहि क्षेत्र मे उचित स्थान-सम्मान तथा सुविधा हमरा लोकनि के प्राप्त भेल अछि, तकर लाभ मात्र एकटा गोष्ठी वा जाति उठा रहल अछि । ई त' ऐतिहासिक सत्य थिक जे सभटा क्षेत्र मे जतेक प्रतिभा मिथिलाक इतिहास मे आयल अछिसे सभटा अथवा अधिकांश एकटा जाति-विशेषक रहथि । एहि मे आश्चर्यक कोनो गप नहि तथा आकस्मिकता सेहो नहि अछि कारण एकर संबंध शिक्षा सँ रहल अछि । चर्तुवर्ग मे ब्राह्मणें कें आदिकाल सँ शिक्षा प्राप्त हेबाक सुविधा छलन्हि और तैं अधिकांश क्षेत्र मे मैथिल ब्राह्मण कें अपन प्रतिभाक प्रदर्शनक सुविधा भेटलन्हि एहि मे संदेह नहि । मुदा एकर एकटा फल इहो भेल जे सामाजिक सम्मान आ' प्रतिष्ठाक राजनीति मे आगाँ चलि कतेको प्रतिभाशाली और प्रभावशाली ब्राह्मण वर्गक व्यक्ति सक्रिय रुप सँ 'मैथिली' सँ जात सभटा लाभ अपनहि सभक झोरा मे समेट' लगलाह। जे क्यो ई चाहैत अछि जे मैथिलीभाषा कें वर्ग वा जाति-मात्रक भाषाक रूप मे चिन्हित नहि होबै देल जाय अथवा मैथिली के ठीक दिशा मे और आगाँ उच्चतर शिखर पर ल' गेल जाय तकरहि लेल ई आवश्यक अछि जे ताकि-ताकि कए प्रतिभाशाली अन्य वर्ग वा जातिक व्यक्ति कें मिथिलाक भाषा, साहित्य तथा संस्कृतिक क्षेत्र मे आगाँ बढ़बाक लेल प्रोत्साहित कैल जाय, ई नहि जे एतबा कहला सँ दायित्वक निर्वाह भ' गेल जे' बढ़थुने आँगा-हम मना थोड़े क' रहल छियन्हि? सौभाग्यक बात ई जे कतेको ब्राह्मण बुद्धिजीवी एखन एहि दिशा मे सचेष्ट भेल छथि। मुदा तकर परिणाम एखनधरि सामने नहि आयल अछि ।

वस्तुतः ईहो एकटा कूटनैतिक चालि हैत मैथिलीक पक्ष मे । मात्र अंतर एतबहि हैत जे एतेक दिन शिक्षित ब्राह्मण सम्प्रदाय 'बहिर्भुक्तिक राजनीतिक (Politics of exclusion) खेल खेलाइत आयल छथि, मुदा आब हुनके मैथिली कें आर आगाँ ल' जेबाक लेल' अन्तर्भुक्तिक राजनीति (Politics of inclusion) के अपनाब' पड़त।

एहन जँ नहि होयत त की हैत ? सेहो विचारब आवश्यक अछि । तखन हैत ई-जे कि बहुलांश मे एखनहिं सत्य अछि (अर्थात जे परिवर्त्तन इतिमध्य भ' गेल अछि) जे अब्राह्मण मैथिलीभाषी परिवार मे मैथिली मात्र घरक भाषा, (Home Language) वा मायक भाषाक (mother's tongue) रूपे मे रहि जायत, सही अर्थ मे मातृभाषा (mother tongue) नहि रहत । फलत: अ-ब्राह्मण मैथिली भाषी परिवार मे एकटा 'प्रकार्यात्मक द्विवाचत्व' (Functional diglossia) कँ देखल जायत जतय हिन्दी भ' जाइछ 'H-code' अथवा सभटा उच्चतर तथा औपचारिक कर्मक भाषा और मैथिली रहि जायत मात्र' L-code' बनिकए जकर प्रयोग हैत माता-पिता तथा बूढ़ बुढ़ानुस सँ बातचीत मे, व्यक्तिगत पत्रक रचना मे, अपन गामघरक तथा निकट आत्मीय-जनसँ वार्तालाप आदि क्षेत्र मे । तेलुगु तथा तमिल मे अथवा आइ सँ साठि-सत्तरि वर्ष पूर्वक बंगला मे जे ग्रांथिक-व्यवहारिक वा साधु-चलितक जे diglossia देखल जाइत अछि, Functional diglossia अथवा प्रकार्यात्मक द्वित्व कें तकरहि विस्तारक रूप मे देखल जा सकैछ।

एहि सँ मैथिली धीरे-धीरे ब्राह्मणेत्तर जातिक भाषा-तूणीरक (linguistic repertoire) बाहरक तीर भ' जायत से संभव अछि और ईहो संभव अछि जे कतेको लोक अन्यभाषीक सामने मैथिली मे बाजब मे लज्जा तथा हीनमन्यताक अनुभव करए लगताह । एहन प्रक्रिया इतिमध्य शुरु भ' गेल अछि; तैं मैथिलीभाषी समाजक नेतृस्थानीय लोक कें ई सोचब आवश्यक अछिजे कोन तरहें एहि प्रवृत्ति कें रोकल जाय ।

एहि निबन्ध मे मैथिलीक भविष्यक विषय मे अपन सोच-विचार व्यक्त करैत काल हमर ध्यान अतीत सँ ल' कए वर्त्तमान दिस गेल अछि और की की काज कैला सँ मैथिली विलुप्त हेबा सँ बचि सकैत अछि सेहो हम कहलहुँ अछि । जँ ई सभ सदर्थक काज कएल गेल त' मैथिली कें निकट भविष्य मे तेहेन कोनो खतरा नहि होयत, चाहे सांविधानिक स्वीकृति भेटै वा नहि भेटै । कारण सांविधानिक स्वीकृति भेटलो उपरांत हमरा द्वारा उल्लिखित कतेको समस्या रहिये जायत । जे सभटा तरे-तर मैथिलीक जड़ि के कटैत रहत। वरन् कतेको दृष्टियें देखल जाय त' मैथिली के जा धरि सभटा स्वीकृति नहि भेटत तहिये धरि एहि भाषाक साहित्य मे गतिशीलता रहत सेहो संभव अछि । सिंधी भाषी कें जाहि तरहें सहज स्वीकृति भेटलन्हि आ तकरबाद सभटा सुविधा भेटलो पर आइ हुनका लोकनिक जे हाल भेलन्हि, तकरा सँ इयैह नीक जे आन्दोलन आ' संघर्ष जारी रहए आ' हम सभ नीक' सँ नीक रचना करैत रही।

प्रश्न ईहो छैक जे जँ मिथिलाक साहित्यिक, सांस्कृतिक राजनैतिक तथा सामाजिक क्षेत्रक नेता लोकनि ओ ठोस डेग नहि उठौलन्हि जे एखनहि उठैला सँ मैथिली जीयत आ आगाँ बढत त' ताहि अवस्था मे कत्ते दिन जीयत मैथिली? एहन परिस्थिति मे मैथिलीक भीतरक सजीवता भरिसक ओकरा एक शतक आर घीचि क' ल' जायत, मुदा ता धरि मैथिली मात्र गोष्ठी आ' वर्ग-विशेषक मातृभाषा बनिक' रहि जायत आ' विशुद्ध भाषा वैज्ञानिक दृष्टि सँ हिन्दी क बोली नहि होइतहुँ समाजभाषिक कारणे मैथिली हिन्दीक एकटा उपभाषे बनि कए रहि जायत ।

❑

तीन कविक तीन-तीन कविता

नारायणजी

उपज

फूजि गेल अछि केवाड़
फूजि गेल अछि
हमर चतुर्दिक रस्ता
लोक
हमरा धरि आब' लागल अछि
हमरा जयबा लेल
रहि नहि गेल अछि कतहु बन्हन
रौद जकाँ चतरि जयबा लेल
लोक
हमरा उत्सुकता सँ देख' लागल अछि
गहिकी नजरिसँ
लोककें देखयबा लेल
हम प्रस्तुत भ' रहल छी
प्रदर्शनीक भीड़मे, बाजार मे
भ' रहल छी सजग
सजगता जनमि रहल अछि
हमर सर्वांग पर
हम बिकाय लगलहुँ अछि
उत्सव लेल
मंत्र आ मखान जकाँ
बरख मे बेर-बेर
अगहनी आ भदैया धानजकाँ
हम भ' रहल छी उपज
उपज हैब हम
बिकयला पर

अंगना

सूर्य
घरमे नहि
अंगनामे उगल अछि
अंगनामे हम बहराइत छी
हमरा जाड़क सुखद रौद चाही
मुक्ति चाही
ओहि विपदासँ
कोठलीक कोन मे सजग अछि
पहुँचि नहि रहल अछि जत'
जन-आमंत्रण
एखनहि हम खयलहुँ अछि
हमरा भूख नहि अछि
कतहु जयबाक नहि अछि
मोन पड़ि अयलाह अछि पिता
जिनका हम कहियो नहि देखल
हाथक अवतरित अतीत-बल
पूर्वजलोकनि
अमती आ नागफेनी उजाड़ि कहियो
एकरा बनओलनि बासडीह
जग्गह रहबा जोगर
हम पेट भरें पटिया पर पड़ल छी
क' रहल छी सूर्य-स्नान
माझ अंगना मे
पत्नी बहारलनि अछि भोरे-भोर
नहि बहारला सँ जंगल भ' जायत अंगना
किछुओ नहि कयला सँ
अंगना
अंगना नहि रहत
ओ जग्गह
जाहि मे हम छी
चाहि रहल छी रह'
अंगना
एकटा आग्रह थिक
पत्नी जकरा रखने छथि नित्तह बहारि

जल

जल
शिखर नहि थिक
जल शिखरसँ बहराइत अछि
जल पाथरसँ बहराइत अछि
पाथर बनि गेल शिखर
तेआगैत अछि जल
चुमैत अछि धरती
धरतीक भरिपोख हवा
धरतीक प्रान-रेख
चुमैत जल
धरती कें दैत अछि अपन ऊष्मीय आवेश
घोरैत अछि
धरतीक करेज मे अकल्पित अनुराग
शिखर तेआगैत जल
अन्तर्युद्ध मे
जितैत अछि स्वयंसँ
जितैत अछि शिखरसँ
पबैत अछि ऐतिहासिक गति
शिखरक तेआगैत जल
शिखरकें विलीन नहि करैत अछि
शिखर तेआगैत जल
करैत नहि अछि शिखर कें अर्थशून्य
शिखर तेआगैत
अपन जीवनक ऐतिहासिक गतिमे
जल
बनबैत अछि शिखर कें एकटा अर्थपूर्ण इतिहास

❑

संजय कुन्दन

एकटा किशोरक प्रार्थना गीत

हे ईश्वर
ककर नाम ली
ककर नाम छोड़ि दी
सभ हमरा सँ ईर्ष्या करैत अछि
ई चन्द्रमा ई सुरुज
ई बहैत धार

हमरा डरबैये
हवाक पाँखि
हमरा दुख दइये
चारुकात पसरल आँखि

ओना सभ सँ बेसी
हमरा सत्य सँ डर लगैये
जे सभ दिन नव-नव रुप ध' क'
सोझाँ अबैये

हे ईश्वर
हमर सपना कें पयर दिय'
हमर थाकल मोन कें बाँहि
हमर प्रत्येक यात्रा मे उत्साह बनि क' रहू
इन्द्रधनुष बनि चमकू हमर उल्लास मे
हमर तरहत्थी पर
अपन दिव्य हाथ सँ लिखि दिय'-
आस्था

प्रेमक आरम्भ

ओ फरवरी मास छल
रौद क रंग
तखन एकदम पितरिया छलै
एक दिन लागल जेना
कान मे हवा किछु कहलक
आ पड़ा गेल
अकस्मात्
मोन मे असंख्य कनैलक फूल फुलायल
आ रोइयाँ दूबि जकाँ सिहरि उठल
ई प्रेम क आरम्भ छल
होइत छल
जे आकाशगंगा के नांघि आबी
होइत छल
जे पृथ्वी के कोरा मे उठा ली
आ अपन चुंबन सँ
भिजा दी ओकर पोर-पोर
ई प्रेम क आरम्भ छल
आ लगैत छल
जे सूर्य उतरि गेल हो
हमर प्रत्येक कोशिका मे
ई प्रेमक आरम्भ छल,
हमर शब्द
सुपक्क गोपी जकाँ
एकदम चिक्कन आ स्निग्ध
भ' गेल छल
लगैत छल
जे प्रत्येक नदी क बाँहि
प्रतीक्षारत अछि हमरे लेल
हमरे लेल
आकाश असंख्य तरेगनक आँखि सँ
ताकि रहल अछि हमरे दिसि
हमरे दिसि
ई प्रेमक आरम्भ छल
आ पहिल बेर
सपना आ जगरना
ओझरा गेल छल
एक दोसरा सँ
हम प्रेमक आरम्भ क' रहल छलहुँ
हम एकटा पूर्ण मनुष्य बनि रहल छलहुँ

ओकर स्वप्नमे जेबासँ पहिने

हमरा ओकर स्वप्नमे
जेबाक छल
तैं हम एकटा कनैल फूल सँ
कुरता रंगबा नेने रही
आ अड़हूल सँ धोती

हम इन्द्रधनुषकेँ
मफलरजकाँ
गर्दनिमे लपेट नेने रही
हमर कुरताक एकटा जेबी मे
हिमनदी छल
आ दोसरमे सिंगरहार
हम एकटा विशाल गाछसँ
एकटा बाँसुरी माँगि अनने रही
आ दूनू कनहा पर
सुग्गा बइसा नेने रही

हमरा ओकर स्वप्नमे जेबाक छल
जत' जोर-जोर सँ
टाइपराइटर खटखटाइत छलै
एकटा बाजार छलै
जत' आदमी के टाका मे
बदलल जाइत छलै
हम बाँसुरी बजबैत
ओकर स्वप्न मे प्रवेश कर'
चाहैत छलहुँ
हम एकटा उज्जर स्क्रीन पर
कोनो रंगीन दृश्यजकाँ
अकस्मात ओकर स्वप्नमे
चमकि जाय चाहैत छलहुँ

हम ओहि टाइपराइटरक
अनवरत प्रलापक खिलाफ
लिप्सासँ भरल ओहि बजारक खिलाफ
दूध मे मधुर जकाँ
ओकर स्वप्नमे
पसरि जाय चाहैत छलहुँ

❑

धीरेन्द्र कुमार झा

की करितियैक...

तेहन जोरक बिरड़ो उठलै
सभ किछु उड़ाक' ल' गेलै
खनेमे लगलै जेना
अन्हार भ' गेलै
की फुरायल तखन
एक मुट्ठी खढ़ पात
ओहि मे हमहू ध' देलियै..

बड़ी जोरक धधरा उठलै
चट्-चट् शब्द होब' लगलै
मसानक चिराइन गन्ध
चारुभर पसरि गेलै
की करितियैक तखन
एकटा काठी उठाक' ओहिमे
हमहू ध' देलियै..

तेहन जोरक रेत बहै छलै
कछेरकें कटने चल जाइ छलै
खने-खन धसना खसै छलै
एँड़ी सँ ढाहि क' तखन
एक चेखान माटि ओहिमे
हमहू ध' देलियै..

एकटा नमहर सन सूत छलै
की भेलै ओ तेना भ' क' ओझरा गेलै
कतेको चेष्टा कयलियै नइ सोझरेलै
अकच्छ भ' क' तखन
एकटा गीरह आओर ओहिमे
हमहू ध' देलियै..

फेर एकबेर

फेर एकबेर
देखै छिअइ एकबेर फेर
एना भेलइये
पुरिबा फेरसँ बताहजकाँ
बह' लगलैये

आ नाह केर पाल
कसि क' तना गेलइयै नदीमे
नाह झिकायल जा रहलैये
एकटा अज्ञात देस दिस
फेर एकबेर

एकबेर फेर
पुरजोर उमरिक' अयलैये नदी
पियासल तटिनीकें
कान्ह धरि भरि देलकैये

ढेहु सन-सन लहरि
तट पर माथ पटक' लगलैये

फेर एकबेर
आ फेर बहुत रासँ चिरइ ।
ने जानि कत'सँ
एक्के बेर चेहाक' उड़लैये ।

आ अपन शब्दसँ आकाशके
भरि देलिकैये

आ आकाश
जेना फेर एक बेर
रंग बदललकैये

देखियौक ने नीकजकाँ
एक नइ दू नइ
सात-सात टा रंग
क्षितिजक अइ छोरसँ
ओइ छोर धरि
फेर एकबेर देखै छिअइ
जे सौंसे घाटी
फूलक गंधसँ महमहा उठलैये

आ एकटा हरिण
एहि घाटीमे फेर
बताहजकाँ दौड़' लगलैये

देखै छिअइ हम
हमर बाड़ी एकबेर फेर
जंगल भ' गेलैये
हरियर कचोर जंगल
ई जंगली जड़ि नइ उपटलैये

एखनो हमर बाड़ीसँ
एकबेर फेर
देखै छिअइ फेर एकबेर
एना भेलैये

इन्द्रधनुष

हँ यौ, कने रौद चाही
गुनगुन सुरूजक रौद
आ झिसिआइत मद्धिम बरखा
हरियर-कचोर धरती
एकटा आकाशक विस्तार
इ सभटा चाही
तखन ने तखन ने
देख' मे अबै छै इन्द्रधनुष
सात-सात टा रंगबला
इन्द्रधनुष
प्रकृतिक अनुपम रचना
क्षितिजक अइ पारसँ
ओइ पार धरि जाइत
धरती आकाशक संधिस्थल
धरि तानल
स्वच्छ, सुन्दर सात गोट रंगबला
इन्द्रधनुष
बैगनी, नील आसमानी हरियर पीयर
हँ यौ, एखनो एखनो त'
ओहिना भरल अछि
अइ एक जोड़ी आँखिमे
नइ नइ
अइ दू जोड़ी आँखिमे
सात-सात टा रंगबला
स्वच्छ सुन्दर इन्द्रधनुष
बैगनी नील आसमानी
हरियर पीयर...
कने रौद चाही
गुनगुन सुरूजक रौद
आ झिसिआइत मद्धिम बरखा
हँ यौ...

❑

कथा-विमर्श

विमर्श लेल प्रेरित करैत कथा

धर्म एखन विमर्शक केन्द्र मे अछि। आचार-लोकाचार, धर्म, संस्कृति सभ पर नब दृष्टिसँ विचार भ' रहलए। एहि सन्दर्भ मे लोकाचार बनल धर्म कोना संस्कृति बनि जाइये तकर दिग्दर्शन लेल मिथिला समाजक अध्ययन-अवलोकन बहुत उपयोगी ओ आनन्ददायक भ' सकैए। संगहि जें मिथिला धर्म-कर्मक लेल अदौकाल सँ अपन फराक स्थान बनौने रहल अछि तैं सम्पूर्ण भारतीय समाजमे चलि रहल धर्म पर समकालीन विमर्श मे मिथिला के देखब-परेखब सेहो जरूरी छैक। भारतक सभ भाषाक साहित्य मे एखन ई विमर्श विभिन्न विधाक माध्यमे सोंझा अबैत रहैत अछि। मैथिली कथामे सेहो ई विमर्श प्रारम्भ भेल अछि। बानगी स्वरूप प्रस्तुत अछि-शिवशंकर श्रीनिवासक कथा 'सिनुरहार'। संगहि एहि कथा पर मोहन भारद्वाज अपन विमर्श सेहो प्रस्तुत कएलनि अछि।

श्रीनिवासक 'अदहन' नामसँ एक कथा-संग्रह प्रकाशित अछि। मिथिलाक सामाजिक यथार्थ रचनाकारक सदिच्छाक संग श्रीनिवासक कथा मे अबैत रहल अछि। समाजमे रचल-बसल शिवशंकर श्रीनिवासक कथामे मिथिलाक विभिन्न जाति-वर्ग अपन भाव-भंगिमा, सुख-दुखक संग उपस्थित भेटि सकैए। समाज आ ओकर संस्कृति सँ जुड़ल भाषाक प्रकृति आ विन्यास श्रीनिवासक कथा मे अपूर्व सुगन्धि भरैत अछि। एहि सभ बातकें श्रीनिवासक प्रस्तुत कथा 'सिनुरहार' पढ़ैत सेहो बूझल-जानल जा सकैत अछि।

मोहन भारद्वाज, मैथिली आलोचनाक क्षेत्र मे एक दृष्टिसम्पन्न आ सामर्थ्यवान जानल-मानल व्यक्तित्व छथि। कथा जहिना प्रियगर अछि, विमर्श तहिना रोचक। कथाक विभिन्न बिन्दु कें उठबैत प्रस्तुत विमर्श विचारोत्तेजक बनि गेल अछि। मैथिली साहित्यक समालोचना सम्बन्धी भारद्वाजक हेबनि मे प्रकाशित पोथी 'अनवरत' चर्चित-प्रशंसित भ' रहलए।

सन्धानक प्रत्येक अंक मे कोनो एक कथा वा कविताक संग ओहि पर विमर्श सेहो प्रस्तुत करबाक निआर अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे ओ कथा, कविता विमर्शक लेल आधार दैत हो, प्रेरित करैत हो।

कथा

शिवशंकर श्रीनिवास

सिनुरहार

रामभद्र झाक बेटाक उपनयन रहनि । हैदराबाद सँ गाम अबै जाइ गेल छलाह । कल्याणी सेहो आयल छलि । कल्याणी रामभद्र झाक एकमात्र बेटी, तकरा सँ दस बरखक छोट बेटा रहनि, तकरे उपनयन छलै ।

कल्याणी आयल अछि, ई चर्चा पूरा टोलमे रहै । तकर कारण छलै, कारण ई जे ब्राह्मणक ई बेटी, आ से विधवा भेलाक बाद दोसर विवाह कयलक । ई गाम आएलए! सेहो उपनयन मे? यैह बात लोकके चकित कयने छल । टोलक ओहो ब्राह्मणेत्तर वर्ग चकित छल जकरा सभ मे विधवा विवाह होइत छैक ! नाना तरहक गप्प होअय। बेसी चर्चा स्त्रीगण वर्गादि मे रहै । विभिन्न तरहक तर्क-वितर्क संङ बेसी खोद-वेद ओकर व'रक होइ । केओ बजै–"व'र बड़ नीक छै । बड़ हँसमुख।"

दोसर पुछै–"कोन जातिक छी?"

तइ पर तेसर कहै–"जे थिक, जखन विधवे सँ विवाह कयलकए, तखन जे रहय।

"कोन नोकरी करै छै ?"

"बैक मे छै ।"

"तखन त' बढ़ियाँ छै ।"

"जे होइ, कल्याणी सुखी अवश्य रहत ।" एहि रूपे। समाजमे विभिन्न तरहक चर्चा-वर्चा होइ ।

कल्याणीक एहन वियाह कोनो अनसूनल घटना नहि रहय, मुदा एहि परोपट्टा लेल नव बात अवश्य रहै ।

ई वियाह गाम मे नहि, हैदराबाद मे भेल रहै । रामभद्र ओतहि नोकरी करै छथि, सपरिवार रहै छथि ।

कल्याणीक पहिल वियाह पाँच बर्ख पूर्वे भेल रहै, से मुदा गामे मे भेल रहै । बहुत ठाठ-बाट सँ । नीक वर-घर रहै, मुदा भोग नहि भेलै । चारिये मासक बाद रेल-दुर्घटना मे एकर व'र पड़ि गेलथिन। ठामहि मृत्यु भ' गेल रहनि । रामभद्र सपरिवार गामे रहथि । समाचार अबिते कोहराम मचि गेल रहै । सम्पूर्ण परिवार करुणा मे डूबि गेल । बूझू गामे कानि उठल छल । विचित्र स्थिति छल ओ !

रामभद्र झा आर कथूक लेल कल्याणी के एत' रह देब आवश्यक नहि बुझलनि। तीन दिनक बांदे हैदराबाद चल जाइ गेलाह । जकर समाज मे खूब खिधान्स भेल छलैक ।

हैदराबाद मे किछु दिनक बाद सँ कल्याणीक माय एहन वातावरण बनब' लगलीह, जे कल्याणी ई बूझ' जे ओकर वियाहे नहि भेल छलै । जे भेलै से भेलै । ओ जेना एकटा सपना रहै । मुदा कल्याणी सोझ नहि भ' पाबय, ओ बहुत दिन तक कठुआयले रहलि । से रहितो ओ हैदराबाद नगर छलै, ओहिठामक अपन गतिविधि छलै । एकटा फूट वातवरण छलै जे कल्याणी के क्रमशः स्फूर्ति दैत गेलै । धीरे-धीरें ओ टनमनाय लागल ।

ओहि दिन मे ई बी० ए० मे पढ़ै छलि । कालेज जाइ अबै छलि । एक दिन एकर वर्ग संगी प्रीता एकरा अपन जेठ भाइ दिस इंगित कयलकै । पहिने तँ कल्याणी चौंकलि, मुदा प्रीता एकरा धीरे-धीरे बुझेलकै । संस्कार तोड़ि बहरेबाक उत्साह देलकै । प्रीताक परिवार उत्तर प्रदेशक छलै । पूर्व मे ओ सभ ब्राह्मणे छल मुदा आब ओकरा सभ लेल जातिक बन्धन नहि रहि गेल रहै । एहन पसिन्नक वियाह लेल पूरा परिवारक सहमति रहै । बात बढ़लै । कल्याणी क माय बहुत आनन्द मे गप्प के लेलन्हि । ओ त' कल्याणीक पुनः वियाह करब' चाहिते छलीह । आगू अयलीह। उत्साहक वातावरण सुगन्धित भेल । कल्याणीक वियाह भ' गेलै ।

गाम मे लगले ई सूचना आबि गेलै । एहि गामक बहुत गोटय रहै छै ओम्हर। ओहि दिन मे कएक गोटय अबै जाइ गेल रहै । सैह सभ बजै गेल । चट द' पूरा गाम मे बात पसरि गेलै । किछु दिन तक त' बड़ चर्चा रहलै, से गामे मे नहि, परोपट्टा मे, किन्तु धीरे-धीरे सभटा शान्त होब' लगलै । किछु लोक अन्ट-सन्टो बजलै, मुदा नीकें रूप मे लेनिहार बेसी गोटय रहय । वैह चर्चा फेर सँ नव भ' गेलै जखन रामभद्र झा सपरिवार बेटाक उपनयन कराब' गाम अयलाह ।

हैदराबाद मे जखन रामभद्र बेटाक उपनयनक दिन निश्चित कयलनि तँ शुरूहे मे ई बात उठलै जे कल्याणीकें कहल जाय वा नहि? आश्चर्यक बात ई जे मायेक इच्छा रहनि जे कल्याणी नहि जाय । ओ भीतरे-भीतरे गामक लोक सँ डराइ छलीह। मन मे होइ छलनि बेटाक उपनयन मे लोक बारि नहि दैनि। विधि-व्यवहार मे लोकक प्रयोजन छलै फेर भोज-भात मे कम सँ कम, अठ बभनो लेल तँ लोक चाही । अपन संशय पतिक समक्ष रखलन्हि । रामभद्र पत्नीक गप्प सँ सहमत नहि भेलाह । ओ तर्क दैत कहलथिन– "लोक के बारबाक रहतै त' कल्याणी के नहि ल' जेबै तइयो बारत। जतेक डेरायब ततेक धमकायत ।" किन्तु पत्नीक मन नहि मानलकनि । रामभद्र झा चुप्पी लगा लेलनि ।

समय लगीच अयलै । एक दिन भोर मे रामभद्र बैसि क' अखबार पढ़ै छलाह। पत्नी लुसफुसाइत सन लग मे आबि क' बैसि गेलथिन । रामभद्र बूझि गेलाह जे ओ की कहथिन आ कहबो सैह कयलथिन-"आइ जे कार्यालय जाइ, से कल्याणीक डेरे पर द' घुरब । कहबै बौआक उपनयन द' आ चलबाक लेल कहबै। कोना छोड़ि देबै? सन्तान थिक । सहोदर त' ओकरो छियै, सेहो एकेटा । चलत, जे हेतै से...।' कहैत

आँखि डबडबा गेलनि, बेसी नहि बाजि सकलीह । साँझ मे जखन कार्यालय सँ घुरलाह तँ पत्नी पुछलथिन-''की कहलक? गेल छलिये ने?'' रामभद्र झा प्रसन्न मुद्रा मे बजलाह-''की कहू गप्प सुनिते तँ कल्याणी जेना नाच' लागलि। विभिन्न तरहक कार्यक्रम बनब' लागलि ।''

''आ ओ !'' पत्नी डराइत जेना पुछलथिन ।

''के ?'' रामभद्र झा प्रश्न कयलनि ।

''जमाय बाबू?''

''पूछू ने, हुनकर मुँह पर तँ खास प्रकारक आनन्द बुझाएल । ओ तँ बूझू रत्न छथि ।'' रामभद्र झा कहैत पत्नी दिस तकलनि । देखलनि जे हुनक मुँहक मुद्रा एकाएक बदलि गेलनि अछि । बात गमलनि जे हिनकर पत्नी जमायक जायबा सँ प्रसन्न नहि भेलीह । ओ मात्र अपन बेटी के ल' जाय चाहै छथि, किन्तु किछु बजलाह नहि।

सैह जखन रामभद्र झा सलोकहि गाम आयलाह तँ लोक देखलक जे कल्याणी आ ओकर व'र दूनू आयल छै । देखलक तखन गुम्म किएक रहत? चर्चा पकड़ि लेलकै । नाना तरहक गप्प-शप्प होब' लगलै, मुदा से सभटा भीतरे-भीतर। रामभद्र कें केओ असहयोगक बात नहि कहलकनि । वारा-बारीक तँ बाते नहि। सभ काज लोकक सहभागिता मे चल' लगलै । सामाजिक सौमनस्य कें पबितो कल्याणीक माय ई अनुभव करथि जे जखन केओ माउग सँ पुरुष धरि अबैए तँ ओकरा सभक आँखि बेसीकाल कल्याणीये के हेरैत रहै छै । ओकरा व'र दिस तकैत रहै छै । ई अनुभव करैत ओ भीतरे-भीतर लोक सभ सँ डराथि, कच्छमच्छाथि । सक्क रहितनि, जँ कोनो जादू-टोना जनैत रहितथि तँ कल्याणी दूनू बेकत्ती के अदृश्य बना क' रखितथि जे ई लोकनि सभ के देखितै आ एकरा लोकनिके केओ नहि । मुदा से तँ सम्भव नहि छलनि । सक्कहीन जकाँ तलमलाय लगै छलीह । कीदन-कहाँदन सोचैत डराइत रहै छलीह ।

कल्याणीक लेल कोनो बात नहि । ओ एकदम सहज छलि । ओकर व'र मस्त भेल आनन्द लै छलाह । लोकसभ अबै छलै खास क'क' धी-जनी सभ, नाना तरहक हास्य-विनोदक प्रसंङ चलै छलै । कल्याणी खिलखिला उठै छलि । बेटीक हँसीक ऊँच स्वर सँ माय चौंकि उठै छलीह । हुनकर माथ मे जेना हन्टर पर' लगै छलनि। मन मे सौचै छलीह-''ककरो एकर हँसब अन्सोहाँत लगतै आ कि कोनो अरङा लगौनाइ प्रारम्भ क' देत । ओरिआ क' रहत, सञ्च-मञ्च भ' क' रहत से नहि । फेर हैदराबाद जखन जायत तँ जेना रहबाक छैक से रहत ।'' बाद मे मन खिसिआय लगलनि । आ' एक दिन नहि रहल भेलनि, कहलथिन,''ओरिआ क' रहब' से नहि । बिक्ख पीबि क' पुरबा मे सुतै छह। ई गाम छियै, से बुझहक । कखन लोक की बात उठा देत तकरो सुरता राखह ।'' मायक गप्प सुनि कल्याणी अकचका उठलि । हुनक नव रूप देखि-सोचि अपस्यात भ' गेल । उत्साह माँड़ जकाँ सराय लगलैक । एकदम सँ सुस्त भ" गेल । एहि तरहे समय बीतैत गेलै । उपनयनक कार्य प्रारम्भ भेल ।

उद्योग भेलै । मड़बा बान्हल गेलै। माटि-मङल भेलै । मड़बा लेबल-मूनल गेलै । नीपल ढौरल गेलै । लिखल-पढ़ल गेलै ।

उपनयन सँ पूर्व दिन, ओहि दिन कुमरम रहै । ढोल-पिपही बाजि रहल छलै, गोसाओनक पूजा-अर्चनाक तैयारी भ' रहल छलै । आय-माय लोकनि मङल-गीत गाबि रहल छलीह । उत्सवक गमगमी जे होइ छै ओ पसरि चुकल छलै । सम्पूर्ण वातावरण संगीतमय भ' गेल छलै ।

इम्हर आब सिनुरहारक तैयारी भ' रहल छलैक । अयहब लोकनि कें तेल सिनुर पड़तनि । खोइछ भरल जयतनि आ हाथमे देल जयतनि खीर-पूरी । अयहब लोकनि एहि मे सम्मिलित भ' क' अपन सोहागक मङल बुझैत छथि, तेँ सभ अपन लगीच सम्बन्धी कें एहि हेतु हकारैत अछि । से बरुआक माय देयाद मे सभके, जे अपन पट्टीक रहनि, कहि अयलथिन । केओ कनियाँ-मनियाँ, धी जनी छुटथि नहि । किनको माख किए हेतनि ? पाँचटा तँ अयहब अनिवार्य छै, सभके कहथिन तँ सतरह । कहि अयलथिन सभके । कहलथिन तँ सभ के, मुदा ओहि सभ जोड़ मे कल्याणी नहि छलि । ओकरा नहि कहलथिन ।

सिनुरहारक ओरिआओन गोसाओनिक घरक आगू मे भ' रहल छलै । वरुआक माय विधि ओरिआब' मे मग्न छलीह । कल्याणी पुबरिया घरक दक्षिण बरिया हन्ना मे छलि । गोसाओनिक घर पछबरिया घरक ठीक दक्षिण भाग लागल छलै । कल्याणी खिड़की सामने बैसल छलि । ओहिठाम सँ सभटा देखै-सुनै छलि । कनियाँ-मनियाँ, धी-जनी सिनुरहारक लेल पाँती बना ठाढ़ भ' रहल छलीह । हास्य विनोद चलि रहल छलै, आ ताहि सँ छुटै छल अनुराग मे घोरल हँसीक फुहारा जे ककरो मनके सरस बना देबा मे पर्याप्त छल ।

सभटा देखैत-सुनैत कल्याणीक देह बेर-बेर सिहरि उठै । ओ कहियो कल्पनो ने कयने छलि जे अपने भाइक उपनयनक सिनुरहार मे ओ नहि रहत । उठिक' बड़का ऐनाक सोझा ठाढ़ि भेल । आन दिन अपने रूप सँ अपने लजा जाइत छलि । वैह रूप आइ अपरिचित बुझेलै । मन मे भेलै-''किए.आयल एत'? कोन आनन्द लेबाक लेल ?''

माय पर ध्यान केन्द्रित भेलै । एकाएक मन पड़लथिन पितामही। हुनकर स्नेह सँ बेसी एकरा हुनकर नेम-टेम मन पड़ै छै । ई सभ डरायल रहै छलि, एकर माय पितिआइन सेहो हुनकर नेम टेम सँ डरायल रहै छलीह ! की छुआ जयतनि ? कथी पर बिगड़ि जयथिन्ह! एकर पितामही कुमारि आ अयहब सँ छूति माने छलीह । विधवा आ पुरुषक छुअल खाइ छलीह । पुरुष मे विधुरो वर्जित नहि छल ।

एकरा मन पड़ै छै जखन ई बच्चा रहय, हैदराबाद सँ गाम आबै-जाय आ दोसराक आङन बुलैले जाय तँ कोनो बात पर केओ कनफुसकी करय । बच्चा रहय ई तइयो बुझाय जे ओहि कनफुसकी मे एकरो लक्ष्य कयल जा रहलैए । बाद मे बुझलकै जे ओ सभ एकरा पितामही द' बजै छै । ओहि बजनिहारि मे अयहब-सुहबे होथि। ओहि दिन मे तँ ई बेसी बात नहि बुझै मुदा जखन चेतन भेल तँ बुझलकै जे एकर समाज

मे विधवा के लोक अलच्छ बुझै छै, तें सोहागिन अधिककाल अपना मे विधवा लोकनिक कुचेष्टा करै'ए । ओकर नजरि के खराब मानैए । कोनो पुरुष कोनो पुरूष के एना नहि बुझैए, ने कोनो स्त्रीगणे विधुर के एना बुझैए । आइ कल्याणी मने-मन एकटा शिकारीक खिस्साक बाझ पक्षी सँ स्त्रीगण क तुलना करैए । खिस्सा एना छै जे एकटा शिकारी रहय, ओ एकटा बाझ पक्षी पोसि क' रखने छल । ओ बाझ शिकारी लेल कोनो खाइबला पक्षीकेँ मारि अनै छल । शिकारी अपने बाद मे घर मे निश्चिंत भेल सूतल रहै छल तइयो ओ बाझ पक्षी बिना उकसौनहि कोनो पक्षी के मारि ल' अनै छलै । मन मे कयलक जे ओ शिकारी पुरुष थिक आ स्त्रीगण थिक ओ बाझ पक्षी। स्त्रीगणे स्त्रीगणक शिकार करैत अछि । छटपटा उठलै मन । भेलै जेना सम्पूर्ण देह मे केओ आगि लेसि देने होइ!

सैह, माय ओकरा नहिएँ कहलकै ? नहि कह' । एहि सँ की होइवला छै ? मुदा एकरे भाइक उपनयन आ एकरे नहि कहलकै ? कोनो आन दुआरे नहि, मुदा कनियाँ मनियाँ धी-जनी सङ सम्मिलित भ' क' जुड़ेबाक जे आनन्द छै, ओ एकरा सिहबैत तँ छलैके । सिहबैते नहि छलै आब एकरा कोनादन लागि रहल छलै। तावत एकर नजरि गेलै पति दिस । ओहो ओहि सिनुरहार-प्रकरण केँ देखि रहल छलाह। एकरा मन मे भेलै जे निश्चित एकर पति अयहबक पाँती मे एकरो तकैत होयथिन। भीतरे-भीतरे ग्लानिक बोध भेलै । एकर पति की सोचैत होयथिन ! तखने देखलक मायके अपना दिसि चल अबैत । धक् सँ कोढ़ क' उठलै । सम्पूर्ण देह एक्केबेर हल्लुका गेलै । भेलै जेना ओ एकदम सँ एकटा शिशु भ' गेल होअय, मुदा माय एकरा दिस नहि अयलै । ओ ओलतीक कात मे अटकि गेलै । कल्याणी उठिक' केबार लग आयल, देखलक पिता केँ ठाढ़ । ई ओहीठाम अढ़ मे ठाढ़ि भ' गेल।

''की कहै छी?'' माय केँ पुछैत सुनलक ।

एकर पिता कहलथिन-''सिनुरहार मे कल्याणी के नहि देखै छियै ।''

''हे भगवान, अहाँके कहियो बुद्धि नहि हैत ।'' कने जोर सँ पत्नी तमसाइत कहलथिन

''से किए?'' पतियो उच्च स्वर मे प्रश्न कयलथिन ।

'' ओ हमर बेटी छी । कर्म फुटलै तँ जोड़ि देलियै । धर्म-अधर्मक कोनो विचार नहि कयलियै ।'' कहैत ओ पति पर खिसिआइत बजलीह-''ई अयहबक पूजा छियै भगवतीक पूजा ।''

''से कल्याणी नहि छै ? पति कने डटलथिन ।

पत्नीक गला फूटि उठलनि-बेसी हरहर खटखट नहि करू । ओकरा दुआरे हम अपन बेटाक अमंगल नहि होब' देब । कहैत पत्नी विदा भ' गेलथिन । रामभद्र झा थकमका गेलाह ।

गप्प सँ पूरा आङन स्तब्ध भ' गेल । बहुत गोटयके कल्याणीक मायक बात नीक नहि लगलैक, किन्तु केओ घुनघुनायल सँ बेशी नहि मुदा कल्याणी तँ अशान्त भ' गेल । माय ओकरा अमंगल बुझै छै । माथ लगलै जेना फाटि जयतैक । की करय ओ? नहि ओकरा आब एहि ठाम नहि रहक चाही । मने-मन निश्चय कयलक।

किन्तु ओ निश्चय, निश्चय नहि रहलै । कोनो डेग बढ़ाब' सँ पहिने गोसाओनिक घरक ओसरा पर बैसल भाइ पर नजरि गेलै । ओतहि सँ ओकर मुँह-कान केँ निहारलक। ओकर बचपन सँ ल' क' एखन तकक बात सभ मन पड़लै । सहोदराक प्रेम कोढ़ केँ जेना डोला देलकै । मन भेलै जे पिताक छाती मे नुका क' खूब कानय । आँखिसँ नोर टघरि अयलै । मुदा कोना कानत ? भाइक शुभ दिन मे कोना कानत ? आँचर सँ नोर पोछि लेलक ।

माय दिस तकना गेलै । ओ सिनुरहारक विधि क' रहल छलीह । ओ एक बेर कोनो वस्तु रखबाक लेल इम्हर घुमलीह तँ कल्याणी देखलक जे हुनको चेहरा पर शान्ति नहि छन्हि । कल्याणी देखलक जे ओ पुन: झुकि क' सिनुर उठौलनि । अयहब लोकनि क माथ मे तेल देलाक बाद आब सिनुर लगौथिन। कल्याणी घुरि ऐनाक समक्ष आएल, सिंथुथ मे भरल सिनुरक डगडगीक सिरी जेना मन मे उत्साह भरि देलकै।

सोचलक ''नहि जायत । भाइक उपनयन छोड़ि कोना जायत?'' भाइक निर्दुष्ट निश्छल मुखाकृति देखि ओकर मन स्नेह सँ भरि गेलै । मनेमन सोचलक-माय एकरा अमंगल बुझै छै । पिता से कहाँ बुझै छथिन !आ भाइ ? ओ एखन की सोचतै। बच्चा अछि । ओ एकर सहोदर छियै । ई नहि जायत । मुदा एना कोना रहत ? सोचैत कल्याणी कनेकाल सिनुरहारक प्रकरण दिस तकैत रहल । माय अयहब लोकनि केँ सिनुर लगा रहल छलथिन । मन मे भेलै जे सिनुरहारक विधि तँ कोनो अयहबे करतै ने ! जेना एकाएक बहुत सबल भ' उठलि । घर सँ आङन आयल आ बढ़ि गेल सिनुरहार दिस। ओहिठाम राखल खीर-पूरीक थाड़ी उठा लेलक । आगू बढ़ि पाँतिक शुरूहे मे ठाढ़ि ओहि आङनक बड़की भौजीक हाथ क़े खीर-पूरी देलक । भौजी बहुत आह्लादक संग खीर-पूरी लेलनि तखनहि कल्याणीक पितिऔत बहिन ललिता ओकरा पकड़ि पाँती मे ठाढ़ क' ओकरा मायक हाथ सँ सिनुर ल' माथ मे लगा देलकै आ पुन: पाँती मे ठाढ़ि भ' गेल । माय अकचका गेलीह । लोको अकचकायल मुदा पाँती मे ठाढ़ि कल्याणीक लौकैत रूप मन मे आह्लाद भरि देलकै । सभ के बूझू नीक लगलै। कल्याणी क माय अकचकाए उनटि क' पाछू तकलनि तँ देखलनि जे हुनक पति बेटी के देखि विहुँसि रहलाहे । कल्याणीक नजरि सेहो उठलै तँ देखलक जे ओकर पतिक मुँह पर अनुराग उभरि अयलनि अछि । ओ प्रमुदित ओकरा देखि रहलथिन अछि ।

□



विमर्श

मोहन भारद्वाज

कथा कहबाक अर्थ दुर्गञ्जन नहि होइत अछि

किछु दिन पूर्व 'आरम्भ' मे धूमकेतुक कथा 'छठि परमेसरी'क समीक्षा करैत हरेकृष्ण झा लिखने रहथि जे ओ कथा "वर्तमान जीवन-सन्दर्भ मे धर्मक स्थितिपर गंभीरता सँ विमर्श करबाक लेल पाठक केँ उसकेबा-उत्तेजित करबा मे सफल होइत अछि।" प्रसन्नताक विषय अछि जे धूमकेतुए नहि, मैथिलीक अन्य कथाकार सभ सेहो एहि दिशा मे सक्रिय छथि। ई स्वाभाविके अछि। धर्म एखन राष्ट्रीय आ कि विश्वस्तर पर विचारक केन्द्रीय बिन्दु बनि गेल अछि। ई बात नहि छैक जे धर्मक अर्थ, ओकर स्वरूप, सत्ताधारी द्वारा ओकर उपयोग आदि विषय पर पहिने विचार नहि भेल छल, किन्तु परिवर्त्तित परिवेश मे धर्मक बहुरूपी मुद्रा एकबेर फेर वाद-विवादक केन्द्रीयता मे आबि गेल अछि। मैथिलीक कथाकार एहि सार्वजनिक समस्या सँ टकरा रहल छथि से नीक बात थिक। खुशीक विषय थिक।

शिवशंकर श्रीनिवासक कथा 'सिनुरहार' एहि साक्षात्कारक टटका उदाहरण थिक। ई कथा धर्मपर टिप्पणी करैत अछि। ओना, एहि कथा मे किछु आनो समस्याक सम्बन्ध मे कनफुसकी अछि, मुदा एकर मुख्य लक्ष्य अछि धार्मिक आस्थाक विवेकीकरण। कल्याणीक भाइक उपनयन छैक। कुमरमक दिन सिनुरहार भऽ रहल अछि। टोल-परोसक अहिबाती सभ उपस्थित छथि। मुदा, कल्याणीक लेल ओतय जायब वर्जित अछि। कारण, ओ बिधवा अछि। ओकर दोसर बिआहक जतऽ-जे मोजर होइक, धार्मिक अनुष्ठान मे ओकर सहभागिता संभव नहि छैक। कल्याणीक माय धर्म-विरुद्ध कार्य नहि कऽ सकैत छथि। डर छनि जे बेटाक अमंगल ने भऽ जाय! तेँ कल्याणी केँ सिनुरहारक विधि-व्यवहार सँ फराके रखने छथि। कल्याणी केँ मुदा ई स्थिति अनसोहाँत लगैत छैक। घुटन होइत छैक। ग्लानि बुझाइत छैक। ओकर प्रतिहिंसा-भाव जागि उठैत छैक। पिताक अनुकूल प्रतिक्रिया सँ ओकरा ताकति भेटैत छैक। भाइक ममता ओकरा भीतर पजरैत आगि केँ धुधुआ दैत छैक। ओ सक्रिय होइत अछि। सिनुरहारक विधि-व्यवहार लग जाइत अछि। कतहु-कोनो रोक-टोक नहि होइत छैक। एतेक धरि जे ओकर संगतुरिया बहिन ललिता ओकर समर्थन आ सहयोग सेहो करैत छैक। सभ चकित अछि, मुदा प्रसन्न मुद्रा मे। खुशीक भाव साफ देखार छैक-उल्लास आ उत्साहक सीमा धरि।

जेना हम कहलहुँ, ई कथा धर्म-भावना पर टिप्पणी थिक। रामभद्र झाक बेटी कल्याणी बिधवा भऽ गेलि। माय चाहैत छलीह जे ओकर विवाह भऽ जाय, भइयो

गेलैक। हुनका बड़ खुशी भेलनि। बेटीक स्थिति आ भविष्यक प्रति आश्वस्त भेलीह। मुदा, बेटाक उपनयनक अवसरपर ओ कल्याणीकेँ सिनुरहारक नेम-टेम मे बाधक नहि बनबऽ चाहैत छलीह। से केवल एहि लेल नहि जे हुनका समाजक डर छलनि। ओना, कल्याणीकेँ ओ सैह कहलथिन- "ओरिया कऽ रहबऽ से नहि। बिक्ख पीबि कऽ पुरबा मे सूतै छह। ई गाम छियै, से बुझहक।" कल्याणीक माय बिधवा विवाह केँ बिक्ख पिनाइ मानैत छथि। गामक लोकक आधुनिकता-बोध हैदराबादक लोकक परतर नहि कऽ सकैत अछि, तेँ ओ सभ बिधवा विवाह के सहज भावे अङेजि सकत ताहि मे हुनका सन्देह छनि। मुदा, ध्यान सँ देखला पर पता चलैत अछि जे ई सभ हुनक बहाना छलनि। ओ कल्याणी केँ नहि, अपनो केँ परतारि रहल छलीह। बात तखन खुजैत अछि जखन रामभद्र झा हुनका टोकैत छथिन। असली बात तखन ओ बजैत छथि-"ओ हमर बेटी छी। कर्म फुटलै तेँ जोड़ि देलियै। धर्म-अधर्मक कोनो विचार नहि कयलियै। ...ई अयहबक पूजा छियै, भगवतीक पूजा।...बेसी हर-हर खट-खट नहि करू। ओकरा दुआरे हम अपन बेटाक अमंगल नहि होबऽ देब।" स्पष्ट अछि जे बिधवा-विवाह करायबो हुनका लेल अधार्मिक काज छलनि, मुदा से ओ कयलनि। उपनयनक अवसर पर होइत सिनुरहारक विधि-विधान मे कोनो प्रकारक अधार्मिक हस्तक्षेप हुनका स्वीकार नहि छनि। सिनुरहार भगवतीक पूजा थिक। ओहि मे शुद्धता परमावश्यक अछि, अन्यथा अमंगल भऽ सकैत अछि। अमंगल आ सेहो बेटाक। ई काज ओ कथमपि नहि करतीह। नहिए कयलनि। किन्तु, कल्याणीक इच्छा-शक्ति जेना ओकर दोसर विवाह करा देलकैक तहिना ओकरा सिनुरहार मे सम्मिलित होयबाक लेल सेहो बाध्य कऽ देलकैक। कल्याणीक अदम्य भावना लग ओकर मायक धार्मिकता दबि गेलैक। हारि मानि लेलकैक।

यद्यपि एहि बिन्दु पर कथा बहुत स्पष्ट नहि अछि जे भाइक उपनयन मे रहबाक तथा सिनुरहारक क्रियाकलाप मे शामिल होयबाक निर्णय कल्याणी भावावेश मे कयलक अथवा चेतनासम्पन्न दृष्टिकोणक कारणें, सुविचारित स्तरपर। भाइक प्रति ओकर स्नेह आ तकर आवेग नुकायल नहि अछि, किन्तु इहो सत्य जे ओ भाइक मंगल-अमंगलक बातो सोचैत अछि। स्थिति पर एहू दृष्टिकोण सँ ओ विचार करैत अछि आ, लगैत अछि, ओकर निर्णयकेँ तार्किक चिन्तनक परिणामे मानब उचित होयत।

एहिठाम हम धर्मक सम्बन्ध मे टालस्टायक कथनकेँ दोहराबऽ चाहैत छी। टालस्टाय 'एसेज एण्ड लेटर्स' नामक अपन पोथी मे धर्मक तीन कोटि कयने छथि। पहिल कोटि मे अबैत अछि धर्मक मूलतत्व (Essentials of Religion)। जेना, सत्य बाजब, चोरी नहि करब, गरीबक सहायता करब आदि। दोसर कोटि मे अछि धर्म-दर्शन (Philosophy of Religion)। जन्म-मृत्यु पर विचार करब, पुनर्जन्मक मादे सोचब सनक विषय एहि श्रेणीक प्रतिपाद्य थिक। तेसर कोटि अछि धार्मिक लोकाचारक (Rituals of Religions)। एहि मे व्रत-उपवास, पावनि-तिहार आदि रीति-रेवाज क स्थान अछि। धर्मक प्रथम कोटि विवाद सँ मुक्त अछि। सभ ठामक लोक चाहैत अछि जे सत्य बाजल जाय, मनुष्य प्रेम सँ रहय आदि-आदि। द्वितीय कोटि मे किछु मतान्तर अछि। पुनर्जन्म मे केओ विश्वास करैत छथि, केओ नहि। किन्तु तृतीय कोटि तेँ विवादक पेटारे थिक। यैह ओ बिन्दु थिक जतऽ धर्म आ लोकाचार मे भेद करब

कठिन भऽ जाइत अछि । लोकाचार पर धर्मक आवरण चढ़ि जाइत अछि आ तकरा प्रतिष्ठाक प्रश्न बना लेल जाइत अछि । अहंभाव झगड़ा-फसादक जन्म दैत अछि।

शिवशंकर श्रीनिवास धर्मक तेसर रूप कें कथानकक आधार बनौलनि अछि । उपनयनक अवसर पर होबऽवला सिनुरहार एकटा लोकाचार थिक । सेहो सभठाम नहि होइत अछि । मिथिलाक सभ जातिक लोक, अथवा एकहि जातिक सभलोक एहि लोकाचार सँ परिचित नहि अछि । मुदा से भिन्न बात थिक । मुख्य बात ई थिक जे ई लोकाचार मिथिलाक थिक आ तकरा धार्मिक पवित्रताक आँखिए देखल जाइत अछि । कल्याणीक माय सिनुरहारक विधि-विधान कें पवित्र-पावन रूप मे सम्पन्न करऽ चाहैत छथि । हुनक धार्मिक संस्कार पुत्र-स्नेहक अतिरेक मे जोर मारैत छनि आ ओ बिसरि जाइत छथि बेटीक ममता, जमायक मर्यादा आ मानवीय शालीनता। किन्तु हुनक अन्धविश्वासजन्य कार्यकलाप कें कल्याणी अपन विवेकसम्मत आचरण सँ संशोधित करैत अछि। मायक धार्मिक जड़ता बेटीक अग्रगामी चेतनाक उष्मामे तबिकऽ गतिशील होइत अछि आ ओ भाइएक नहि, मनुष्य जातिक मंगलक बाट देखबैत अछि । एहि तरहें श्रीनिवास धर्मक उपरिलिखित तृतीय कोटिक आचरण कें कथानक बनबैत छथि, मुदा ओकर कथ्य होइत अछि द्वितीय आ कि प्रथम कोटिक सोच-विचार। धर्मक दार्शनिक पक्षपर अथवा ओकर मूलतत्व पर ध्यान देब आजुक सन्दर्भ मे नितान्त आवश्यक अछि । सिनुरहार एही आवश्यकताक रूपांकन थिक।

एहि प्रसंग मे एकटा दोसरो तथ्य दिस ध्यान जाइत अछि । मिथिला, अथवा सम्पूर्ण भारतेक, लोक धर्मप्राण होइत अछि । कहि सकैत छी जे भारत धर्म आ पूजाक देश थिक । सभ काज मे धर्म कें घोंसिआयब जिनका जाहि कारणें आवश्यक लागल होइन, आजुक लोक लेल ई स्थिति बड़ जनमारा भऽ गेल अछि । पावनि-तिहार कें उल्लास-उमंगक नहि, धर्म-कर्मक दृष्टिसँ देखब एकटा एहन भावना थिक जे ओहि समाजक मानसिकता कें परिलक्षित करैत अछि । उपनयन अथवा ओहि अवसर पर होब'बला सिनुरहार एकटा एहन माध्यम थिक जाहि द्वारा कथाकार सामाजिक उल्लास-उमंगक कार्य कें ओकर मूलरूप मे देखबाक आग्रह करैत छथि ।

कथ्यक स्तरपर एहि कथाक प्रासंगिकता तऽ उल्लेखनीय अछिए, दोसरो दृष्टिकोण सँ ई कथा महत्वपूर्ण अछि । मैथिली कथाक अनुवाद करैत काल अथवा भारतीय कथा-साहित्यक तुलनात्मक अध्ययनक समय मे हमसभ मैथिली कथाक अस्मिताक खोज कैरत छी । अनूदित कथा मे भाषाक परिचय-पत्र बेकार भऽ जाइत अछि । तखन प्रश्न उठैत अछि जे की मैथिली कथा स्थानीय सन्दर्भक अस्मिताकें अक्षुण्ण रखैत सार्वजनीन समस्याक निदानक प्रयास करैत अछि ? हमरा जनैत मैथिलीक किछुए कथा एहि प्रश्नकं सकारात्मक उत्तरक रूप मे सोझाँ अबैत अछि । 'सिनुरहार' सेहो ताही श्रेणीक कथा थिक । एहि कथा मे धर्म आ लोकाचारक घालमेल कें देखार कयल गेल अछि, मुदा बात ततबे नहि अछि । कोनो समाजक लोकाचार आ संस्कृति मे अटूट अन्तस्सम्बन्ध होइत छैक । धर्म, लोकाचार आ संस्कृति कें बिकछायब सहज नहि अछि । शिवशंकर श्रीनिवास 'सिनुरहार'क कथानक ओहिठाम सँ उठबैत छथि जाहिठाम ई तीनू घुलिमिलि कऽ एकाकार भऽ गेल अछि । मुदा, जहिना ओ लोकाचार पर राखल धर्मक झाँपनि कें हँटा दैत छथि, तहिना मैथिल संस्कृति कें सेहो बेछप

कऽ दैत छथि । पहिल बात तँ ई जे सिनुरहार स्वतः मिथिलाक सांस्कृतिक परिदृश्य कें रेखांकित करैत अछि । दोसर बात, उपनयनक अवसर पर पूजा कोनो देवी-देवताक कयल जा सकैत छल । किन्तु सिनुरहारक विधिकें भगवतीक पूजाक संग जोड़बाक मैथिल मानसिकता जाहि सांस्कृतिक निजताक संकेत दैत अछि से ध्यानीय थिक । शक्ति-पूजाक प्रमुखता मैथिल संस्कृतिक प्रतीक थिक । कल्याणीक माय एकटा लोकाचार कें एहि सांस्कृतिक उपादानक माध्यमसँ धर्मक देहरि पर पहुँचबैत छथि। ई प्रक्रिया कल्याणीक माइये नहि अपनबैत छथि–आम मैथिल परिवार मे एकर अनुसरण-अनुगमन होइत अछि। यैह सांस्कृतिक सम्बद्धता 'सिनुरहार' कें मैथिल कथा बनबैत अछि । यैह विशेषता सार्वजनीन समस्या पर विमर्श करैत एहिं कथा कें मिथिलांचलक माटि-पानिक उपजाक रूप मे प्रस्तुत करैत अछि ।

हमरा ई कथा एहू लेल नीक लागल अछि जे एकर मूलाधारे हृष्ट-पुष्ट नहि अछि, आनुषंगिक कथा सभ सेहो विचारक अवसर प्रदान करैत अछि । एतेक छोट कथा मे आनुषंगिक कथाक होयब स्वतः बड़ पैघ बात थिक, आ सेहो मूल कथा कें बिना कोनो क्षति पहुँचौने । किन्तु, एहि कथा मे अनेक क्षेपक-प्रसंग अछि । जेना समाजमे बेटा-बेटीक स्थान, ओकर मूल्यवत्ता । हमसभ देखि चुकल छी, जे रामभद्र झाक पत्नीक दृष्टि मे कल्याणी आ ओकर भाइक लेल समान भाव नहि छनि । बेटी आ बेटा मे अन्तर होइत छैक से ओ खूबे बुझैत छथि आ तदनुसार आचरणो करैत छथि । हुनका नजरि मे विधवा-विवाह सेहो अधार्मिक आ तें अमंगलकारी काज थिक । मुदा से ओ करैत छथि, किएक तँ कल्याणी बेटी थिक आ ओकर अमंगल हेतैक तऽ होउक। किन्तु, बेटाक अमंगल हुनका सहाज नहि छनि । ई बात हुनक एहि वाक्य सँ ध्वनित होइत अछि–''ओकरा दुआरे हम अपन बेटाक अमंगल नहि होबऽ देब ।'' सन्तानक प्रति एहि प्रकारक मनोभाव जाहि दूषित सामाजिक संरचनाक देन थिक तकर प्रतिनिधित्व करैत छथि रामभद्र झाक पत्नी । किन्तु, कल्याणी अग्रिम पीढ़ीक सोचक झंडा थिक । एहिठाम कथाकार मात्र पीढ़ीक अन्तर नहि देखबैत छथि-अग्रिम पीढ़ीक वैचारिक तथा कार्मिक प्रगतिशीलता दिस सेहो इंगित करैत छथि।

एकटा दोसर क्षेपक-कथा कें देखल जाय । कल्याणी कें जखन ओकर माय सिनुरहार मे शामिल नहि होमय दैत छथिन तखन ओकर उद्विग्नता बढ़ि जाइत छैक। स्थिति-परीक्षणक क्रम मे ओ आत्म-निरीक्षण करैत अछि । अपना बारे मे सोचैत अछि। अपन पितामहीक मादे सोचैत अछि । बिधवा होयब एकटा दुर्घटना थिक । स्थिति थिक। मुदा, समाजक न्यायवादीलोकनि तिलकें ताड़ बना देलनि अछि। पुरूष विधुर भेल तँ कोनो बात नहि, स्त्री बिधवा भेलि तँ सत्यानाश । पुरूषक लेल पुरुष द्वारा निर्मित पुरुषक एहि समाज मे स्त्रीगणक कोनो मूल्य नहि । स्थितिक भयावहता तखन आरो बढ़ि जाइत अछि जखन एकटा स्त्री दोसर स्त्री कें काँचे खाइत अछि। शिवशंकर श्रीनिवास नारी-स्वतंत्रताक आजुक अभियान मे पुरुष कें नहि, स्त्रीकें सेहो बाधक मानैत छथि । ओ पुरुष वा स्त्री कें नहि, ओहि सोच आ प्रवृति कें नारीक दुर्गतिक कारण बुझैत छथि जे पुरुषसत्तात्मक सामाजिक संरचनाक आधारशिला थिक। ई प्रसंग कथा मे एकठाम आयल अछि, मुदा एकर निदान सम्पूर्ण कथाक तानी-भरनी मे भेटैत अछि । ऊपर सँ देखला पर लगैत अछि जे 'सिनुरहार' पुरुषाधिकारक स्थान

पर नारीक वर्चस्विताक कथा थिक । रामभद्र झा सँ हुनक पत्नी बेसी तेज छथिन, कल्याणी सेहो अपन पति सँ बेसी मुखर अछि, । गामोमे जेना केवल दाइ-माइक साम्राज्य हो, पुरुष-पात घटना सँ नदारद छथि । मुदा, एहि सभक अछैत कथाकार कथा कें दोसर छोरपर लऽ जा कऽ एकभगाह नहि होबऽ दैत छथि । रामभद्र झा धीर-गंभीर लोक छथि। बेटी-जमाय कें गाम लऽ जयबा मे तथा ओहिठाम हुनका सभक मान-मर्यादाक रक्षा मे हुनक जे भूमिका छनि से उपेक्षणीय नहि । कल्याणीक मनोबल कें बढ़यबा मे, ओकर प्रगतिगामिता मे हुनक सक्रिय योगदान छनि । कल्याणीक पतिक प्रति सेहो कथाकार उदासीन नहि छथि । कल्याणी सिनुरहार मे सम्मिलित भेलाक बाद विजयात्म भाव सँ पति दिस देखैत अछि आ हुनक प्रमुदित मुद्रा देखि ओ आत्म-विभोर भऽ जाइत अछि। कथाक अन्त सिनुरहार मे कल्याणीक सहभागिता मात्र देखा कऽ नहि कयल गेल अछि । कथाक पूर्णता सभ लोकक आत्मिक आनन्दक अनुभूति मे अछि। तात्पर्य ई जे पुरुष-नारीक तालमेल आवश्यक अछि । दुनू एक-दोसरक पूरक अछि, समतुल्य अछि । शिवशंकर श्रीनिवासक एहि निष्पत्ति सँ किनको मतान्तर भऽ सकैत छनि, मुदा नारी-विमर्शक समकालीन सन्दर्भ मे हुनक कथन विचारणीय अवश्य अछि।

एहि कथाक शिल्प आ भाषाक सम्बन्ध मे फराक सँ किछु कहबाक प्रयोजन नहि अछि । कथा आकार मे बड़ छोट अछि । छोट होइतो बहुआयामी अछि । बहुआयामी होइतो कथ्यक स्तरपर संकेन्द्रित अछि । तथापि लगैत अछि जे एक आध ठाम कथा मे किछु विस्तार आवश्यक छल । जेना, सिनुरहारक समय मे ग्रामीणक भूमिका। पाठक पूछि सकैत अछि जे की मिथिला मे कोनो गाम एहन अछि जाहिठामक लोक कल्याणीक आचरण कें समवेत रूपे स्वीकारि लीअय आ ओकरा विरोध मे चू शब्द नहि बाजय? कथा मे एहि अस्वाभाविक सन लगैत स्थिति कें दूर करबाक लेल किछु विस्तार मे जायब जरूरी छल । कथाक शैल्पिक चुस्ती मे आन-आन जतेक गुण होइक, अस्पष्ट अथवा अविश्वसनीय रहि जयबाक जे खतरा रहैत छैक ताहि सँ ई कथा बाँचि नहि सकल अछि । तहिना किताबी भाषाक स्थान पर दादी-नानीक खिस्साक मौखिक भाषाक प्रयोग बड़ नीक लगैत अछि, मुदा ओहिमे जे एकरूपता अपेक्षित छल तकर अभाव अछि ।

मुदा, ई सभ बात कथाक मूल तत्वक सम्प्रेषण मे कोनो बाधा नहि दैत अछि। कथा कथाकारक अभीष्ट कें सफलतापूर्वक ठाम पर पहुँचा दैत अछि । कथाकारक अकुंठ वैचारिकता निर्लेप भाव सँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि । यैह एकर सफलता आ सार्थकता थिक ।

❑

पुनर्मुद्रण

एहि कथाक पुनर्मुद्रण किएक ?

मैथिल अस्मिताक रक्षामे प्राण दैत मीनाक्षी

मैथिलीक ख्यातनामा कथाकार मनमोहन झाक विशिष्ट कथा मीनाक्षी वर्ष 1953 मे सञ्चयिता मे छपल अछि । सञ्चयिता पोथी मैथिली प्रकाशन समिति (सरिसव) द्वारा प्रकाशित भेल रहय । रुना, झगड़ा, चाँपकली, सुकेशी सन अनेक प्रसिद्ध कथाक रचयिता मनमोहनझाक 'मीनाक्षी' मैथिली कथा साहित्य मे एकदम बेछप कथा अछि। ओना मैथिली मे ऐतिहासिके कथा कम लिखल गेलए मुदा ऐतिहासिक काल के सम्पूर्णता मे देखैत, पात्र ओ कथानक मे कल्पनाओ ऐतिहासिकताक मिश्रण सँ अद्भुत प्रभाव उत्पन्न कर' वला कथा नहिये जकाँ अछि । आश्चर्यजनक रूप सँ मीनाक्षी मे कथ्यक विशिष्टता सेहो अपन खास महत्व रखैत अछि । एहि प्रकारें मीनाक्षी मैथिली कथा साहित्य मे एकदम फराक कथ्यक कथा सेहो थिक । जकर जोड़ नहि भेटैत अछि ।

मनमोहन झाक दूटा कथा-संग्रह प्रकाशित अछि । अश्रुकण आ वीरभोग्या । मुदा दूनू मे 'मीनाक्षी' नहि अछि । सम्भवतया 'मीनाक्षी' मैथिलीक कोनो स्तरक शिक्षा मे कोर्स मे सेहो सम्मिलित नहि अछि । तै मैथिलीक कतेको पाठक के अथवा कहि सकैत छी किछु रचनाकारो कें 'मीनाक्षी' कथा पढ़ल नहि छनि । मुदा बहुतो के एहि कथाक मादे सुनल अवश्य छनि ।

मीनाक्षी कथाक काल 'मिथिलेश्वर' नान्यदेवक काल थिक । मिथिला पर एगारहम शताब्दी मे अपन शासन सुस्थापित कएनिहार कर्णाटवंशीय नान्यदेव मिथिलाक प्रथम ऐतिहासिक नरेश छलाह। प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो० उपेन्द्र ठाकुर 'मिथिलाक इतिहास' मे लिखैत छथि,

'मिथिलाक प्रथम ऐतिहासिक नरेश नान्यदेव स्वयं मिथिला मे लोकराग कें विकसित कयलनि । शार्ङ्गधरदेवक संगीतरत्नाकर सँ स्पष्ट ज्ञात होइत अछि जे ओ संगीत विषय पर प्रमुख लेखक छलाह । भरतक नाट्यशास्त्रक पाण्डुलिपिक पुष्पिका सँ ज्ञात होइत अछि जे नान्यदेव सरस्वतीहृदयलङ्कार नामक पुस्तकक रचयिता छलाह। एकर अतिरिक्त नान्यक अभिलेख मे ग्रन्थमहार्णवक उल्लेख हुनक रचनाक रूप मे कयल गेल अछि । जाति तथा राग क वर्णनक ओ कतेको नवीन तत्वक समावेश

कयलनि अछि जे प्राय: भरत आ अभिनवगुप्तक रचना मे नहि पाओल जाइछ । सभ मिलाक' नान्यदेव 160 रागक विवेचन कयलनि अछि ।' एहि वृंतात सँ स्पष्ट अछि जे नान्यदेवक काल मे कला एवं संस्कृति अपन उत्कर्ष पर रहल होयत । मिथिला मे विद्याक परम्परा अदौकाल सँ अछि । तैं विद्या हमरालोकनिक संस्कृति बनि गेलए। अस्मिताक संगे जुड़ि गेल अछि । ई विद्या पुस्तकीय (पोथिक) सँ ल' कए हस्तकीय (हाथक, हुनर) धरि भ' सकैत अछि । तैं जत' मिथिला मे अक्षर विद्या, कंठ विद्या पर गौरवबोध रहलए तहिना हुनर विद्या पर सेहो गौरवबोध रहलए । बाद मे लगैये एहि मे किछु व्यतिक्रम आयल होयत । नान्यदेवक काल मे जखन बंगालक कानसोना क राजकुमार बल्लालसेन मिथिला पर अपन साम्राज्य स्थापित करबाक क्रम मे आक्रमण केलनि त' 'मीनाक्षी' कथा मे हुनक अभिलाषा एना व्यक्त भेल अछि, 'हुनका इ अभिलाषा छलन्हि जे मिथिला कैँ अपन राज्य मे मिला ली ।...परन्तु युवराजक एक आओर स्वप्न छलन्हि जे मिथिला कैँ आध्यात्मिक क्षेत्र मे वङ्गक अनुचरी बनाबी, ओकर बुद्धिराज्य पर कुठाराघात करी; ओतूका विद्वान बङ्गदेशीय पण्डितक पाद-प्रक्षालन करय; आ जखन ओ युवराज भेलाह तखन हुनक हृदयक सुप्त कलाकार एक आओर आकांक्षा लए सन्नद्ध भए उठल-ओ छल ओहि समयक मिथिलाक सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी कैँ किछु दिनक हेतु अपन अङ्कशायिनी बनाएब । ओ सर्वसुन्दरी छलि इएह राजनर्तकी मीनाक्षी जकरा मिथिलाक जनता प्रेमवश कहैत छलैक मनकी।' बल्लालसेन जखन मिथिला विजय क' लेलनि त' मिथिलाक विद्वान लोकनिक तड़िपत पर लिखल अपना घरक एक लक्ष प्राचीन पुस्तक विजयीक शिविर मे उपहारक रूप मे देबाक आज्ञा देलनि। मुदा मनकी युवराजक प्रेमपाश मे पड़ियो क' मैथिल युवक लोकनिक द्वारा बहुमूल्य पोथी क रक्षा आ विजयीक हाथ सँ बचेबाक लेल बनाओल योजना मे सक्रिय योगदान केलनि । वस्तुत: मनकीएक कारण बहुमूल्य पोथी सभ बचि सकल। एहि लेल ओ प्राणोत्सर्ग सेहो क' देलनि । एहि प्रकारेँ मीनाक्षी एक वेश्या भ' कए मिथिला संस्कृतिक अमूल्य धरोहर अक्षर विद्या (पोथी) क रक्षा मे अपन प्रेम के त्यागि प्राणतक द' देलनि । आत्मत्यागक एहन उदाहरण अन्यतम अछि। अनेक वेश्या, नगरवधू यथा आम्रपाली, चित्रलेखा, आदिक कथा हिन्दी मे उपलब्ध अछि । भोग सँ त्याग दिस सेहो ओ लोकनि उन्मुख भेलीह अछि । 'संघम् शरणम्' गेलीह अछि। मुदा अपन अस्मिताक रक्षा मे प्राण देनिहार असगरे मीनाक्षीएक कथा कहल गेलए। तैं मीनाक्षी कथाक पुनर्मुद्रण सन्धानक पहिल अंक मे कैं' रहल छी। एही संग एकटा आर सूचना दी जे मीनाक्षी कथा सँ प्रेरणा ग्रहण कए एवं ओकरा आर विस्तार दैत डा० सदन मिश्र राजनर्तकी नामक नाटक लिखलनि अछि जे वर्ष 1991 मे प्रकाशित भेल अछि ।

—सम्पादक ।

कथा

मनमोहन झा

मीनाक्षी

[प्रस्तुत कथा मिथिलाक गौरवपूर्ण इतिहासक एक दुःखद पृष्ठ मात्र थिक। आइसँ हजार वर्ष पूर्व मिथिलाक संस्कृति कतेक महान् छल आ' एकर सभसँ निकटवर्ती प्रदेश बंगाल कोना एहि क्षेत्र मे एकरासँ सर्वदा पराजित रहल । इतिहास एतबे कथाक साक्षी अछि जे कानसोनाक राजा विजयसेनक पुत्र बल्लालसेन 1070 ई० मे मिथिलापर आक्रमण कए एतूका राजा नान्यदेवकें हराए बन्दी कए बंगाल लए गेलाह । इतिहाससँ बाहर कथा मीनाक्षीक अछि । किन्तु मीनाक्षी (प्रसिद्ध मनकी) मिथिलाक प्रसिद्ध वेश्या छलि तथा एकर डीह सरिसव ग्रामक पश्चिम अंचल पर एहुखन विद्यमान अछि। हम एतबा स्वतंत्रता अवश्य लेल अछि जे काल तथा पात्रकें समुपयुक्त जानि एहि कथा मे आनि मिथिलाक उत्कर्षकें प्रकट करबाक प्रयास कएल अछि ।]

मध्य रात्रिक समय अछि, सम्पूर्ण शिविर घोर निद्रामे व्याप्त अछि । केवल कहुखन कें प्रहरीक अस्पष्ट शब्द कर्ण गोचर होइछ । दूर बँसबिट्टी मे श्रृंगाल प्रहरीक भीषण शब्दक एहिखन प्रतिवाद कएलक अछि । किन्तु सात दिनक अविश्रान्त परिश्रमसँ क्लान्त भेल सैनिक दल निश्चेष्ट पड़ल अछि । रुधिरधार मे स्नान कए ओकरा सभक खड्ग-श्रेणी उपेक्षिता रमणीजेकाँ कात मे पड़ल अछि आ' विजयक उल्लास मदिराक मादकता ओकरा लोकनिक अंग-अंग मे शैथिल्यक सृष्टि कए गेलैक अछि। किन्तु एहि नरमेधक प्रमुख होता, एहि विजय-गरिमाक एकमात्र श्रेयक भागी, एहि महावाहिनीक सर्वश्रेष्ठ महासेनापतिक आँखिमे निद्राक अभाव अछि। एहि महायोद्धाक शिविर बाढ़ि सँ प्रमत्त बिरजाक कातहिमे स्थित अछि जाहिमे कर्पूरक दीप जरि रहल अछि; बेली, जूही तथा कमलक पंखुरीसँ सुसज्जित शय्यापर एक युवक सैनिक निद्राहीन वारंवार पार्श्व-परिवर्त्तन कए रहल अछि । ओकर आँखिमे विजयक उद्दामता; मुख मे ओहि उद्दामताक प्रफुल्लता ओ अंग मे ओहि प्रफुल्लताक शिथिलता छैक । ओ निद्रालस नहि अछि; ओकरा चएन नहि छैक । ओ वारंवार शिविरक दुआरि-दिस देखि पुन: सुतबाक व्याज करए लगैछ ।

एकाएक शिविरक बाहर किछु सांकेतिक शब्द भेलैक । युवक सावधान भए उठए लागल । एक अधबएसू पुरूष भीतर प्रवेश कए अभिवादन करैत बाजल 'युवराज, मिथिलाक राजनर्तकी सेवा मे उपस्थित अछि ।'

युवराजक हृदय मे ई छोट-सँ-छोट वाक्य पीयूष-वर्षण कए देलक । अपन सभ अहंमन्यता तथा महत्ताक अवहेला करैत युवराज बजलाह-'सत्वर हुनका लए अनिऔन्हि।'

किछुए क्षणमे एक अद्भुत लावण्यमयी देवोपमा सुन्दरी नर्त्तकी शिविर मे प्रवेश कएलक । नर्म-सचिव अभिवादन कए दुआरिअहिपरसँ घूरि गेलाह । सुन्दरीक अंग-अंगमे वसन्त छैक आकर्ण नेत्र, बिम्बसम अधर, सुपुष्ट उरोज, क्षीण कटि, गज-गति सभसँ पूर्ण अछि । वेणीमे पुष्प-कलिकाक विन्यास छैक, चीनांशुक कञ्चुकी तथा कटि मे रत्नजटित मेखला धारण कएने अछि । युवराज अनायास एहि अलौकिक रूपकें देखि हतबुद्धि भए शय्यासँ उतरि ठाढ़ भए गेलाह । शिविरक अन्धकारपूर्ण मेघ मे जेना सौदामिनीक प्रकाश भेल हो, कसौटीक कृष्ण पटपर जेना स्वर्ण-रेखा हो; गहन वनक निबिड़तामे जेना सर्प-मणिक प्रकाश हो ।

नर्त्तकी आगाँ बढ़ैत सस्मित, नतमस्तक भेलि किछु काल ठाढ़ि रहलि, पुनः कटाक्षसँ एक बेर हतबुद्धि युवराज क दिस तकलक, पुनः किछु कम्पित, किछु स्खलित, किछु क्षुधित कण्ठसँ बाजलि-'आज्ञा, राजेन्द्र' ।

कथाक आरंभ सँ पहिनहि ओकर प्रारम्भ अछि । अग्नि प्रज्वलित करबासँ पहिनहि इन्धनक आयोजन होइत छैक । आई सँ प्रायः हजारवर्ष पूर्व 1070 ई० क लगक मिथिलाक चित्ररेखा अपने लोकनिक समक्ष उपस्थित अछि । जहिआ मिथिलाकें अपन राज्य छलैक; अपन राजा छलैक अपन गरिमा छलैक; अपन महिमा छलैक । एतूका पुरुष कर्मठ छल; स्त्रीमे स्वाभिमान छलैक; जल मे पीयूष छलैक आ स्थल मे-स्वर्ण। ई आध्यात्मिकताक जननी छलि, शौर्यक सहोदरा तथा धर्मक सहचारिणी । जात्यभिमान एकर धमनी छलैक, कट्टरता एकर स्नायु तथा विद्या एकर प्राण छलैक । सगर भारत एकर शिष्य छल आ' मानवता एकर अनुचरी ।

किन्तु एकर उत्कर्षसँ मर्माहत छल केवल एक प्रान्त, एकर पार्श्ववर्त्ती वङ्ग। वङ्गकें अध्ययनक गौरव छलैक, अपन बाहु शक्तिक घमंड छलैक, अपन अतीतक गरिमा । ओ समीपक वर्द्धिष्णुताकें कोना सह्य करैत । ओ चाहैत छल हम राजरानी भय रही, मिथिला हमर अनुचरी; हम मस्तकक मुकुट मणि होइ; मिथिला हमर पाएरक नूपुर; हम हिमधौत-शिला पर रही, मिथिला लवण समुद्रक गर्त्तमे ।

किन्तु ई हो कोना? हँ, मिथिलाक लोक स्वभावतः सैन्यशिक्षा मे पछुआएल अछि तें ओतूका राजाकें पदाहत करब कठिन नहि; ओतए ने दुर्द्धर्ष पर्वत छैक ने निबिड़तम वन, तें ओतूका पृथ्वीपर विजय प्राप्त करब असम्भव नहि, किन्तु ओकर अध्यात्मवाद, ओकर शास्त्रीय प्रतिभा, ओकर मस्तिष्क विकास पर विजय कोना हो ?

आ' एही मिथिलापर सर्वतोभावेन विजय प्राप्त करबा पर सन्नद्ध छलाह कानसोनाक (कर्णस्वर्ण, आधुनिक मुर्शिदाबादक) युवराज बल्लालसेन । युवराज एक निपुण योद्धा छलाह, तथा कलाक मर्मज्ञ; साहित्य, व्याकरण, न्याय, दर्शन आदिक दुर्द्धर्ष विद्वान्। अपन जीवनक प्रथमावस्थाहिसँ हुनका ई अभिलाषा छलन्हि जे मिथिला के अपन राज्य मे मिला' ली । अपन राज्यस्थ चारि प्रान्त, वरेन्द्र (उत्तर बंगाल), वङ्ग (पूर्व बंगाल), वागरा (प्रेसिडेन्सी कमिश्नरी), राढ़ी (वर्दमान कमिश्नरी) क संग

मिथिला कें पाँचम प्रान्त बनावी । युवराजक विचार मे ई सुलभ छलन्हि । परन्तु युवराजक एक आओर स्वप्न छलन्हि जे मिथिला कें आध्यात्मिकताक क्षेत्र में वड.गक अनुचरी बनाबी; ओकर बुद्धि-राज्यपर कुठाराघात करी; ओतूका विद्वान वड.गदेशीय पण्डितक पाद-प्रक्षालन करए; आ' जखन ओ युवराज भेलाह तखन हुनक हृदयक सुप्त कलाकार एक आओर आकाङ्क्षा लए सन्नद्धभए उठल-ओ छल ओहि समयक मिथिलाक सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी कें किछु दिनक हेतु अपन अङ्कशायिनी बनाएब । ओ सर्वसुन्दरी छलि इएह राजनर्तकी मीनाक्षी जकरा मिथिलाक जनता प्रेमवश कहैत छलैक 'मनकी''।

युवराज किछु आगाँ बढ़ैत बजलाह-'सुन्दरि, हम अहाँक स्वागत करैत छी ।

'स्वागत !' युवती बाजलि-हमर स्वागत किएक? हम तँ पराजित प्रान्तक लूटिक सम्पत्ति छी । हमर अस्तित्वक कोन महत्व? आइ सगर मिथिला अपन रक्तसँ श्रीमानक पाएर धोए रहल अछि; अपन सर्वश्रेष्ठ युवजनक मुण्ड लए उपहार देलक अछि ; आइ एहि तुच्छ नर्तकीक कोन कथा, सगर मैथिल युवतीक लाजक लगाम श्रीमानक हाथ मे अछि ।'

युवराज कनेक मर्माहत होइत उत्तर देलन्हि-'मनोहारिणी, मिथिला हमर युद्धक एक विचित्र अर्थ लगाए लेलक अछि । ओ हमरा ओहि दस्युराजक नीचतासँ पूर्ण बुझैछ जकर विजयक अर्थ रहैत छैक केवल अनाचार, उत्पात तथा मानमर्दन । किन्तु हमर उद्देश्य भिन्न अछि । हम मिथिला कँ सुशासन तथा सुपद्धति देअए आएल छी।'

नर्तकी कनेक व्यङग्यपूर्ण हास्यक संग बाजलि-'हँ, युवराज, मिथिलाकें सुशासन अवश्य नहि छैक कारण जे ओ अपनहि सीमाक अन्तर संतुष्ट रहि आन राज्यक अभिवृद्धिक ईर्ष्यालु नहि अछि; ओकर शासन-पद्धति यथार्थ मे त्रुटि-पूर्ण छैक कारण जे वङ्गदेशीय विद्वानक समक्ष मिथिलाक विद्वानक तेज क्षीणतर बुझना जाइछ! किन्तु.... श्रीमान्, एहि सुशासन, सुपद्धति प्रदानसँ भिन्नो कोनो मिथिला-विजयक उद्देश्य छैक?

नर्त्तकीक चातुर्य पुर्ण उत्तरसँ युवराज क्षुब्ध छलाह । एक नारीद्वारा अपन व्याजपूर्ण कथाक एहन सुन्दर समालोचना हुनक अन्तस्तलमे ग्लानिक अग्नि प्रज्वलित कए देलक। किछु क्षण मौन रहि उत्तर देलन्हि-'हँ, देवि, मिथिला-विजयक एकदू आओर महत्वपूर्ण उद्देश्य अछि ।'

'की, ओ हमरा सुनबा योग्य नहि ?

युवराजक मुख आरक्त भए उठलन्हि । बंगालक अनेक तमसामयी बरिसाती राति मे ओ एहि कोमलाङ्गीक चिन्तन मे निद्राहीन रहलाह अछि आ' ओ सुन्दरी प्रश्न करैत छन्हि-'की, मिथिला-विजयक कोनो आनो उद्देश्य छैक ?''युवराज बजलाह-'हँ, एक प्रमुख उद्देश्य छैक आ' ओ उद्देश्य मूर्त्तिमान भए हमर समक्ष उपस्थित अछि।'

युवती किछु आश्चर्यित भेलि, पुनः लज्जासँ ओकर कपोल लाल भए गेलैक, अधर मे स्फुरण अएलैक आ' वेणीक मालाकें सम्हारबाक व्याजसँ अपन अञ्चलकें माथपर सुव्यवस्थित करैत नतमस्तक भेलि ठाढ़ि रहलि ।

युवराज ओकर मुखमण्डलपर होइत अपन वाक्यक प्रतिक्रिया कें किछु क्षण देखैत

रहलाह । पुनः अपना प्रति एहि युवतीक एहन भाव देखि, हृदय मे हर्षक अनुभव करैत बजलाह-'कालक्रमें अहाँके ज्ञात होएत जे एतेक रक्तपात, एतेक धनव्यय, एतेक परिश्रमक मध्य कोन अदृश्य शक्ति कार्य करैत छलैक । एक वङ्गीय युवक अपन सभ ऐश्वर्य, अपन सभ आत्माभिमानकें छाड़ि, अपन युवावस्थाक आदिकालसँ अपनाके एक मैथिल ललनाक आरक्त चरणपर लुंठित करबा लए व्याकुल रहल अछि । आ' ओ युवक आइ सम्पूर्ण मिथिलाकें पराजित कए अहाँक समक्ष भिक्षाक कपाल लए उपस्थित अछि ।'

युवराज एतबा कहिअनुनयपूर्ण दृष्टिसँ नर्तकी-दिस ताकए लगलाह । ओ संकुचित भेलि ओहिना ठाढ़ि रहलि जेना ओकर अङ्ग-अङ्ग सँ लज्जाक सृष्टि होइत रहैक। ओकर श्वास तेज भए गेल छलैक । हृदयक उल्लास जाग्रत भए ब्रीड़ापूर्ण अधर पर स्मित आनि देने रहैक, आँखि वारंवार मुनल भए जाइक आ' दोसर क्षण अनायास ओकर माथसँ अञ्चल स्खलित भए गेलैक ।

युवराज आगाँ बढ़ि ओकर कोमल हाथकें अपन हाथ मे लैत कहलथिन्ह-'कतेक काल अहाँ ठाढ़ि रहब; एहि पुष्परचित शय्याक कोन दोष जे अहाँसँ तिरस्कृत अछि?'

नर्त्तकी, भ्रमरद्वारा प्रथम स्पर्श पओने कमल-कलिका-जकाँ लज्जासँ कम्पित भेलि, शैय्यापर बैसि रहलि । कसि कए युवराज अपन स्नेहक डोरीकेँ आओर दृढ़ करबाक हेतु ओहि गम्भीर क्षण मे प्रश्नसूचक मुद्रा मे बजलाह--

'सुन्दरि !'

'....'

'मीनाक्षी !'

'... युवराज, मीनाक्षी हमर देश-प्रसिद्ध नाम थिक ...किन्तु जहिआ सान्धिविग्रहिक महामात्य हरादित्य हमर प्रवेश मिथिलाधिपतिक सेवा मे करा' देलन्हि तहिएसँ महाराज हमरा 'मनकी' कहैत छथि...आब श्रीमानहुक अधिकार हमरापर ओहने अछि, तें हमरा ओही नामसँ सम्बोधन कएल जाए ।'

'किन्तु, मीनाक्षी, हम तावत् अहाँ कें ओहि नामसँ सम्बोधन कोना करब यावत अहाँ 'युवराज', 'श्रीमान्' आदि शब्दसँ हमरा सम्मानित करैत रहब । हमर नाम बल्लालसेन थिक; बल्लू, बल्ली, बल्लभ...

'बल्लभ...।'

'मनकी...।'

आ दोसर क्षण युवराज ओकरा अङ्क में समेटि लेलन्हि जेना जलक दू पृथक ठोप आवर्त्तमे आबिकें एक भए गेल हो, जेना दिनान्तक दू दीर्घ छाया रात्रिक अन्धकार मे एकाकार भए गेल हो ।

◆ ◆ ◆

रात्रिक ध्वंसावशेष पर दिन अपन सौधक शिलान्यास कए रहल छल । युद्ध-भूमिक यथेच्छ दुर्लभ स्वादिष्ट भोजन सँ सन्तुष्ट भए प्रकाशक भयसँ जंगली जीव सभ पुनः अपन विवरक हेतु प्रात्यावर्त्तन करए लागल छल । विरजाक कश्मल जल अपन प्रखर कलकल शब्दमे बाह्ममुहूर्त्तक स्वागत कए रहल छल । किन्तु आकाश एहुखन निबिड़ मेघसँ आच्छादित छल तें प्रभातक छातीपर रात्रि बलजोरी एहुखन अपन विजयक बैजयन्ती गाड़नहि छल । युवराज मीनाक्षीक वेणीक मौलाएल मालती-माला कें हटएबाक व्याजसँ ओकर केशक स्पर्श करए लगलाह । निद्रालसा युवती अपन अव्यवस्थित वस्त्रकें सम्हराए लागलि; कञ्चुकीक बन कसलक, नीवीक डोरी सक्कत कएलक आ' पुनः तन्द्रासँ मातल नेत्रसँ युवराज-दिस ताकि ब्रीड़ाक बाढ़ि मे डूबि गेलि । रात्रिक स्पर्द्धा प्रातः काल लज्जाक रूप धारण कए लेने छलैक । मानक अभिमान पुरुषताक प्रकट रूप देखि मलिन भए गेल छलैक । प्रकृति स्तम्भित छलि, पुरुष उल्लसित।

युवराज मीनाक्षीकें आलिङ्गित कए कहलथिन्ह-'अनेक वर्षक प्रतीक्षाक बाद आजुक राति हमर जीवन मे आएल । मनकी, अहाँक स्पर्श हमर यौवन कें सार्थक बना देलक । एही क्षणिक सुखक पाथेय लए हम अपन जीवन यात्रा आह्लादपूर्वक सम्पूर्ण कए सकब । मिथिलाक पावसक एक अन्धकारपूर्ण रात्रि वङ्गाक अनेक शारदी राका पर विजय प्राप्त कए लेलक ।'

''वल्लभ, हमर एक स्वप्न छल जे आइ सत्य भेल । अपन ईप्सित एक वंङ्गीय राजकुमारक अङ्क मे अपनाकें समर्पित कए हम अपन नर्तकी-जीवन कें सफल बूझि रहलि छी । प्रियतम्, इतिहासक पुनरावृत्ति होइछ से लोक प्रसिद्ध छैक । एहि विरजासँ पश्चिम वैशाली-नगर मे आइसँ सहस्र वर्ष पूर्व लिच्छवि गणतन्त्रक सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी 'आम्रपाली' क जीवन मे एहने महत्वपूर्ण क्षण आयल छलैक-जखन मगधक सम्राट ओकर द्वारिपर छद्म-वेष मे प्रणयक इच्छासँ याचक रूपें आएल छलाह । आ' ओ गणतन्त्रक शुभेच्छा हृदयमे रखैत सम्राटक संग सात प्रमोदमय रात्रि बितओने छलि । आ' हमर ई रात्रि---' मीनाक्षीक आँखि लज्जासँ अवनत भए गेलैक, मुख आरक्त भए गेलैक, ओ मौन भए गेलि ।

युवराज अपन हाथ सँ ओकर मुखकें उपर उठबैत कहलथिन्ह-हँ, हँ, मनकी अहाँक ई राति?

मनकी किछु स्वस्थ भए बाजलि, 'युवराज, अमरावतीक 'सरिसब' नामक उपनगर मे जखन हमर शरीर पर यौवनक ईषत् रेखामात्र चित्रित भेल छल, शिक्षालाभक हेतु आएल वङ्गीय छात्र सभक मुखसँ ओहि राजकुमारक रूप, चातुर्य्य, रसिकता तथा पौरुषक चर्चा सुनि हम मुग्ध भए गेल रही, जे आजुक रातिक तीन मदमय प्रहर भरि हमरा अपना विशाल हृदयक उष्णताक अनुभव करबैत रहल अछि । वल्लभ, हम लिप्सासँ अमरावतीक ग्राम्यजीवन छाड़ि मिथिलाधिपतिक सेविका बनि राजधानी आएलि छलहुँ । की आम्रपालीक रात्रि सँ हमर रात्रि कम महत्वपूर्ण अछि ?

युवराज सोल्लास एहि विदुषी नर्त्तकीक अधरक चुम्बन कए ओकरा अपन अङ्क मे समेटि लेलन्हि-जेना शिशिरक शीतसँ कम्पित भए केओ गर्म वस्त्र कें अपन छाती

सँ लगा' लैछ, जेना चोर डाकूक भय सँ कृपण अपन संचित धनकें नुकएबाक प्रयास करैछ, जेना आकाशक तेजमे तिरोहित भए जएबाक भयसँ मेघ विद्युतकें अपन कोर मे नुकएबाक उद्योग करैत हो ।

आ' एही बीच विरजाक कात सँ निर्भीक ब्राह्मणक मुखक सन्ध्यातर्पणक स्पष्ट ध्वनि शिविरक अन्तर तक प्रवेश करए लागल, दैनिक व्यायामक हेतु सैनिक सभक प्रस्तुत होएबाक ऊहापोह प्रारम्भ भए गेल ।

इप्सित रात्रिपर अनीप्सित प्रभात विजय पाबि लेने छल ।

(2)

मिथिला विजयक एहन सुन्दर प्रारम्भसँ बल्लालसेनक हर्षक सीमा नहि छल। केवल तीन-चारि दिनक श्रमसँ मिथिलाक राज्य तथा राजकोष हुनक हाथ मे आबि गेल छल। मिथिलाक सर्वश्रेष्ठ सुन्दरीक चिरकाङ्क्षित स्नेह अनायास प्राप्त कए लेलैन्हि। निश्चय दैव विजयीक संग रहैत छथि । मिथिलाक राजाधिराज बंदी बनाए शिविर मे आनल गेलाह । बल्लालसेन मिथिलाविजयक अपन दू उद्देश्य केवल किञ्चित् अध्यवसाय तथा श्रमसँ सिद्ध कए लेल ।

काल्हि हुनक एक अद्भुत घोषणा भेल आ' ओ छल 'मिथिला यदि वङ्गीय साम्राज्यक छत्रच्छायामे रहि अपन पृथक राज्य तथा राजा चाहैछ तँ सात दिनक मध्य एतूका विद्वान् लोकनिक तड़िपत पर लिखल अपना घरक एक लक्ष प्राचीन पुस्तक विजयीक शिविर मे उपहारक रूपमे दए जाथि । नहि तँ सातम दिन विरजाक धार एतूका निर्दोष जनताक रक्तसँ लाल कए देल जाएत, मिथिलाक राजधानी श्मशान बना' देल जाएत ।'

मिथिला एहि घोषणा कें विचित्र आश्चर्य्य तथा आतङ्कसँ सुनलक । जनताक विश्वास छलैक जे कोनो सभ्य देशक विजेता राजा, राज्य तथा राज्यकोषकें छाड़ि साधारण जनताक स्वतन्त्रता, ओकर जीविका, ओकर संस्कृतिपर कुठाराघात नहि करैछ। किन्तु बल्लालसेन मिथिलाक प्राणपर आघात करए चाहैत छथि । हुनका राज्यकोषक अमूल्य रत्न, मिथिलाक सस्यश्यामला भूमि, राजनर्त्तकीक सौन्दर्य्यसुधा किछु तृप्ति-प्रदान नहि कए सकल । ओ चाहैत छथि-महाराज मिथिसँ लए नान्यदेव तकक जे मिथिलाक उज्जवल इतिहास छैक तकर विध्वंस करब ।ओ चाहैत छलाह जे विदेह-कुशध्वज-जनकक गौरव-गाथा कें मिथिला बिसरि जाए, ओकर आध्यात्मिक शक्तिक ह्रास होइक, एतूका विद्वन्मण्डली पङ्गु भए जाए, एतूका छात्र-समुदाय वङ्गीय पाठशालाक शरण लेअए। किन्तु एकर प्रतिकार की छलैक। सम्पूर्ण मिथिला एक पार्श्ववर्त्ती शत्रुक पाएरपर लुंठित छल; अशक्त, निर्बल भेल केवल ओहि दुर्दान्त शत्रुक कृपा-भावना मात्र ओकर रक्षक छलैक । परन्तु विजयी शत्रु निर्म्मम, निष्ठुर भेल अपन देशक आध्यात्मिक प्रतिद्वन्द्विताक प्रतिशोध लए रहल छल । ओ विचारैत छल, पुनः एहन अवसर आएब दुर्लभ; तखन तीनू उद्देश्यक पूर्ति एही बेर किएक नहि कए लेल जाए।

आ' मिथिलाक त्रस्त जनता अपन-अपन घरक, अपन-अपन पूर्वजक एक मात्र स्मारक-स्वरूप प्राचीन पुस्तक सभक मोटा बान्हि-बान्हि वल्लालसेनक शिविर मे पहुँचाबए लागल। संगहि युवराजक आज्ञानुसार सभ वङ्गीय सैनिक निकटस्थ ग्राम-ग्राम

जाए भीत, निरस्त्र जनता कें तरूआरिक बलें परास्त कए प्राचीन-प्राचीन पुस्तकक संग्रह करए लागल । बहुत विद्वान अपन एहि जातीय तथा प्रान्तीय सम्पत्तिक रक्षा मे अपने वस्तुकें चोर-जेंका रातिमे नुका' नुका' कतहु जङ्गलक कोनो गाछक धोधरि मे, केओ कोनो दरिद्र अन्त्यजक खोपड़ि मे विशिष्ट-विशिष्ट पुस्तक सभ के राखि आबथि। ओहि समय मे मिथिला ओहि युवती जकाँ प्रतीत होइत छलि जकरा अशरण पाबि कोनो डाकूक दल सभ अलङ्करण छीनि लेने रहैछ आ' ओ त्रस्त भलि केवल अपन सतीत्वक रक्षार्थ अन्धकार मे नुकाइलि फिरैछ । ग्राम-ग्रामसँ, टोल-टोल सँ, पाठशाला पाठशाला सँ, हाथीक पीठपर लादिकें आनल गेल हस्तलिखित पुस्तकक शत्रुक शिविर मे पहाड़ बनि गेल ।

बल्लालसेन अपन लूटिक एहि अमूल्य सम्पत्तिक निरीक्षण कएलैन्हि । संग मे आएल विद्वान लोकनि एक-एक पुस्तक देखए लगलाह ।

सायंकाल युवराज जखन अपन राजबल्लभ लोकनिक संग बैसल छलाह, अपन देशीय विद्वानक प्रमुख चण्डीचरण बन्द्योपाध्यायकें बजाए पुछलैन्हि-'पण्डितप्रवर, एहि पुस्तकक समुद्र-मंथनमे किछु नवो-नव रत्न सभ भेटल की नहि ? जाहि-जाहि ग्रन्थक पाठ केवल मैथिल विद्वान लोकनि दैत छलाह से सभ उपलब्ध भेल वा नहि ?'

चण्डीचरणक मुखपर एक उदासीनताक भाव जाग्रत भए उठलैन्हि। युवराजक एहि साधारण प्रश्न सँ विचित्ररूपेण मर्म्माहत होइत ओ करबद्ध उत्तर देलैन्हि-'श्रीमन् 'ओना तँ मिथिलाक विद्या-वारिधिक सभ रत्न अमूल्ये छैक किन्तु ई सभ रत्न हम सभ पहिनहि पाबि गेल छी । हमर सभक चतुर छात्र एहिमहक बहुत दुष्प्राप्य पुस्तकक प्रतिलिपि कए छद्म-रूपें अपन देश पहिनहि लए गेल छथि । किन्तु जाहि पुस्तक सभक बलें मिथिलाक विद्वान लोकनिक स्थान हमरा सभसँ उच्चतर छैन्हि से सब एखन तक दृष्टिगोचर नहि होइछ ।

बल्लासेन चण्डीचरणक एहन उत्तर सुनि एकाएक हतप्रभ भए गेलाह । चारि दिनक विजयोल्लाससँ उत्फुल्ल हुनक मुख-कमल जेना एहि आकस्मिक तुषार-पातसँ मलिन भए गेलैन्हि । ओ एक दीर्घ निःश्वास लैत बजलाह-'की हमर मिथिला विजय-अपूर्ण रहि गेल?' पुनः हुनक आँखि पृथ्वी दिसि खसि पड़लैन्हि ।

चण्डीचरण बङ्गदेशक एक प्रकाण्ड विद्वानेटा नहि, राजाक चतुर मंत्री तथा प्रान्तकश्रेष्ठ राजनीतिज्ञ सेहो छलाह । युवराज हुनक विद्वत्ता तथा बुद्धिक पूर्ण आदर करैत छलथिन्ह । चण्डीचरणसँ ओ नेनहि सँ सभ शास्त्रक शिक्षा-ग्रहण कएने छथि। यदि यथार्थ मे बुझल जाए तँ मिथिला-विजयक एहि अन्तिम किन्तु महत्वपूर्ण उद्देश्यक प्रेरक ओएह छलाह ।

युवराज पुनः बजलाह-'महापण्डित, मिथिलाक जनताक एतेक शोषण भए रहल छैक, दारुण यातना मे पड़ल अछि एतूका विद्वन्मण्डली, तथापि गोप्य पुस्तक सभ समक्ष नहि आनल जा रहल अछि । एकर की कारण ?

चण्डीचरण युवराजक मुखाकृतिक पूर्ण अध्ययन कए उपयुक्त अवसर जानि बजलाह-'श्रीमन, एकर कारण स्पष्ट रूपसँ कहबाक हेतु शक्तिक प्रयोजन छैक, वाङ्गीय परिजन ताहिसँ विहीन अछि ।

युवराजक मुख एकाएक उपर उठि गेलैन्हि, आँखि आरक्त भए गेलैन्हि, किन्तु अपन गुरुवर कें सोझाँ ठाढ़ देखि संयमित शब्द मे बजलाह-'की हम ककरहु व्यक्तिगत स्वतंत्रतासँ वञ्चित कएने छिऐक जे लोक अपन हृदय क भावकेँ हमर समक्ष स्पष्ट नहि कए सकैछ ?

चण्डीचरण उत्तर देलैन्हि-'युवराज, अपनेक कान तक एक महत्वपूर्ण संदेश लोक भयसँ नहि आनि सकल अछि । गुप्तचर द्वारा शिविर मे समाचार आएल अछि जे काल्हि-मध्य रात्रि मे एक युवक एकटा डोंगी नाओपर विरजाक भरल धारसँ नगरक श्मशान घाटपर उतरल । पुनः श्रमपूर्वक अपन दू तीन नाविकक सहायतासँ काठक एक पैघ सन्दुकचा उठबाए नगरक एक सुसम्पन्न व्यक्तिक ओतए सुरक्षित राखि आएल। विश्वास कएल जाइछ जे देहात मे यत्रतत्र सँ दुष्प्राप्य पुस्तक सभक संग्रह कए ओ व्यक्ति नगर मे रक्षाक हेतु ओहि सभकें लए आएल अछि' ।

बल्लासेन एकाएक क्रोधसँ लाल भए उठलाह, आँखिसें जेना आगिक स्फुलिङ्ग बाहर होमए लगलैन्हि । सिहगर्जन मे बजलाह-'नगर मे एहन के व्यक्ति अछि जे हमर शक्तिक स्पर्द्धा कए सकैछ ? के एहन अभागल अछि जकरा हमर तीक्ष्ण कृपाणक नोकसँ खेलएबाक इच्छा भेलैक अछि ?'

चण्डीचरण उत्तर देल-'युवराज, नगर मे एहनो केओ अछि जकरा श्रीमानक भय नहि छैक । श्रीमान् ओकर आदर करैत छिऐक, ओकर एक भ्रू-विलासपर श्रीमान्....।'

'महापण्डित !' युवराज सरोष बाजि उठलाह । शिविरक प्रकोष्ठ मे सभ मूर्त्तिवत् स्तब्ध छल । सभक हृदय मे एहि कठोर सत्यक उद्घाटनसँ हर्ष छलैक किन्तु युवराजक क्रोध देखि सभ त्रस्त छल । निर्भीक चण्डीचरण नतमस्तक भेल किछु काल ठाढ़ रहलाह, पुनः अभिवादन कए शिविरसँ बाहर चल गेलाह । युवराज किछु काल हतबुद्धि भेल ठाढ़ रहलाह, हृदयसँ एक मर्म्मभेदी निःश्वास बहरएलैन्हि आ' दोसर क्षण मुखसँ एक स्फुट शब्द भेलैन्हि-'मी...ना...क्षी!'

(3)

सन्ध्या भए गेल छैक। एहिखन सूर्य्य वल्लालसेनक विजयसँ ध्वस्त-त्रस्त मिथिलाक सौन्दर्य-श्रीकेँ सकरुण दृष्टिसँ देखि अस्त भेलाह अछि। अपन देशक विलुप्त होइत मर्यादाक अवलोकन कए मिथिलाक पक्षिगण एहिखन अपन शोकार्त्त संगीतसँ दिशाकें गुञ्जित करैत अपन-अपन खोंताक आश्रय लेलक अछि । भरल विरजाक धारमे हाबाक वेगसँ हिलकोर उठि रहल छैक आ' एकर तटहिमे नगरक जे सभसँ उच्च महल छैक ताहि मे एक युवक तथा एक युवती कोनो रहस्यपूर्ण वार्त्तालापमे निमग्न अछि।

युवक-'यद्यपि अहाँ एहि वङ्गीय राजकुमार कें हृदयसँ प्रेम करैत छिऐक तथापि हमरा विश्वास अछि जे अपन मातृ-भूमिक हेतु अहाँ सभ किछु त्यागि सकैत छी।

युवती-'अहाँक विश्वास सत्य अछि । कर्तव्यक हेतु प्रेम हमर सहायक अछि, बाधक नहि । हम पहिने मिथिलाक थिकहुँ, तखन अपन लालसाक । हम आत्माक आज्ञा पहिने पालन करब, हृदयक बादमे ।'

'आ एही विश्वासपर तँ आइ सम्पूर्ण मिथिलाक संस्कृतिक रक्षाक भार अहाँक पाएरपर लुंठित अछि ।'

'हमरा विशेष लज्जित जनु करी। मिथिलाक संस्कृति सर्वदा हमर मस्तकपर स्थान राखत, पाएरपर हमर शत्रु लुंठित होअ'।

'हम बूझि रहल छी जे एहि कार्य्यक हेतु अहाँकें कतेक आत्म-दमन करए पड़ैत अछि । स्त्री सुलभ भावुकताक बलि दैत अहाँक हृदयमे जाहि विकलताक अनुभव होइत होएत ओकर अनुभव कोनो पुरुष कोना कए सकैछ ।'

'जाए दिय' ई सभ गप्प । हम दू घंटाक बाद पुनः युवराजक सेवामे चलि जाएब। हुनका बिनु हमरा सम्पूर्ण संसार शून्य बुझना जाइत रहैत अछि। जानि ने कोन सम्मोहन-मन्त्रसँ हमरा ओ अपनादिस आकर्षित कए लेलैन्हि अछि । किन्तु......अहाँक एहि योजनाक पता जहिआ हुनका लगतैन्हि हम ताही क्षण हुनक स्नेह परिधिसँ हटा' देलि जाएब । सम्भव थिक ओ हमर प्राणो लए लेथि। किन्तु... युवराजकें हम देह समर्पित कएने छिऐन्ह,परन्तु मिथिलाक संस्कृतिक विनाश केओ मैथिल-सन्तान कोना देखि सकैछ?'

'देवि, अहाँ धन्य छी । राजसभा मे मिथिलेशक मुँहसँ अनेक दिन सुनने रही जे मनकी साधारण स्त्री नहि अछि, ओ अवसर पर अपन देशक हेतु सभ किछु अर्पण कए सकैछ । आइ से अक्षरशः सत्य बुझना जाइछ ।'

'हँ, कर्म्मादित्य, मिथिलाक टोल-टोलसँ बहुत अप्राप्य पुस्तकक संग्रह तँ भइए गेल अछि तथापि धार मे अहाँक डोंगी-नाओ लगले देखैत छी । आइ फेर कोम्हर जाएब? की...'

वार्त्ता भइए रहल छल कि दूरसँ अनेक घोड़ाक टाप सुनबामे आएल । किछु-किछु ओजमय शब्द सेहो कर्णगोचर होइत छल । मीनाक्षी जिज्ञासु दृष्टिसँ कर्म्मादित्य दिस देखलक । पुनः दूनू गोटए अपनहि बूझि गेलाह जे प्रायः हमरा लोकनिक ई भेद युवराज बूझि गेलाह अछि आ' मीनाक्षीक भवनकें पुस्तक-संग्रहक हेतु सुरक्षित स्थान जानि एकाएक राति मे आक्रमण कए सभ सुरक्षित पुस्तक हस्तगत करए आबि रहल छथि।

किछु क्षणधरि दुनू गोटे किंकर्त्तव्य विमूढ़ भेल बैसल रहला । पुनः सत्वर उठि किछु मन्त्रणा कएलैन्हि । मीनाक्षी अपन वाष्पित दृष्टिएँ खिड़कीसँ विरजाक भरल धार दिस देखलक आ' कर्म्मादित्य एकं विचित्र भावुकतासँ प्रेरित भए अपन कम्पित हाथ सँ ओहि नर्त्तकीक चरण रज लए अपन मस्तक मे लगाए लेलैन्हि आ' पुस्तक रक्षाक सत्वर उपायमे लागि गेलाह। कर्म्मादित्य काष्ठमञ्जूषाक ढाकन उपर उठाए यथासाध्य अपन कार्य-सम्पादन कए लेलैन्हि । मीनाक्षी एक बेरि मिथिलाक स्वच्छ आकाश दिस अपन अश्रुपूर्ण नेत्रसँ तकलक आ' अपन कञ्चनवर्णक देहपरसँ कुसुमीरंगक रेशमी पटकें उतारि कर्म्मादित्यक हाथपर दए देलक । ओकर देहमे केवल कञ्चुकी रहि गेलैक आ' डाँड़ मे घघरा । ओ अर्द्धनग्न छलि किन्तु प्रौढ़ मुद्रा मे काष्ठ-मञ्जूषा दिस देखि रहलि छलि । कर्म्मादित्य एक बेरि मूड़ी उठओलन्हि-आँखि अहिसँ दूनू गोटे परस्पर अभिवादन कएलैन्हि आ' दोसर क्षण...प्रकोष्ठक खिड़कीसँ

शब्द भेलैक....धमाक... जेना किछु भरिगर वस्तुक संग केओ विरजाक धारमे महलसँ कूदि पड़ल हो । तावत् बल्लासेन अपन एक सए चुनल सैनिकक संग नीचासँ महलक उपर भागमे पहुँचि गेल छलाह । प्रकोष्ठक केबाड़पर जोर-जोरसँ आघात भए रहल छल आ' अन्त मे....एकाएक केवाड़ टूटि के खसि पड़ल। वल्लालसेन दौड़िकें जाए काष्ठमञ्जूषाक मुहकें अपन बलिष्ठ हाथसँ उपर उठाओलन्हि आ' संतोषक दृष्टिसँ सैनिक सभ दिस ताकि बजलाह-'मञ्जूषा पुस्तकसँ भरल अछि!' आ' लगले ओ खिड़की लग जाए विरजाक भरल धार दिस देखलैन्हि। भादवक शुक्लपक्षीय रात्रिमे बाढ़िसँ भरल बिरजा गरजि रहल छल आ' चन्द्रमाक प्रकाशमे ओ एतवे देखि सकलाह जे एकटा छोट नाओ प्राणपण सँ जोर लगबैत आगाँ बढ़ि रहल अछि आ' एक कुसुमी चीनांशुक ओतए हाबा मे फहराए रहल छैक । बल्लालसेनक हृदय भीतरहि-भीतर एकबेरि चीत्कार कए उठल किन्तु संयमित होइत बजलाह-शत्रु हाथ सँ बाहर भए गेल अछि...मीनाक्षी अप्राप्य अछि ।

सैनिक दल पुस्तकमय काष्ठमञ्जूषाकें देखि विजयोल्लाससँ युवराजक जयजयकार मनाए रहल छल । युवराज प्रौढ़ मुद्रा मे पाछू घुमलाह । चारि गोट सैनिक ओहि मञ्जूषाकें कान्ह पर उठाए आगाँ-आगाँ चलल । युवराज विचारैत छलाह-'आइ चण्डीचण हमर वीरतापर मुग्ध भए जएताह । सम्पूर्ण वङ्गीय समाजक उपालम्भसँ हम मुक्ति पाबि जाएब । मिथिलाक संस्कृति...ओकर प्राण...आइ हम एहि मञ्जूषामे बन्द कए लेने जाइत छी । किन्तु...किन्तु...मनकी....ओ की भेलि? ओ अपन देशक संस्कृतिक रक्षाक हेतु हमर प्रेमक अवहेला कएलक...हमरा-सन प्रेमीसँ अपन देशक हेतु विश्वासघात कएलक। भाग्यवान युवक कर्मादित्य...भरल विरजाक धार...आ' नाओपर हाबामे उड़ैत 'ओकर' लाल पट...।'

भावनाक सोपान सँ एकाएक उतरि युवराज बजलाह-'आब मिथिलाक विजय सम्पूर्ण भए गेल । वङ्गक प्रजा हमरा लोकनिक प्रतीक्षा मे विकल होएत । एखन रातिक द्वितीय प्रहर बीति रहल अछि । काल्हि सूर्य्योदयसँ पहिनहि हम सभ शिविर उठाए कानसोनाक हेतु सत्वर प्रस्थान कए दी जाहिसँ सातहि दिनमे हमर विशाल वाहिनी अपन राजधानी पहुँचि जाए ।

◆ ◆ ◆

आ' सात दिन बाद-

आइ कानसोनाक गली गली मे आनन्दोत्सव मनाओल जा' रहल अछि । वृद्ध, युवा, बालक, सभ प्रसन्नमुख यत्र-तत्र विचरण कए रहल छथि। नगरक महिला-वर्ग अद्भुत तरहें पसाहनि कए अपन-अपन अङ्ग-विन्यासमे लागि गेलि छथि । सम्पूर्ण नगरमे पत्रपुष्पादिक तोरण बनल अछि । सर्वत्र उमंग उत्साह तथा हर्षक एकच्छत्र राज्य बुझना जाइछ। जेना कानसोनाक प्रत्येक व्यक्ति एक अभूतपूर्व सुखक अनुभव करैत हो । आ' सभक जिह्वापर केवल एकमात्र वाक्य छैक-'कुमार मिथिला-विजय कए आबि गेलाह।' आ' एहि वाक्यक अर्थ छलैक- मिथिला आइसँ वङ्गक एक अंग मात्र थिक, ओकर लगाम आइसँ वङ्गीय पुरजनक हाथ छैन्हि। काल्हि तक मिथिला रानी छलि,आइ ओ चेरी अछि; काल्हि ओ श्लाघ्य शत्रु छलि, आइ तिरस्कृत सेविका अछि।

आ'ओही सन्ध्याकाल महाराज विजयसेन अपन नगरक प्रमुख नागरिक,श्रेष्ठिजन,पुरजन, परिजनक एक महासभा कएल। जकर उद्देश्य छल मिथिलाक विजेता युवराज बल्लालसेनकें हुनक शौर्य्य तथा पराक्रमक हेतु सम्मानित करब।

सुसज्जित राजभवनमे हीरक-जटित सिंहासनपर महाराज विजयसेन विराजमान छथि,आ'हुनक दहिन भागमे एक हाथी-दाँतक आसनपर युवराज प्रफुल्ल मुद्रामे बैसल छथि। सम्पूर्ण सभा-भवन भरल अछि ।

महाराजक संकेतपर महापण्डित चण्डीचरण ठाढ़ भए राजसिंहासनक अभिवादन करैत सभाक समस्त जन-समुदाय कें सुनबैत बजलाह-'श्रीमन् ,युवराज कैं नेनहिं सँ कला, संगीत; प्रभृति विषय दिस अधिक रूचि देखि जे सन्देह हमरा लोकनिक हृदयमे स्थान बना' लेने छल मिथिलाक ई अभूतपूर्व विजय तकर अन्त कए देलक। केओ की विश्वास कए सकैछ जे अपन देशक सार्द्र वातावरण मे पेषित-पालित भेल ई राज-कुलक सुकुमार युवक तीन-तीन अहोरात्र अनाहार रहि, घोड़ैक पीठपर विश्राम करैत, नान्यदेव-सन पराक्रमी शत्रुकें परास्त कए मिथिलासन उर्वर तथा सुसंस्कृत देशकें श्रीमानक विजय परिधिमे आनि देता ? सैनिक लोकनिक पाछाँ हटि गेला पर युवराज एकसरे शत्रु-सैन्यक संहार करैत छलाह, अस्त्र-शस्त्र सन्तुष्ट सेवक जेकाँ हिनक मनोनुकूल कार्य्य करैत छल, रण-कौशल हिनक मित्र बनि सर्वत्र उचित मार्ग प्रदर्शित करैन्हि आ' मृत्यु क्रीतदास-जकाँ हिनक आज्ञा मानि शत्रु-दलमे जाए अपन कार्य्य करैत छल ।

'किन्तु, श्रीमन्, एहि सभ यथार्थ वर्णन मे हिनक प्रशंसा नहि छैन्हि। हिनक प्रशंसाक एक दुइ गोट विषय अछि जे युवराजक चरित्रकें आओर उपर उठा' दैछ। मिथिलाक जाहि राजनर्त्तकीक सौन्दर्य्यक चर्चा एखन सम्पूर्ण आर्यावर्त्त मे पसरल अछि से नर्त्तकी स्वत: हमर युवराजक रूप तथा शौर्य्यपर मुग्ध भए हिनक वरण कए गेलि। रात्रि-दिन ओ युवती युवराजक सेवा-शुश्रूषामे रहि अपनाकें युवराजक कृपापात्री बना लेलक । सम्पूर्ण मिथिलाक सौन्दर्य्यक सत्व जेना ओहि रम्भा, उर्वशीक सन्तान मे निहित छलैक। युवराज ओकरा रूप तथा गुणक उचित आदर कए अपन प्रेमक पात्री बना' लेल । ओकर आकर्षणक जाल बढ़ैत गेलैक, युवराज ओकर प्रणय-पुटमे कमल-कोष -गत भ्रमर जेकाँ आबद्ध छलाह ।

'किन्तु जहिआ ई पता लागल जे मीनाक्षी अपन शरीर समर्पणो कए मिथिलाक किञ्चितो रक्षा करए चाहैछ ओही दिन युवराज अपन प्रणय-इतिहासक कनिओ अपेक्षा नहि राखि ओहि नारी-रत्न कें मौलाएल माला-जेकाँ अपन गरासँ उतारि फेंकि देलैन्हि। एक दिस युवक-हृदयक अतृप्त उत्कण्ठा छल आ' दोसर दिसि वङ्गक महिमाक अभ्युत्थानक जिज्ञासा । किन्तु युवराज कर्त्तव्यक वेदीपर अविलम्ब अपन लालसाक बलि दए देल...'

महापण्डितक भाषण क्रमशः आकर्षक होइत गेल आ' जखन युवराज द्वारा देश प्रसिद्व मीनाक्षीक तिरस्कारक प्रसङ्ग आएल तँ सम्पूर्ण सभा अपन युवराजक प्रति गौरव सँ उल्लसित भए उठल । विजयसेन सस्नेह दृष्टिसँ एक बेरि युवराज दिस देखलैन्हि आ' युवराज नतमस्तक भेल अर्द्धसंकुचित अवस्था मे बैसल रहलाह । परन्तु युवराज

क हृदय -समुद्र मे एहुखन एक बेरि भावनाक एक विचित्र लहरि उठल जे हुनक मर्म पर आघात कए विषादक फेनकें हुनक मुख-तट पर फेंकि चल गेल ।

वृद्ध महाराज 'मीनाक्षी' शब्दक उल्लेख सँ होइत युवराजक मुखपर विषादपूर्ण प्रक्रियाकें देखि हुनका प्रोत्साहित करबाक उपायसँ बजलाह–'महामान्य ,युवराजक वीरता तथा प्रौढ़तासँ यदि वङ्गीय प्रजा प्रसन्न अछि तँ आइसँ हिनका हम ''नि:शङ्क-शङ्करक'' उपाधिसँ भूषित करैत छिऐन्हि। मिथिलाक पूर्वीय अञ्चल जे आइसँ वङ्गीय साम्राज्यक अधीन रहत से हिनके नामपर ''नि:शङ्कपुर'' कहाओत।'

आ' एहि उपधि-वितरणक बाद महाराज अपन महामात्य कें आज्ञा देल जे राज-सभामे मिथिलासँ आनल गेल दुष्प्राप्य पुस्तक सभसँ भरल जे सभसँ बड़का सन्दुकचा अछि से सभासद्कें देखएबाक हेतु सभामे आनल जाए ।

सन्दुकचा आनल गेल । महाराज आज्ञा देल जे युवराज स्वत: उठि अपन एहि सांस्कृतिक लूटिक वस्तुकें जनताकें देखाबथि । युवराज उल्लसित भेल उठलाह आ' मञ्जूषाक पटकें उपर उठाए खोललैन्हि । उपर सँ पचास-साठि अकार्य्यक पुस्तककें बाहर कए आगाँ रखलैन्हि कि एकाएक चौंकि उठलाह । हाथ हुनक रूकि गेलैन्हि। सम्पूर्ण देह मे कम्पन आबि गेलैन्हि । हृदयक स्पन्दन जेना रूकबापर आबि गेल होइन्हि। हुनक स्वेदमय मुखसँ एक चीत्कार बहरएलैन्हि आ' दोसर क्षण ओ अपन दूनू हाथपर एक मृतप्राय, अर्द्धनग्न रमणीकें मञ्जूषासँ बाहर कए राजसिंहासनक समक्ष लए जाए राखि देलैन्हि । सम्पूर्ण सभामे हल्ला मचि गेल । चण्डीचरण अपन आसन छाड़ि दौड़लाह । महाराज सिंहासन पर ठाढ़ भए गेलाह आ' बल्लालसेन किंकर्त्तव्यविमूढ़ भेल ओहि कण्ठगतप्राणा युवतीक शुष्क मुख दिसि तकैत ठाढ़ रहलाह ।

सुवर्णक झाड़ी सँ ओकर मुखमे पानि देल जएबाक प्रयास कएल जाए लागल। रमणी अपन मुख बन्द कए लेलक । ओकर मुखसँ कनिए ध्वनि भेलैक-'वङ्गीय जल...ऊँ हूँ... ।

युवराज धैर्य्यक बान्हकें तोड़ि चुकल छलाह । लज्जा विषादक धाहसँ जरि गेल छल। रमणीकें अपन कोर मे उठबैत बजलाह 'मीनाक्षी...मनकी...।'

रमणीमे किछु चेतना आबि गेल रहैक । जेना ओ अपन कार्य्य सिद्ध कए लेलासँ कनेक जीवन पाबि गेल हो । ओ बहुत कम जोरसँ अवरुद्ध कण्ठें बाजलि- 'युवराज...अहाँक कोर मे हमर अन्तिम क्षण यथार्थमे हमरा आकाशमे उठा' देलक अछि....परन्तु मिथिलाक संस्कृतिक रक्षा तँ ओहूसँ अधिक उठल छैक....।'

युवराज वाष्पित कण्ठ सँ बजलाह । किन्तु मीनाक्षी...एहन दण्ड? एहन आत्मत्याग?'

मीनाक्षी अपन निस्तेज दृष्टिसँ युवराजक मुख दिस तकैत बाजलि-'वल्लभ, जीवन-चक्रक एहि अविराम गतिमे कतेक मीनाक्षीक जन्म् होएतैक जे वङ्गीय युवराजक लालसाक पूर्त्ति करैत रहति किन्तु आइ यदि मिथिलासँ एक मञ्जूषा दुष्प्राप्य सांस्कृतिक ग्रन्थ दुर्लभ भए जइतैक तँ सीता, उर्मिलाक जन्मभूमि परे हम कतेक पैघ कलङ्कक टीका लगा'कें अबितह...ओह....युवराज...प्रियतम...।'

आ' दोसर क्षण मीनाक्षीक निष्प्राण गरदनि युवराजक बाँहि पर लटकि गेल छल; गराक मोतीमाला टूटिकें नीचामे छिड़िआ' गेल छल ।

अनुवाद

अनीता देसाइ

संगतिया

समारोहक रातिये मे, जखन हम सभ पर्दाक पाछां मंच पर जुटैत छलहुं,ओ हमरा बजब' बला सुर सभक मादे कहैत छलाह। हम सदति एहि उमेद मे रहैत छलहुँ जे ओ ई बात पहिने कहताह आ भरि सांझ हुनका लग घुरियाइत रहैत छलहुँ, हुनकर सितार कें मिलबैत आ हुनका लेल पान लगबैत, मुदा ओ हमरा सँ किन्हहुँ नहिं बजैत छलाह । सदिखन हुनकर चारूकात कतेको आन लोक रहैत छल-हुनकर घरबारी आ समारोहक आयोजक, हुनकर मित्र आ शुभचिंतक आ शिष्य-आ ओ सभक संग हँसथि आ बाजथि, मुदा हम जखन लग आबी त' मुँह फेर लेथि । एहि सँ हम आहत नहि होइत छलहुँ: हमरा संग हुनकर ई ढंगे छलनि, हम एकर आदी भ' गेल छलहुँ । हम केवल ई चाहैत छलहुँ जे समारोहक आरंभ हेबा सँ पहिनहि ओ हमरा ई कहि देथि जे हुनका की बजेबाक मोन छनि ताकि हम अपना कें तैयार क' सकी । बिना कनेक थम्हने कि तैयार भेने बिजली जेकां तुरत संगीत मे उतरि जाएब, जेना कि ओ करैत छलाह, हमरा कठिन लगैत छल । मुदा अपना सँ ई कोना कराबी से हमरा सीख' पड़ल ओ से हम केलहुँ । सभ किछु मे ओ आगू होइत छलाह आ हम हुनकर पाछू लागि जाइत छलहुँ ।

आब त' पन्द्रह वर्ख सँ ई हमरा सभक जीबाक ढंग भ' गेल अछि । ई ताहि दिन शुरू भेल जहिया हम पन्द्रह वर्खक रही आ अपन पिताक बनाओल नब तानपूरा जे वादय् सभ बनबैत छलाह आ ओहि मे सँ कएक टा इलम आ विशिष्टताक संग बजबितो छलाह, ओहि सभागार मे ल' गेल रही जतए ओहि राति उस्ताद रहीम खाँ कें सितार बजेबाक रहनि । ओ हमरा पिता कें एकटा नब तानपूराक लेल कहने रहथिन जिनका सभ संगीतकार अपना लेल प्रेम आ संगीतक गहींर ज्ञानक संग बनाओल गेल वाद्यक उत्तम कोटिक लेल जनैत रहथिन । जखन हम सभागार मे पहुँचलहुँ त' ककरो तानपूरा द' देबाक लेल चारूकात तकलहुँ, मुदा सभागार मे अन्हार छल किएक त प्रबंधक कार्यक्रम सँ पहिने संगीतकार सभकें बिजलीक उपयोग करबाक अनुमति नहिं दैत छलाह, आ केवल मंच पर एकटा बल्ब जरैत छल जाहि सँ संगीतकार सभक नान्हिटा घोदा इजोत मे छल आ ओ सभ नमहर डोलैत आ एक तरहें अशुभ छाह सँ घेराएल छलाह । उस्ताद अपन सितार बजा रहल छलाह, आ बीच-बीच मे बिलमिक' अपन संगी सभक संग हँसिक' बाजि लैत छलाह । ओ सभ कियो गप्प मे लागल छलाह आ हमरा कियो नहिं देखलनि । हम प्रवेशद्वार पर बड़ी काल धरि ओहि प्रसिद्ध

उस्तादकें निहारैत ठाढ़े रही जिनका मादे हमर पिता बेस श्रद्धाक सँग बाजल छलाह- ''हे पैसाकौड़ीक चर्च नहिं करब''। ओ हमरा चेता देने छलाह । 'हमरा सभ सँ तानपूरा बनबाक' ओ हमरा सभ कें आदर द' रहलाह अछि''। एहि सँ हम प्रभावित भेल रही आ हुनका निहारैत काल हमरा लागल रहए जे हमर पिता हुनका द' सत्ते कहने रहथि। ओ केवल अपन सितार कें मिला रहल छलाह बस ओहिना आ कोनहुना, मुदा हुनकर आंगुर ईश्वरक आंगुर छल जकरा अपन वाद्य पर पूर्ण नियंत्रण छलैक आ हम बूझि गेल छलहुँ जे कोनो संगीतकार आ ओकर वाद्यक बीच एहेन सम्बन्ध सँ केवल पूर्णते टा बहरा सकैत छल ।

त' हम आस्ते आस्ते गलियारा बाटे आगू बढ' लगलहुँ नवका तानपूरा अपन हाथ मे नेने आ बरोबरि ओहि अस्थिर, गपशप करैत समूहक बीच ओहि व्यक्ति कें निहारैत जे अपने एकदम शान्त, संयत आ उद्देश्यबद्ध छल । मंचक आर लगीच एला पर झबरल केशक नीचां हम हुनकर मुँहकान देखि सकलहुँ, आ मुँहकान सेहो कोनो ईश्वरेक छल: पैघ, गलफर लग प्राय: भारी, मुदा चाकर कपार आ काफी हटल-हटल धधाइत कारी आँखि, से सन्तुलित । हुनकर नाकक पूड़ा आ हुनक मुँह सेहो पैघ, राजसी, मुदा बुद्धिमान आ संयत छल । आ जखन हम हुनकर चेहरा मे नजरि गड़ौने रही, अपना कें एकर सभटा प्रभावशाली बात कहैत, ओ हमरा दिस तकलनि। पता नहि ओ की देखलनि, अप्रकाशित सभागारक अन्हार आ छाँह मे ओ की देखि सकलाह, मुदा ओ मीठ नरमीक संग मुसकेलाह आ हमरा इशारा सँ बजौलाह।'' हँ, की छिय' तोरा? ओ कहलनि ।

तखन हमरा मंचक कात बला सीढ़ी पर तेजी सँ चढ़बाक आ सोझे हुनका लग जेबाक साहस भेल । हम ककरो अनका दिस नहिं तकलहुँ । हम अनका देखबो तक नहिं केलहुँ आ ने अपना प्रति ओकर सभक प्रतिक्रियाक परबाहियें केलहुँ। हम सोझे हुनका लग गेलहुँ जे ओहि जुटानक, मंचक आ बाद मे चलि क' हमर संपूर्ण जीवनक केन्द्र छलाह आ हुनका तानपुरा समर्पित क' देलियनि ।

''वाह नबका तानपूरा, संगीत गली बाला मिश्राजीक ओहिठाम सँ ? तों मिश्राजीक ओहिठाम सँ एलाह अछि?''

''हँ, ओ हमर पिता छथि'' हम फुसफुसेलहुँ, हुनका सोझां मे झुकि क' आ एखनहुँ हुनकर चेहरा मे नजरि गड़ौने ओ ओतए सँ नजरि हटेबा मे असमर्थ, जे तेना ने हमरा अपना दिस, अपना लगीच, खिंचने छल ।''

''की तो मिश्राजीक बालक थिकाह ?'', गहींर, मैत्रीपूर्ण हँसीक संग ओ पुछलनि। तानपूराक तार पर आंगुर फेरलाक बाद ओ एकरा दरी पर राखि देलनि आ अचानक अपन हाथ आगू बढ़ौलनि जाहि सँ हुनकर मलमलक कुर्ताक मेंही,उज्जर बाँहि-पाछु ससरि गेल आ हुनकर बाँहि कें उघार क' देलक जे कोनो खेलाड़ीक बाँहि जेना, सक्कत आ कठगर छल आ जकर तानल त्वचा पर नस सभ मेंहिया क' चिन्हित छल आ हमर दाढ़ी के दुलरौलनि'' की, तों बजबितो छह?'' ओ पुछलनि ।'' हमर तानपूरा वादक नहिं आएल अछि । कत' अछि ओ?' ओ पाछू घुमिक' पुछलखिन।'' ''किएक नहिं अछि एतए ओ?''

हुनकर सभ मित्र आ शिष्य भनभनाए लगलाह । किछु गोटे कहलखिन जे ओ दुखिताह छल, होटल मे छल । किछु गोंटे कहलखीन जे ओकरा संगी सभ भेटि गेलैक

आ ओ ओकरा सभक संग चलि गेल । ककरो ठीक सँ बुझल नहिं छलैक । किछु सोचैत उस्ताद अपन माथ हिलौलनि आ तखन बजलाह, ''लगैत अछि जे ओ पुरान पियक्कड़ फेर पीब' लागल अछि । आब हम कहियो ओकरा अपना लेल बजब' नहि कहबैक। आब ई बच्चे बजाओत, आ तुरत ओ अपने सितार उठा लेलनि आ बजब' लगलाह, वाद्य पर अपन माथ झुकौने, विचारमग्नता आ एकाग्रताक एक तरहक आवरण एना पसरल हुनका चेहरा पर जे हम जनैत रही जे जे प्रश्न हम पुछ' चाहैत छलहुँ ताहि सँ हम खलल नहिं द' सकैत छलहुँ । ओ एक बेर हमरा दिस अझक्के देखलनि आ इशारा सँ हमरा तानूपरा उठेबाक आ बजेबाक लेल कहलनि।''राग दीपक'' ओ कहलनि आ जे सुर लगेबाक छल से ततेक जल्दी नहुँए सँ कहलनि जे यदि हम हुनका प्रति नितान्त सतर्क नहिं रहितहुँ त हुनकर बात नहिं सुनने रहितियनि । आ हम हुनका पाछू बैसि गेलहुँ, अखरा फर्श पर, नबका तानपूरा उठा लेलहुँ जे हमर पिता बनौने छलाह, आ ओ तीनू सुर बजब' लगलहुँ जे ओ हमरा कहलनि-केन्द्रीय सुर, ओकर अष्टक आ पंचक-बेर बेर, बेर बेर, ध्वनिक प्रच्छन्न पृष्ठजालक रचना करैत जाहि पर ओ तत्काल अपन रागक सृजन आ कशीदाकारी करैत छलाह ।

आ एहि तरहें हम उस्ताद रहीम खानक मंडलीक तानपूरा वादक भ' गेलहुँ। तहिया सँ हम हुनका लेल बजौलहुँ अछि, अनका ककरो लेल नहिं । हम आर किछु नहिं केलहुँ अछि । ई हमर कुल्लम जीवन थिक । एखन हम तीस बर्खक छी आ हमर उस्ताद बुढ़ाए लगलाह अछि, आ बेसीकाल ओ सुखैल उकासी सँ जे हुनका तंग करैत छनि, वादन कें बीच मे रोकि दैत छथि, आ ओ एकरा शान्त करबाक लेल जतेक लेबाक चाही ताहि सँ बेसी हफीम लैत छैथि-ई हम हुनका अपनहिं दैत छियनि किएक त' ओ बरोबरि ई हमरे कहैत छथि । हम सभ सगर भारत गेल छी आ प्रत्येक ॠतु मे प्रत्येक नगर मे बजौने छी । ई हुनकर जीवन छनि आ हमरो। ई जीवन, ई संगीत, ई शिष्य समुदाय, हमरा सभक साझी अछि । एहि संसार मे हमरा लेल आर की संभव भ' सकैत अछि ? किछु गोटे हमरा हुनका सँ फुटेबाक लेल लोभेबाक कोशिश केलनि अछि मुदा हम हुनका संग रहलहुँ अछि, आर कथूक कनेक्को बेसीक इच्छा नहि करैत।

मुदा हमरा सभक संसार संगीत द्वारा ततेक निर्मित, आ निरूपित आ जुटल नहिं अछि जतेक कि ठोस सहरजमीन पर मानवीय संबंध-प्रेमक संबंध द्वारा। कोनो अमूर्त तत्व नहिं, जेना कि संगीत, अथवा बौद्धिक तत्व, जेना कि कला, अपितु यर्थाथक दैनंदिन स्तर पर जील गेल एकंटा सामान्य मानवीय तत्व-प्रेमक तत्व। हम त' सएह मानैत छी । नहिं त' आर की अछि जे हमरा सभ कें एक संग बुनने रहैत अछि जखन हम सभ बजबैत छी, जाहि सँ हुनका अपने बुझबा सँ पहिनहिं हमरा हुनकर प्रत्येक अलग चरण बुझल रहैत अछि, ओ हमरा पर भरोस क' सकैत छथि जे हम सदति ओत' रहब जत' ओ हमरा चाहैत छथि । हम सभ कखनहुँ फराक नहि होइत छी: हम सभ संगहि विदा होइत छी आ संगहि पहुँचैत छी । की ई प्रेम नहिं थिक? कोनो विवाह एहि सँ वेसी अन्तरंग नहि होइत अछि ।

जखन हम नेना रही त' पृथ्वी पर हमरा लेल आर कतेको चीज छल । निस्संदेह संगीत सदति महत्वपूर्ण छल, एकटा एहेन परिवारक प्रमुख गृह-देवता जे परम्परा सँ संगीत प्रिय छल । हमर घरक बीच वला हॉल वाद्य बजेबाक लेल छल जाहि लेल

हमर पिता, आ हुनका सँ पहिने हुनकर पिता, प्रसिद्ध छलाह । एहिमे सँ केवल एकर कारीगरीक ध्वनियें टा नहिं-ठोकनाइ, खटखटेनाइ, विन्यास आ सुर मिलेनाइ-अपितु संगीतोक ध्वनि बहराइत छल । ओत' निरंतर संगीत स्पंदित होइत छल, कखनहुँ सुरतालक संग आ कखनहुँ बिना सुरतालक, हमर घरक वातावरण मात्रक धर्मः गाढ़, असंख्य हेरफेर सँ बनल आ कखनहुँ निःशब्द नहिं । हम अबोध नेना रही, प्रायः चारि बर्खक, जखन हमर पिता हमरा प्रत्येक भोर मे चारि बजे उठाएब शुरू केलनि ताकि हम हुनका संग नीचा हॉलमे जा क' तानपूरा, हारमोनियम, सितार, आ तबलो तक पर हुनका सँ संगीत सीखि सकी । ओ ई सभ किछु बजा सकैत छलाह आ देख' चाहैत छलाह जे हमरा कथीक लेल अभिरूचि अछि । ओहि नगर मे कएक पुश्त सँ वाद्य निर्माता सभक रहल ओहि गलीक ओहि लम्बा, शिकस्त घ'रमे चूँकि हम सभ वस्तुतः संगीतेक सांस लैत छलहुँ, हम कोनो अभिरूचि देखायब तकर कोनो प्रश्ने नहिं छल। हम पलथा मारि क' पटिया पर हुनका सोझा मे बैसी आ बजाबी, आ ताहि सँ धीरे-धीरे आलोड़ित होइत जागी, आ अन्ततः निन्न एकटा आवरण जेकां, एकटा घनगर धुआं जेकां जे रातिक छल, हमर ऊपर सँ उतरय, तखन तक जखन तक कि हमर अस्तित्वक आन्तरिक सत्त सोझा नहि आबि जाए, आ हमर पिता ई साफ-साफ देखि सकथि-जे हम संगीतकार छी, निर्माता नहिं, अपितु संगीतक सृजनकर्ता, इएह ओ देखैत छलाह । ओ हमरा सभ टा राग आ रागिनी सिखबैत छलाह-तथा अपन बेसुर, कर्कश आवाज मे तेजी सँ लगातार सवाल पुछैत हमर ज्ञानक जांच करैत छलाह । ओ सभ तरहें हमर उस्ताद सँ भिन्न छलाह' किएक तँ ओ अपन उज्जर झवरल दाढ़ी पर सौंसे पानक पीक लेभारि लैत छलाह, लगैत छल जेना हम जे किछु करैत छलहुँ ताहि सँ ओ अवगत रहैत छलाह आ बेसी काल हुनकर हाथ तेजी सँ आगू बढ़ैत छल हमर कान पकड़बाक लेल आ तावत काल तक ऐंठबाक लेल जावत तक कि हम चिचियै नहिं लागी । एहेन पाठ सँ भागब हमर खगता छल, आ चूंकि हम नान्हि टा छट्टू नेना रही, हम ई दिन मे कएक बेर कएल करी, अपन बुजुर्ग सभ कें टिरकी दैत आ खड़गर सिरही पर दरबर मारैत गली मे चलि जाइत रही जत' हम मोहल्लाक बेसी कपरगर, बेसी अहदी आ कम देखरेख मे रह' बला छौड़ा सभक संग गुल्लीडंडा आ खो आ गोली खेलाएल करी ।

एकटा समय छल जखन हम संगीत सँ बेसी गोलीक लेल रकटल रहैत छलहुँ, खासक' एकटा गाढ़ बैगनी, लगभग कारी गोलीक लेल जाहि मे खड़ या जड़ि जेकाँ ऐंठल रेहा छल आ जे हमरा ताबत तक प्रत्येक मैच मे जितबैत छल जावत कि हमर कुर्ताक जेबी जितलाहा गोली सँ उमसाम आ ओकर ओजन सँ फाट' नहिं लगैत छल।

अपना माएक देल मधूरो हमरा कतेक नीक लगैत छलः-बल्कि हम त कहब जे निश्चिते ओहि साधारण, भनभनाइत, चनैलं स्त्री सँ बेसी जे ओकरा बनबैत छल। ओ कखनहुँ हमरा लेल जीवंत नहिं होइत छल, ओ कोनो दुर्बोध, भीतरी जीवन जिबैत छल, रोगाह आ झांपलतोपल, आग्रहशून्य आ अनाकर्षक । मुदा की अपूर्व हलुआ ओ बनबैत छल, की अपूर्व जिलेबी ! हम ओ सभ ततेक धिपले खाइत छलहुँ जे हमर जीहक चमड़ा पाकि क' ओदरि जाइत छल । हम अपन भाइ आ बहिन सभक बखरा चट क' जाइत छलहुँ आ पूरा परिवारक गारिमारि सहैत छलहुँ ।

फेर जखन हम पैघ भेलहुँ, त एकटा समय छलैक जखन हमरा लेल खाली सिनेमे टा सभ किछु छल । हम सप्ताह मे चारि, पाँच छओ टा तक सिनेमा देखी, चुप्पीक लेल खलिये पैरे राति मे अपन कोठली सँ ससरि जाइ, पिता वा माए वा आन ककरो सँ चोराओल पाइ हाथ मे गसियौने, आ तखन अन्तिम शो मे समय पर पहुँचबाक लेल राति मे गनगनाइत बाजार बाटे निच्छोहे दौड़ी । मीना कुमारी आ नर्गिस हमरा लेल स्वर्गक रानी छलीह । हम अपना कें हुनका सभक पर्दा परहक प्रेमीक जगह पर राखि दी आ गद्दाबला सीट पर बैसल, अपन दुनू पैर कें अपन नीचाँ समेटने अपना के उत्तेजित, रोमांचित सक्रिय आ आक्रामक अनुभव करी आ अपन मुँह बौने दमकैत, तिलियाफुलिया वाली एहि रानी सभकें एकटक देखैत, चनाचूरक पुड़िया बिनु खैले हमर हाथ मे धैले रहि जाए । हुनका सभक आकर्षण, हुनका सभक लालित्य हमर जीवनक खाली जगह कें भरि दैत छल आ ओकरा न'ब न'ब रंग, न'ब न'ब लय प्रदान करैत छल । आ तखन हम आन मोहल्लाक स्त्री सभक प्रति स्त्रीक रूप मे सजग भेलहुँ, प्रौढ़ा विवाहिता सभक प्रति जे अपन डांड़ पर हाथ धेने अपन दरवज्जा पर ठाढ़ रहैत छलीह, दुफरियाक ओहि बेला मे जखन जीवन थम्हि जाइत छल, आ एहि सँ पहिने जे सांझ खनक काज हुनका सभ कें गछाड़ि लेनि, घनेरो सम्भावना प्रस्तुत करैत छल, आ जुअनकी छौड़ी सभक प्रति जे सदिखन चंचल रहैत छल, कखनहुँ थिर नहिं, छूल जेबा सँ कंछी कटैत। ओ सभ मैल पानि मे बरकटि जेकां छल, किएक त' ओ सभ कतबो फूहड़ि किएक ने छल, पर्दा परहक नायिका सभ सँ कतबो भिन्न ओकरा सभ मे कखनहुँ दबल मुसकी, कनडेरिये ताकब, आ चोटीफित्ता आ आलरि झालरिक प्रलोभनक अभाब नहिं रहैत छलैक । किछु गोटे हमर आंखि महक भावक जवाब दैत छल, जे हम चाहैत रही से गछैत छल, प्रायः बाद मे, अन्तिम शो'क बाद, एखन नहिं ।

मुदा ई सभ किछु हमरा सँ भहरि गेल, सभ किछु कात महक छाँह मे बिला गेल, जखन हमरा अपन उस्ताद सँ भेट भेल आ हम हुनका लेल बजाएब आरंभ केलहुँ। ओं हमर माएक मीठ हलुआ, सिनेमाक नायिका, गलीक सुन्दरी सभ, गोली आ चोराओल पाइ सभटा सुख आ समृद्धि जे हम एखन तक संगीत गली मे अपन पिताक मकान मे अस्तित्वक कठोर पाथर सभ सँ निचोड़ि लेबाक व्योंत केने रही, सभकिछुक जगह ल' लेलनि। आब हमरा एहेन खेलौना सभक काज नहिं छल,एहेन खिलौना आ सपना सभक। हमरा जीवन मे अपन उद्देश्य भेटि गेल छल, आ बिना हिचकिचाहटिक एकरा पाछू लगने आ अपन कोनो भाग कें बिना पाछू छिपने, हमरा एहेन संतोष भेटैत छल जे हमरा आब कथूक सेहेन्ता नहि छल ।

हँ, ई बात ठीक जे संगीत समारोहक हमरा सभक एहि दौरा सभ सँ हम किछु पाइ कमा लैत छलहुँ, जाहि सँ अपन पिताक अन्तिम समय आ बिमारी मे हुनकर तालता कएल भ' जाइत छल । हम बियाहो केलहुँ । माने ई, जे हमर माय कोनो परोसियाक बेटी सँ, जे हुनका नीक लगैत छलनि, कोनहुना हमर बियाह करा देलनि। ओ युवती हुनके संग रहैत छल । हम कहियो काल ओकर भेट करैत रही । हम केवल ओकर नाम आ चेहरा टा मोन पाड़ि सकैत छी । ओ हमर माएक संग नीक जकां अछि आ हमरा तंग नहिं करैत अछि । अपन उस्तादक पाछू लागल रहबाक लेल तथा हुनका बास्ते बजेबाक लेल हम निर्मुक्त रहैत छी ।

हमराजनैत अपन परिवार आ बाकी दुनियाक प्रति हुनको सएह रबैया छलनि। ओना जे हो, हम त' हुनका अपन सभक संगीत, अपन सभक समारोहक अलावा आन कोनो बात मे कनेको रूचि देखबैत नहिं देखने छियनि । प्रायः ओ विवाहित छथि। एहितरहक किछु हम सुनने छी मुदा हुनकर कनियाँ कें नहिं देखने छियनि आ ने इएह बुझल अछि जे ओ हुनका लग जाइत छथि । प्रायः हुनका धियापुता छनि आ एक दिन कहियो मंच पर एकटा बालक आओत आ अपन पिताक संग संगत करब ओकरा सिखाओल जाएत । एखन तक से नहिं भेल अछि । हँ, ई ठीक अछि जे दौरा सभक बीच मे हम सभ कहियो काल किछु दिनक आरामक लेल घर अबस्स जाइत छी । अनिवार्य रूप सँ उस्ताद आ हम दुनू गोटे एहि 'छुट्टी' सभकें बीचे मे खतम क' दैत छी आ रियाज लेल नगरक हुनकर घर मे घुरि अबैत छी । जखन हम आपस अबैत छी त' ओ ने त' हमरा सँ किछु पुछिते छथि ने गप्पे करैत छथि । मुदा जखन ओ हमर पैरक आहटि सुनैत छथि त एकरा चिन्हि जाइत छथि से हम जनैत छी, किएक त' ओ अधमुसकी मुसकाइत छथि, जेना अपना पर हमरा पर व्यंग्य क' रहल होथि, आ तखन अपन मलमलक कुर्ताक बाँहि कें पाछू ससारैत छथि, अपन सितार उठबैत छथि आ हमरा दिस इशारा करैत छथि । ''राग देश' ओ कहि सकैत छथि, वा ''मल्हार'' वा मेघ'' आ हम हुनका पाछाँ बैसि जाइत छी, अखरे फर्श पर, आ रागक निर्माणक लेल हुनका जाहि सुर सभक काज छनि से हुनका लेल बजबैत छी ।

अहाँ सोचि सकैत छी जे अपन संबंध कें हुनकर हमर खगता कें, हमर तानपुरा पर हुनकर भरोस कें हम बढाचढ़ाक' कहि रहल छी । अहाँ कहि सकैत छी हुनकर मंडलीक आन सदस्य सभ बेसी महत्वपूर्ण भूमिका निमाहैत छथि । आ हम मानब जे अहां ठीक भ' सकैत छी, मुदा केवल बहुत उत्थर रूप मे। ई एकदम साफ अछि जे तबलावादक जे हुनका संग संगत करैत अछि से ''महत्वपूर्ण'' भूमिका निमाहैत अछि-काफी प्रबल आ आक्रामक कौखन काल त' कड़कदार भूमिका । मुदा ओकर ई ''महत्व'' की थिक? ई त अपरिहार्य नहिं अछि। जेना कि श्रेष्ठ आलोचक संभ सेहो मानैत छथि जे हमर उस्ताद अपन सर्वोत्तम रूप मे तखन होइत छथि जखन ओ आरंभिक अवतरण, बिना संगतक, आलाप बजबैत छथि । ई ओ आस्ते-आस्ते बजबैत छथि, विचारमग्नता सँ, एहेन शुद्धता आ संवेदनशीलताक संग जे हम कहियो बिना नोराएल आँखिये एकरा सुनिये नहिं सकैत छी। मुदा जखने रामनाथ तबला सभ पर थाप आ आंगुरक संचार सँ सम्मिलित होइत अछि, संगीत द्रुत, निधड़क आ प्रतियोगितापरक भ' जाइत अछि, आ केवल हमरे टा विचार मे नहिं अपितु कतेक आलोचकोक विचार मे, ई न्यूनतर मूल्यक भ' जाइत अछि । श्रोता निश्चित रूपें शान्त आलाप सँ बेसी गतक आनन्द लैत अछि आ हमरा सँ बेसी रामनाथ पर ध्यान दैत अछि। कौखन काल क' ओ अपन प्रदर्शनक लेल वाहवाही सेहो पबैत अछि, खासक' कोनो विलक्षण अवतरण मे, तखन ओ हमर उस्तादक बराबरी वा हुनका मातो तक क' दैत अछि । तखन हमर उस्ताद ओकरा दिस घुमैत छथि आ मुसकाइत छथि, कनेक्के, प्रशंसा मे, वा चुपचाप माथो हिलबैत छथि, किएक त ओ एतेक विशाल-हृदय आ उदार छथि, हमर उस्ताद। ओ कखनहुँ से हमरा संग नहिं करैत छथि। हम पाछू मे बैसैत छी, अपन उस्ताद आ हुनकर संगतकारक अढ़ मे लगभग नुकाएल। हमरा कोनो एकल अवतरण बजेबाक नहिं रहैत अछि । ने त' हम अपन उस्तादक रागक

पछोर धरैत छी आ ने कोनो तरहक प्रतियोगिता मे उतरैत छी । रागक बजबा काल हम लगातार अपन तानपूराक तीनू तार पर अपन आंगुर चलबैत रहैत छी, बेर बेर, बेर बेर, मात्र एक तरहक गुंजन उत्पन्न करैत जाहि सँ ध्वनिक कोनो अन्तराल कें भरल जा सकए, एक तरहक रस्ता बनेबाक लेल, अथवा पाटि, जाहि पर हमर उस्ताद स्थिर रहि सकथि, ताकि ओ ओहि रागक मूल सुर सभ सँ भटकि नहिं जाथि जाहि सँ हम हुनका बन्हने रहैत छी । चूंकि हम कखनहुँ प्रतियोगिता नहिं करैत छी, कखनहुँ हुनका पर सँ अपना पर ध्यान बहटारबाक आग्रह नहिं, रखैत छी, कखनहुँ हुनका वादन मे हुनकर बराबरीक प्रयास नहिं करैत छी, हम ई मानैत छी जे हम हुनकर असली संगतिया छी, निश्चित रूपे हुनकर बेसी असली मित्र छी । हमर प्रशंसा मे ओ कहियो मुसका आ माथ हिला नहिं सकैत छथि । मुदा ओ हमरा बिना काज नहिं चला सकैत छथि। हमरा बस एतबैक पुरस्कार चाही छांह जेकां हुनका संग लागल रहबाक लेल। हम एहि सँ रत्तियो भरि विचलित नहिं होइत छी जखन रामनाथ, जे उजड्ड अछि आ रोइयां सँ सोहरल अछि, आ अपन कमीजक भीतर मे अपन बड़का टा पेट कुड़ियबैत अछि । आ धोबि जेकाँ अपन कान मे सोनाक बाली पहिरैत अछि, मंच पर चढ़बा काल हमरा अपन पएर सँ छिटकी लगा दैत अछि, जखन ओकरा हम टेबुल परहक सभटा पुलाव अपनहिं चट कैरत आ हमरा लेल केवल थोड़ेक सेराएल बिना खमीरक रोटी टा छोड़ैत देखैत छियैक । हम ओकर असल मूल्य, कि ओकर कमी बुझैत छियैक, आ केवल ओकरा दिस एहेन नजरिये ताकि दैत छियैक जाहि सँ ओकरा ई बात बुझबा मे आबि जाइक।

केवल एक बेर हमर सन्तोष, परितोष हमर डगमगा गेल छल । एहि बात कें अहां लग खोलैत हमरा लाज होइत अछि, ई एहेन बेकूफी छल हमर । ई ओना बहुत कनियें काल रहल मुदा जखन हम एकरा मादे सोचैत छी त' एखनहुँ हमरा अपगराइन लगैत अछि आ ई अपन बेकूफी बुझाइत अछि। दरअसल एहि मे हम अपन नेनपनक ओहि मथसुन्न, गोली खेलाइ बला संगी सभक कारण पड़ि गेल रही। जखन एक बेर हम ओकरा सभ कें अपन पाछां छोड़ि आएल रही, त' हमरा कहियो उनटिक' पाछू नहिं तकबाक चाहैत छल । मुदा हमर गृह-नगर मे रिहर्सलक बाद, समारोह सँ किछु घंटा पहिने, ओ सभ हमरा लग आएल । ओ सभ चोरा क' अन्हार हॉल मे आबि गेल छल आ पछिला पांत में बैसि गेल छल, बीड़ी सिगरेट धुकैत आ हँसीठट्ठा करैत आ गोपनीय, दबल ढंग सँ हँसैत जे तइयो मंच तक आबि जाइत छल,हुनका लोकनिक ध्यान भंग करैत जे संगीत मे एतेक बेसी नहि डूबल रहथि जे हुनका सभकें बाहरी दुनियाक सोहे नहि रहनि। ओना उस्ताद आ हम कखनहुँ अपन ध्यान भटक' नहिं दैत छलहुँ आ संगीत मे तल्लीन रहैत छलहुँ । जखन हम सभ बजबैत छी त' सभटा बाधा कें अपन चित्त सँ बाहरे रोकि देबाक हमरा सभक क्षमता हमरा सभक बीचक एकटा एहेन समानता अछि जाहि पर हमरा गर्व अछि।

जखन हम हॉल सँ बहराइत छलहुँ त हम देखलहुँ जे ओ सभ एखनहुँ मुँहथरि पर ठाढ़े छल, रंगीन कमीज आ तेल सँ औसल जुल्फी आ भड़कदार जूताक गड्डमड्ड घोंदा जेकाँ। ओ सभ हमरा चारूकात जुटि गेल, आ जे बात ओ सभ कहलक गली मे हमरा सभक नेनपनक खेलधूपक मादे, ताही सँ हम ओकरा सभ कें चिन्हलियैक। आन सभ बात मे ओ सभ हमरा सँ एकदमे भिन्न छल ई साफ देखबा मे अबैत छल

जे हम सभ विपरीत दिशा मे यात्रा केने छलहुँ । ओकर सभक असर्ध बुशर्टक रंग आ ओकर सभक तेज आवाज सँ तुरंत हमर माथ दुखाए लागल आ हमरा लेल मुसकाइत रहब कठिन भ' गेल, जखन कि हम जनैत छलहुँ जे हमरा ओकरा सभक प्रति नम्र आ स्नेहशील हेबाक चाही, किएक त' हमर कला आ हमर हैसियतक चलते हमरा सँ एही तरहक व्यवहार अपेक्षित छल। हम ओकरा सभ कें चाहक दोकान मे ल' जाए देलियैक आ अपना लेल चाह मगब' देलियैक । कनेक काल तक हम सभ घरदुआर, खेलधूप, अपन अपन परिवार आ हीतमीतक गप्प करैत रहलहुँ । तखन ओहि मे सँ एक गोटे-हमरा जनैत, अजित कहलक "भाइ, तों त एतेक नीक बजबैत छलें । तोहर पिता कें तोरा ऊपर बहुत गर्व छलनि। ओ सोचैत छलाह जे तो पैघ उस्ताद बनबें । ओ हमरा सभ कें कहल करथि जे एक दिन तों महान संगीतकार बनबें । आ ई की क' रहल छें तों, मंचक पाछू मे बैसि क, रहीम खानक लेल तानपूरा बजबैत?"

हमर पिताक मुइलाक बाद कियो कहियो हमरा सँ एहितरहें एहेन आवाज मे नहि बाजल छल । हमरा सँ चाह जांघ पर छिलका गेल । हम तेना अबचंक भ' गेलहुँ जे हमर माथ बेसम्हार उधकि गेल । हम आधा ठाढ़ भ' गेलहुँ आ हमरा लागल जे हम ओकर नरेटी पकड़ि लेबैक आ चभने रहबैक तावत तक जावत तक ओकर ओ सभटा घिनौन शब्द आ घिनौन विचार मोका क' रक्तहीन नहिं भ' जाइ फेरो बहरेबा सँ असक नहिं भ' जाइ । मुदा हम ताहिं तरहक लोके नहिं छी । हम जनैत छी जे हम अब्बल, बहुत अब्बल लोक छी । हम खाली अपन कपड़ा पर चाह पोछि लेलहुँ अपन पैर दिस टकटकी लगौने ओतए ठाढ़ भ' गेलहुँ । हम अपन टूटल पुरना चप्पल कें, जाहि पर चाहक टघार छलैक, आ उज्जर खादीक अपन ढीलढाल कपड़ा कें एकटक देखैत रहलहुँ । हम अपना कें कहलहुँ जे हम ओकरा सभ सँ एतेक भिन्न तरहें जिबैत छलहुँ, जीवन मे हमर लक्ष्य आ उद्देश्य ओहि सभ किछु सँ एतेक भिन्न छल जे गलीकूचीक ओहि इसखीदार अबंड सभक माथ मे अटि सकैत छल, जे यदि हमरा सभक बीच समझदारीक अभाव छल त' हमरा एहि सँ चकित नहिं हेबाक चाही वा एकर अधलाह नहिं मानबाक चाही ।

"ई कोन तरहक वाद्य थिक, तानपूरा ?" अजित एखनहुँ जोर जोर सँ कहि रहल छल । "कोनो संगतो तक नहिं । ई किच्छु नहिं थिक । एकरा कियो बजा सकैत अछि । बस केवल तीन टा सुर, बेर बेर, बेर-बेर । हमहुँ एकरा बजा सकैत छी, "ओ जोर सँ बजैत अपन बात खतम केलक, जाहि सँ आन सभ कियो ओकर पीठ थपथपौलक आ ओकर कबिलती पर हँसी सँ आगू झुक्कि गेल ।

तखन भोला हमरा दिस झुकल । ओ ओकरा सभ मे सभ सँ बेसी संयत छल, ओना बैगनी आ उज्जर फूलक छीट बला कमीज पहिरने छल आ अपन मोछ कें आदक रंग मे रँगि नेने छल । हमरा बूझल छल ओ दू बेर पहिनहिं सेन्हकट्टी आ चोरिक लेल जहल जा चुकल छल । आ तइयो ओकरा झुकि क' हमरा सँ सटि क' लगभग हमरा छुबैत, ई कहबाक जुर्रति भेलैक जे' भाइ, तों फेर सँ सितार बजो । तोरा त' सरोद आ वीणा , बजब' अबैत छौ । कनेक रियाजसँ तों अपनहिं बड़का उस्ताद भ' सकैत छें । हम सभ तोरा ई अपने नीकक लेल कहैत छियौ। जखन तों नामी भ' जेबें आ अमेरिका जेबें तखन तों हमरा सभ कें एहि सुझावक लेल धन्यवाद देबें । मंचक पाछू मे बैसिक' आ ओ फरूआत तानपूरा बजा क' तों किएक अपन

जीवन बिता रहल छें, जखन कि आन कियो तोरा सँ तोहर सभटा नाम आ तोहर सभटा कमाइ हँसैथने जाइ छौ ।"

एना लगैत अछि जे ओ सभ हमरा पर प्रहार करबाक नेआर क' नेने छल । हमरा अनुभव भेल जेना कि ओ सभ हमरा ऊपर चढ़ि रहल हो, हमर कंठ मोकि रहल हो, हमर केश पकड़ि क' तीरि रहल हो आ हमरा घिसियौने जा रहल हो । ओकर सभक शब्द मुक्का छलैक, आ जे विचार ओ सभ हमरा पर फेकि रहल छल से प्रहार । हम पिटाएल या ध्वस्त अनुभव कलहुँ, आ अपन अन्तिम जोर लगाक' ओकरा सभकें झटकि देलहुँ, दूर हटा देलहुँ आ टेबुल आ कप आ प्लेट कें बगल करैत, चाहक दोकान सँ बाहर भागि गेलहुँ । हमरा लगैत अछि जे ओ सभ हमरा पछुएलक किएक तो हम सोर पाड़बाक आवाज सुनलियैक जखन कि हम गली बाटे भागल जाइत रही, लोक सभकें धकियबैत आ बस कनिये लए रिक्शा, तांगा आ बस सँ पिचेबा सँ बचैत । दुफरिया छलैक, गली मे भीड़ छलैक, धूरा आ धुआं सँ दिनक इजोत धोन्हिया गेल छलैक। हमरा सभकिछु घिनौन जेकां भ्रष्ट जेकां, किछु अनैतिक आ कुरूप जेकां, देखबा मे आएल आ हम दौड़ैत एकरा सभ कें धकिया क' कात केने गेलहुँ, आगू बढ़ैत गेलहुँ । आ हम लगातार सोचि रहल छलहुँ । की ओ सभ ठीक कहैत अछि ? की हम अपनहिं सितार बजा सकैत छलहुँ ? वा सरोद वा वीणा? आ अपनहि उस्ताद भ' सकैत छलहुँ ? ई बात एंहि सँ पहिने हमरा मोन मे आएलो नहिं छल। हमर पिता ई सभ वाद्य बजाएब हमरा सिखौने छलाह आ हमरा कठोरता सँ अनुशासित केने छलाह, मुदा ओ कहियो हमर प्रशंसा नहि केने छलाह वा ने ई संकेत केने छलाह जे हम उच्च कोटिक संगीतकार भ'सकैत छी । हम ई वाद्य सभ बजौनाइ औहिना सिखने रही जेना कमारक बेटा सहजहिं चौकी आ टेबुल आ ताख बनौनाइ सिखने रहैत वा बनियाक बेटा अन्नतौलब आ बेचब आ पाइ कमाएब सिखने रहैत । मुदा हम एहि सभ वाद्य पर रियाज केने रही आ जे राग ओ हमरा बजैब सिखौने रहथि से बजौने रही, एकरा कलाक रूप मे वा अपना कें कलाकारक रूप मे सोचने बिना। प्रायः हम बुड़बक, अलबौक बालक रही । हमर पिता से बरोबरि कहैत रहथि । नहिं, ई छौड़ा सभ जे संगीत गलीक हमरा सभक मकानक अन्हार हॉल मे हमरा बजबैत सुनने छल, से हमरा कहलक जे हम अपनहिं उस्ताद भ' सकैत छलहुँ, मंचक बीच मे बैसि सकैत छलहुँ, विशिष्ट श्रोता सभक लेल बजा सकैत छलहुँ आ अपन वादनक लेल वाहवाही ल' सकैत छलहुँ । की ओ सभ ठीके कहैत छल? की हम अपन जिनगी नष्ट क' देने छलहुँ ?

जखन हम दौड़ैत आगू बढ़ैत रही, सीधा कनैत, त अपन जीवन में पहिल बेर हम एहि सभक मादे सोचलहुँ, आ ओ सभ भयावह विचार छल-पैघ,भारी, भयौन, जे हमरा परास्त आ ध्वस्त करबा पर उतारू छल । हम अपना कें एकटा लोहाक रेलिंग सँ सटल अनुभव केलहुँ । एकर छड़ सभकें पकड़ने, धूरा आ गर्दा सँ भरल नगरक पार्क मे नोराएल आँखिये फुलाइत सर्वजायाक क्यारी आ नारिकेरक सनगर गाछ सभहक पाँत कें देखैत, हम ओहि रेलिंग सँ लटकल रहलहुँ, सिसकैत, तखन तक जखन कि हम सुनलहुँ जे हमरा कियो किछु कहि रहल अछि-प्रायः पुलिसक सिपाही भिखभंगा बा प्रायः बस कोनो दयालु बटोही, 'की, कोनो दिक्कत ?' ओ हमरा पुछलकै । 'की कोनो दिक्कत, बौआ ?' हम ककरो सँ गप्प नहि कर' चाहैत

छलहुँ आ ओकरा दिस बिना देखने ओकरा झमारि देलहुँ आ फाटक तकलहुँ आ पार्कक भीतर गेलहुँ, अपना कें संयत करैत आ अपना विचार कें व्यवस्थित्त करैत ।

किछु पैघ झांखुड़ सभक बीच मे हमरा एकटा रस्ता भेटल, आ हम ओतए टहल' लगलहुँ, एसकर, सोचबाक प्रयास करैत। कनलाक बाद आब हम कनेक बेसी शान्त अनुभव करैत छलहुँ । हमर माथ बहुत बेसी दुखा रहल छल मुदा तइयो हम बेसी शान्त छलहुँ । हम अपना सँ संवाद कर' लगलहुँ ।

जखन हमरा पहिल बेर अपन उस्ताद सँ भेट भेल छल त हम पन्द्रह बर्खक किशोर रही-बुड़बक आ सुधबौक किशोर, जेना कि बेसी काल हमर पिता हमरा कहैत रहथि। जखन हम मंच पर हुनका ओ तानपूरा देबाक लेल गेल रही जे ओ हमर पिता कें बनेबाक लेल कहने रहथिन, त हम हुनका चेहरा मे महानता देखने रही, एकटा वास्तविक नेताक संयम आ विवेक आ कृपा । आ तुरत हमरा अपन तानपुरे टा नहिं अपितु अपन पूरा जीवन हुनका सुपुर्दक' देबाक इच्छा भेल रहए । हमरा शरण मे लिअ', हम कह' चाहने रही, शरण मे लिअ' हमरा आ आगू ल' चलू । हमरा देखाउ जे कोना जीबी, हमरा अपना संग जीब' दिअ, अपना ल'ग आ हमरा मदति करू हमरा पर कृपा करू। हँ, हम ई शब्द सभ बाजल नहि रही । ओ हमरा सँ तानपूरा ल' नेने रहथि आ हमरा अपना लेल एकरा बजाब' कहने रहथि । ई ओहि शब्द सभक हुनकर जबाब रहनि। जे हम नहि बाजल रही मुदा तइयो ओ ओकरा सुनि नेने रहथि । 'हमरा लेल बजाब'' ओ कहलनि- आ एहि शब्द सभ सँ ओ हमरा सृजित केलनि, हमर जीवन कें सृजित केलनि, एकरा रूप आ विशिष्टता आ उद्देश्य देलनि । ओ हमर जन्मक घड़ी छल आ ओ हमरा लेल माए आ बाप दुनू छलाह । ओ हमरा जन्म देलनि-भैया कें, तानपूरावादक कें ।

ओहि सँ पहिने हमर कोनो जीवन नहिं छल, हम किछु नहिं छलहुँः एकटा मैल कुचैल, भुक्खड़, गलीकूचीक छौड़ा जे गली मे आन बहबाँड़ि आ अबंड सभक संग बौआइत छल । हम खाली एही टा दुआरे संगीत बजौने रही जे हमर पिता हमरा सँ बजबौने रहथि, हमर प्रत्येक गलतीक लेल हमरा आंगुरक पोर पर मारैत आ हमर कान ऐंठैत । हम अपन माए सँ पाइ आ मिठाइ चोरौने रही । हम किछु नहि रही। आ ककरो एकर परबाहि नहिं रहैक जे हम किछु नहिं रही । ई त उस्ताद रहीम खान छलाह जे हमरा देखलनि, एकटा खाली हॉलक छांह मे अपन हाथ मे तानपूरा नेने उकड़ू भ'क' नुकाएल आ अपना लग एबाक लेल कहलनि आ ई देखौलनि जे अपन जीवनक की करी । हमर सभ किछु हुनके देल अछि, हमर जीवन तक हुनके देल अछि ।

हँ, एकटा महान उस्तादक लेल तानपूरा बजाएब हमर नियति छल, हुनका पाछू ओतए बैसब जतए ओ हमरा देखियो नहिं सकैत छथि, आ ओ सुर सभ बजाएब जकर हुनका एहि लेल खगता छनि जे प्रेरणाक वशीभूत भेला पर ओ अपन रचनाक सीमा सँ बाहर नहिं होथि । हम हुनका चुपचाप आ प्रच्छन्न रूप मे ओ सामग्री दैत छियनि जाहि पर ओ काज करैत छथि, जाहि सँ ओ ओहि महान संगीतक रचना करैत छथि जकरा लेल सगर संसार हुनका सँ प्रेम करैत छनि । हँ, हुनका लेल त कियो तानपूरा बजा सकैत छल, ओ काज क' सकैत छल जे हम करैत छी । मुदा ओ अनका ककरो नहिं लेलनि, ओ हमरे चुनलनि । ओ हमरा हमर जीवन देलनि, हमरा नियति देलनि। की हम हुनका नहिं कहि सकैत छलियनि? की कोनो मनुष्य ईश्वर कें नहिं कहैत

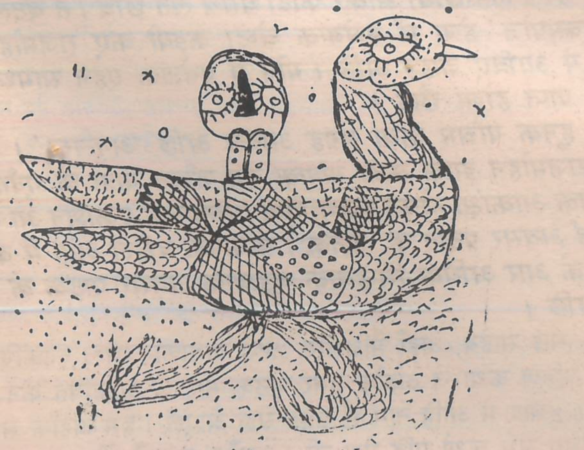
अछि?

ई सोचि क' हमरा मुसकी छुटल जे कियो एहेन मुर्ख भ' सकैत अछि । हम, भैया, तक ई बात बुझि गेल छलियैक जखन हमर नियतिक घड़ी आबि गेल छल। अलबौक छौंड़ा तक अपन विधाता कैं चीन्हि गेल छल जखन ओकरा हुनका सँ भेट भेलैक । हम अस्वीकार नहिं क' सकैत छलहुँ । हम तानपूरा उठौलहुँ आ अपन उस्तादक लेल बजौलहुँ, आ तहिया सँ हुनका लेल बजा रहल छी । एहि सँ बेसी नीक नियतिक कामना हम नहिं क' सकैत छलहुँ।

पार्क सँ बहराक' हम एकटा तांगा केलहुँ आ तांगाबला कें अपन उस्तादक ओहिठाम ल' जेबाक लेल कहलियैक । अपना जीवन मे हम कहियो ओतेक जोर सँ नहिं बाजल रही, ओतेक भरोसक संग, जतेक कि तखन । अहाँ कनेक हमर बाजब सुनने रहितहुँ। काश ! हमर उस्ताद हमर बाजब सुनने रहितथि ।

अंग्रेजी सँ अनुवादः **हरेकृष्ण झा**

□



अन्तरंग वार्ता

कथाकार राजमोहन झा सँ अशोकक अन्तरंग वार्त्ता

आधुनिकता एकटा सकारात्मक आ धनात्मक मूल्य अछि

समकालीन मैथिली कथा लेखन मे राजमोहन झा एक आधुनिक कथाकार छथि। मैथिली कथा साहित्य मे राजमोहन झाक अपन खास रंग, स्वर आ भंगिमा छनि। गंभीरता हुनक कथाकार व्यक्तित्वक प्रमुख तत्व। व्यक्ति स्वतंत्रता मे आस्था रखनिहार राजमोहन झाकें मनोलोकक गुम्फन कएनिहार कथाकार मानल जाइत अछि । बदलैत लोकक आ बदलैत समयक कथा कहनिहार मे राजमोहन झा बेजोड़ छथि । परिवर्त्तन हुनकर कथा रचनाक मुख्य स्वर लगैत अछि । परिवर्त्तनक चलैत पहिया, बदलैत दृश्य कें राजमोहन झा मनुक्खक मोनक भीतर पैसिक' देखि लैत छथि। ओकर फोटो घीचि लैत छथि । तें बदलैत लोक अपना कें 'एक्सपोज' हेबा सँ बचेबाक चेष्टा कइयो कए राजमोहन झाक कैमराक रेंज मे आबिए जाइत अछि । मोन मे प्रवेशक एहन सामर्थ्य विरले रचनाकार के प्राप्त होइत छैक ।

हेबनि मे हुनक पाँचम कथा संग्रह आयल अछि 'अनुलग्न' । अनुलग्न के पढ़ैत आ राजमोहन झाक कथा यात्राक संग जीवन यात्रा के गुनैत हुनका सँ वार्त्ता करबाक आकांक्षा होयब स्वाभाविक । सन्धानक प्रकाशन आ सम्पादन सेहो तत्काल ई अवसर प्रदान क' देलक । सन्धानक पहिल अंक मे कथाकार राजमोहन झा के आर अधिक चिन्हबाक-बुझबाक अवसर पाठक के भेटतनि से विश्वास अछि ।

अशोक:– भाइ साहेब, अहाँ मैथिलीक श्रेष्ठ कथाकार छी । लोकप्रिय सेहो। जेना मोन अछि पहिल कथा जे अहाँक हमर पाठक मोन के आकर्षित केने रहए से छल-एकटा तेसर । बाद मे ओहि नाम सँ संग्रह सेहो आएल । हम अहाँक सभ संग्रह देखने छी । लगभग सभ कथो पढ़ि गेल छी । अहाँक परवर्त्ती जीवनके नजदीक सँ देखबाक सुअवसर सेहो सौभाग्य सँ प्राप्त अछि । अहाँक कथाकार आ अहाँक व्यक्ति दूनू के मिला क' देखैत छी त' हमर पाठक, अनुज, कथाकार मोन ममत्व, रहस्य आ कचोट सँ भरि जाइये । एकटा टीस दैत अछि । संगहि अहाँके आर बुझबाक, अहाँ के आर पढ़बाक पियास सेहो बढ़बैए । जेना कहलहुँ सम्पूर्णता मे रहस्यमय सन लगैये सभटा । भाइसाहेब, किएक एतेक रहस्यमय लगैत छी अहाँ ?

राजमोहन झा:–हे यौ अशोकजी ! आइ सँ किछु वर्ष पूर्व केदारक एकटा पत्र भेटल छल । ओहिमे ओ पटना मे बिताओल अपन छात्र जीवनक काल-खंडक स्मरण

करैत लिखने छलाह जे ओहि समय रानीघाट स्थित हमर डेरा पर ओ आबथि तँ सदैव हुनका एकटा रहस्यमयताक अनुभूति होइनि, जकरा ओ बूझि नहि पाबथि । अहाँक ई प्रश्न हमरा से बात मन पाड़ि देलक अछि ।

अशोक जी, किएक एतेक रहस्यमय लगैत छी हम अहाँके वा आन ककरो, से तँ अहीं अथवा ओ आन केओ कहि सकैत छथि । हम कोना कहू ?

मुदा हमरा सोचबाक चाही जे हम किए रहस्यमय लगैत छिऐ ककरो ? एहन कोनो बात, सत्य पूछी तँ अपना मे हम नहि पबैत छी जे हमरा एहि विशिष्टता सँ मंडित करय । हमर जीवन तँ हम बुझैत छी, बहुत-किछु खुजल किताब सन रहल अछि । ममत्व आ कचोट जकर जिक्र अहाँक प्रश्न मे आएल अछि, से जत' सँ हमरा प्राय: सभ सँ बेसी भेटबाक चाहैत छल, से सभ सँ कम भेटल। तें अहाँ सभ सँ ई भेटैत अछि तँ बहुत नीक लगैत अछि, बहुत-बहुत नीक लगैत अछि । रहस्यमय प्राय: एहि कारणें हम ककरो लगैत होयबैक जे अपन व्यक्तिगत दु:ख वा पीड़ा के ककरो आगाँ व्यक्त करबाक कोनो प्रयोजन वा सार्थकता हम नहि बुझैत अयलहुँ अछि । अपन दुख आ पीड़ाकें अहाँके अपने सहबाक अछि। एहि लेल ककरो दोषो देनाइ व्यर्थ थिक । अहाँके जे भेटल अछि, सें तकरे योग्य अहाँ छीहे प्राय: । ई बात अहाँमे सन्तोष उत्पन्न करैत अछि, आ अहाँके आगाँ बढ़बाक लेल सम्बल प्रदान करैत अछि। नहि तँ लोक तँ तखनहि टुटि जाइत। अहाँ सभक ई ममत्व, कचोट आ रहस्यमयताक भावे हमरा जियाक' रखने अछि, अशोक जी । ई जँ नहि रहैत, तँ हम सोचि नहि सकैत छी जे हम कोना रहितहुँ। एकटा सामान्य सुखी पारिवारिक जीवन बितयबाक अवसर भेल रहैत, तँ ई रहस्यमयताक प्रश्न नहि उठैत । मुदा से नहि भेल । नहि भेल तँ नहि भेल । एहि मे रहस्यमयताक कोनो बात नहि अछि । हम रहस्यमय नहि लागी अशोक जी अहाँके, अथवा आन किनको से बात अहाँ सभ सँ हमरा दूर क' देत । आ से हम नहि चाहैत छी ।

अशोक:–अहाँक पहिल कथा संग्रह ' एक आदि एक अन्त' जे 1965 मे छपल छल, मे संग्रहीत पहिल कथा 'ज्वार भाटा' मे जीवनक प्रति ममत्वपूर्ण आकर्षणक चित्रण अछि त' चारिम कथा संग्रहें 'आइ काल्हि परसू' जे 1993 मे आएल मे घरक प्रति (घर कथा मे) ममत्व अंकित कएल गेलए । जीवन आ घरक बाद ममत्वक परिधि मे आर ककरा-कथी के राख' चाहब अहाँ ?

राजमोहन झा: घरक प्रति ममत्व पूरा नहि बहरायल अछि । हम एक बेर सोचने रही जे 'घर' शीर्षक सँ दसटा कथा लिखी-घरक भिन्न-भिन्न आयाम आ अर्थकें केन्द्र बनबैत । से जँ कहियो भेल, तँ 'घर' शीर्षक सँ एकटा पोथिए निकालब । कथाक शीर्षक रहतैक 'घर-1', 'घर-2' ।

आ जीवनक प्रति ममत्वक तँ कोनो अन्त नहि छैक । जीवने तँ अपना मे सभ किछु कें समेटने अछि । जीवन नहि रहौक , तँ सभ किछु निस्सार नहि भ' जाइत छैक ?

जीवन आ घरक बाद हमरा सम्बन्ध महत्वपूर्ण लगैत अछि । ओना ई तीनू एक दोसरा सँ घनिष्ठ रूपें गुम्फित अछि । सम्बन्धकें-सम्बन्धक प्रति ममत्व वा ओकर

महत्व कें केन्द्र मे राखि लिख' चाहब । मुदा कतेक की भ' सकैत अछि, कोना कहू? हम जँ जीवकान्त जी रहितहुँ, तँ सोचलाहा सभटा प्राय: लिखल भ' जाइत। जीवनक प्रति ममत्वोक एकटा ई पैघ कारण अछि । रिटायरमेंटक बाद ई चिन्ता बेसी रह' लागल अछि, अशोक जी, जे कतबा की और हम लिखि सकब ।

अशोक: की जीवनक प्रति आकर्षण अथवा आसक्तिक क्षरण अनुभव करैत छी? अथवा की एखनो आइयो अहाँक कथाकार पुन: 'ज्वारभाटा' लिख' चाहत?

राजमोहन झा : नहि अशोक जी, एकदम नहि करैत छी । बल्कि जेना कहलहुँ जीवनक प्रति आसक्ति बेसिए अनुभव कर' लागल छी । आकर्षण आ आसक्तिक क्षरण तँ लेखक लेल आत्मघाती डेग होयतैक । समाजोक लेल ई बड़ पैघ क्षति। लेखक सन्यासी भ' क' ने अपन उपकार करैत अछि ने समाजक, तकर दृष्टान्त अपनो साहित्यमे अछिए ।

प्रश्नक अन्तिम अंशक उत्तर देबाक काज ?

अशोक: अपन लोकक प्रति जे ममत्व, स्नेह, अनुराग रहै छै । ओकरा लेल किछु करबाक सेहन्ता रहै छै । अर्थ ओकरा कोना चीरीचोंत करैए से कथा खूब कहलियै अहाँ । बदलैत समयक आ बदलैत मनुक्खक कथा कहैत, राग-अनुराग के गायब होइत देखैत कहुखन के अहाँसन मनोलोकक गुम्फन कएनिहार सेहो लगैये अवाक् रहि जाइये । 'अप्पन लोक' सँ 'खोज' धरिक सन्दर्भ हम ल' रहल छी । किए? किएक होइ छै एना ? की परिवर्त्तनक गति के अहूँसन कथाकार नहि पकड़ि पाबि रहल अछि?

राजमोहन झा: पकड़ि पाबि रहल अछि कि नहि पकड़ि पाबि रहल अछि से तँ अहीं कहब, अशोक जी । तखन ई बात जरूर छैक जे परिवर्त्तन जेना जाहि तरहें भेलैक अछि आ भ' रहलैक अछि, से लोक कें अवाक् कर'वला छैक । कथाकारो कें । सत्य पूछी तँ कथाकार अवाक् भ' क' आ लोक के अवाक् क' क' परिवर्त्तनक एहि क्षिप्र गतिए दिस इंगित करैत छैक । परिवर्त्तन आ परिवर्त्तित स्थिति कें राखि के हम बुझैत छी, कथाकारक काज पूरा भ' जाइत छैक । परिवर्त्तन क तह मे जा ओकर कारण सभकें ताकब हमरा लगैत अछि, कथाकार लेल जरूरी नहि छैक । ई काज समाजशास्त्रीक छैक । ओना अवाक् भ' आ कथाकार पाठक कें कारण पर सोचबाक लेल अग्रसर तँ कैए दैत छैक । बहुत ठाम विश्लेषित क' क' कारणो देखा दैत छैक । लेकिन हमरा लगैत अछि, से सभठाम जरूरी नहि होइत छैक। 'अप्पन लोक' आ 'खोज' क संग अपन सूची मे अहाँ 'चलह' (अनुलग्न) कें सेहो जोड़ि सकैत छलहुँ, अशोक जी।

अशोक: ई समय परिवर्त्तनक गति आ मोनक गति मे कोन अहाँके अपना बेसी भीजल बुझाइये ? ककरा पकड़बा मे बेसी सुविधा होइये अपन कथा रचबाकाल ?

राजमोहन झा : बदलैत समय आ बदलैत मन सत्य पूछी तँ एके वस्तुक दूटा पहलू अछि । दुनूमे अन्योनाश्रय सम्बन्ध छैक । समयक संग मन बदलैत छैक आ मने समयो मे परिवर्त्तन अनैत छैक । दुनूक गति फराक-फराक नहि भ' एके संग चलैत छैक । तखन ई छैक जे मन जकाँ चंचल कोनो वस्तु नहि। तें एकर गतिकें पकड़नाइ, एकरा संग चलानाइ कठिन काज होइत छैक । समयक परिवर्त्तनक गति

एकटा स्थिरता लेने होइत छैक । तें एकरा ठहरि क' पकड़ल जा सकैत अछि, बिलमि क' एकरामे पैसल जा सकैत अछि ।

भ' सकैत अछि, अशोक जी, जे हमर पहिलुक बात आ एहिमे अहाँके विरोधाभास बुझाय । मुदा दुनू बात अपना-अपना जगह सही छैक । प्रभावक दृष्टि सँ हम कहलहुँ जे समयक परिवर्त्तन आ मनक परिवर्त्तन एके संग चलैत छैक । मुदा दुनूक प्रक्रिया मे अन्तर छैक । मनक गति जँ द्रुत लय मे चलैत छैक, तँ समयक गति विलम्बित लय मे ।

स्वभावत: समयक परिवर्त्तनक गतिकें पकड़ब बेसी सुविधाजनक होयतैक, कारण जे एत' अहाँके पलखति भेटैत अछि । मनक गतिक संग जुमनाइ कने बेसी कठिनाह जरूर होइत छैक । ओना भीजब दुनू मे हमरा लेल आवश्यक होइत अछि । मनक गतिक संग चलनाइ एकटा बेसी दुष्कर काज जरूर बुझाइत अछि । मुदा हमरा कोनो हड़बड़ी नहि रहैत अछि । तें मन एहू मे लगैत अछि। सुविधाक बात पूछब तँ समयक परिवर्त्तनक गति अवश्य पहिने आओत ।

अशोक: बदलैत मोन आ बदलैत समय दूनूक चित्रण अहाँक कथा मे नीक जकाँ भेल अछि । मोटामोटी 'परिवर्त्तन' अहाँक मुख्यस्वर लगैये हमरा । एहि अर्थमे अहाँ आधुनिक कथाकार छी । बदलैत लोकक संग अहाँ कतेक बदलल छी? कतेक आधुनिक बनि सकलहुँ ?

राजमोहन झा : हे यौ, अशोक जी, जाहि प्रश्नक उत्तर अहाँके देबाक चाही, से अहाँ हमरा सँ पूछि रहल छी । हम कतेक आधुनिक छी से तँ अहाँ ने कहब? ओना हम बुझैत छी जे दकियानूस अथवा पारम्परिक होयबा सँ हम सदा परहेज करैत रहलहुँ अछि । अनुभवक संग हमर कतोक धारणा आ विचारमे परिवर्त्तन आयल अछि। तें बदलैत परिवेशक संग हम अवश्य बदलल छी । मुदा एकर ई अर्थ नहि जे अवमूल्यनक एहि युग मे हम अपन शाश्वत मूल्यक मौलिक वस्तुकें बिसरि गेल होइ अथवा ओकरा तिलाञ्जलि द' देने होइ । किछु अर्थ मे हम पुरना परम्पराक एखनो पोषक छी । परम्परामे सभ किछु त्याज्ये नहि होइत छैक । परम्परामे जे बस्तु रूढ़ि भ' जाइत छैक, तकरा छोड़बाक चाही, परन्तु जे बस्तु शाश्वत मूल्य क होइत अछि, तकरा तँ जोगाक' रखबाक चाहबे करी। यैह तँ अहाँक सांस्कृतिक पहिचान बनैत अछि ।

तें बदलैत लोकक संग हम कतेक बदललहुँ अछि से कहब कठिन बुझाइत अछि। किछु अर्थमे हम जरूर अपनाकें बदललहुँ अछि । अनुभवक संग लोक अपनाकें बदलैते अछि । मुदा जहाँ तक सिद्धान्त वा नैतिकताक प्रश्न अछि, हम अपनाकें बदलि सकबामे असमर्थ भेल छी । समर्थ होयब चाहितो नहि छी । आब जे छै से छै। और की ?

एतेक कहलाक बादो हम कतेक आधुनिक छी, से प्राय: अहाँके नहि कहि सकलहुँ। कहियो नहिं सकैत छी ।

परम्परामे जे रूढ़ि छैक, ताहिमे हम विश्वास नहि रखैत छी, आ परम्परा मे जे शाश्वत मूल्य छै, ताहिमे आस्था रखैत छी । आब अहीं बुझू जे हम कतेक आधुनिक छी, कतेक नहि ।

अशोक:-अपन अनेक कथामे खास क' कए 'आइ काल्हि परसू' मे संग्रहीत कथा सभमे अपराधी, अनैतिक बनैत मनुक्खक खिस्सा अहाँ कहलहुँ अछि। लगभग

सभ पात्र-पढ़ल-लिखल सभ्य समाजक अछि । 'बुधियारी' कथा मे त' तथाकथित वामपंथी बुद्धिजीवीक अनैतिकता, अपराधीपन विन्यस्त सँ उघार भेलए। की अनैतिकता आ अपराधीपन आधुनिकताक प्रमुख तत्व मानैत छी अहाँ? आधुनिक माने अनैतिक त' ने अछि?

राजमोहन झा :–नइँ अशोक जी, से नइँ अछि । आधुनिक माने अनैतिक नइँ। अपराध आ अनैतिकता- ई तँ एकटा युगधर्मजकाँ कहि सकैत छिऐ अहाँ। ई कोनो सकारात्मक वस्तु नहि छिऐ । आधुनिकता एकटा सकारात्मक वस्तु छिऐ ई एकटा मूल्य छिऐ ? अपराध आ अनैतिकता कें अधिकसँ अधिक अहाँ लक्षण मानि सकैत छी-युगक लक्षण। आधुनिकताक लक्षण नहि । एहि सभ वाह्य आ तात्कालिक प्रभाव सँ आधुनिकताक अवधारणा कोनो तरहें प्रभावित नहि होइत अछि, हमरा जनैत । आधुनिकता एकटा सकारात्मक आ धनात्मक मूल्य अछि, जकरा ई सभ विकृति बदरंग नहि क' सकैत छै । आधुनिकता एकटा स्वच्छ वस्तु थिक, जाहि मे एहि अपराध , हिंसा आ अनैतिकताक दाग नहि लगबाक चाही । से जँ होइ, तँ आधुनिक भेनाइ तँ एकटा गारि भ' जयतैक । कतहु अहूँ हमरा आधुनिक मानलहुँ अछि । से एहि अर्थ मे तँ नहि ?

अशोक:अपन कथा 'केचुआ' (झूठ-साँच) मे अहाँ कहैत छी 'मनुखक सामाजिक विकास जाहि गति सँ भ' रहल छैक, ताहि लेल मिनट-मिनट पर केचुआ बदल' पड़तैक। खोज (आइ-कल्हि परसू) मे अहाँ कहलियै 'ठीक छै परिवर्त्तन होइ छै, समयक अनुसार सभकिछु बदलै छै । मुदा तकर ई अर्थ थोड़बे होइ छै जे लोक एकदम सँ अपन व्यक्तित्त्वे उतारि फेकय?, एक दिस अहाँ व्यक्तित्त्व के उतारि कए नहि फेकबाक लेल कहैत छी,दोसर दिस सामाजिक विकासक संग मिनट-मिनट पर केचुआ बदलबाक अनिवार्यता सेहो मानैत छी । की केचुआ आ व्यक्तित्त्व एके थिक ? जँ दूनू एक्के तँ अहाँ अपन दूनू कथन मे कोना संगति बैसाएब ? यदि दूनू एक नहिं त' की केचुआ बदलला सँ व्यक्तित्त्व नष्ट नहि हेतैक? अथवा ओहि पर कोनो प्रभाव नहि पड़तैक?

राजमोहन झा: 'केचुआ' मे जे बात कहल गेल छैक , अशोक जी, तकरा स्थापनाक रुप मे नहि लेल जयबाक चाही । ओकरा व्यंगात्मक ध्वनिक रुप मे ग्रहण करब बेसी ठीक होयत, हमरा हिसाबें । केचुआ व्यक्तित्त्व नहि अछि । ओ तँ व्यक्तित्त्वक उपर खोल अछि, मुखौटा अछि । आ' ई जत' अछि, तत' व्यक्तित्वे सैह भ' जाइत अछि । माने, अहाँक असली व्यक्तित्त्व तिरोहित भ' जाइत अछि आ मुखौटा वा खोल वला' व्यक्तित्त्व आगाँ आबि जाइत अछि आ वैह व्यक्तित्त्व सामाजक सोझां स्वीकृत भ' जाइत अछि । केचुआ बदलला सँ असली व्यक्तित्व त' नष्ट होइतहि अछि ओहि पर आवरण पड़ितहि अछि, जाहिसँ लोक भ्रमित होइत अछि ।

अशोक: एही सँ एकटा प्रश्न हमर मोन मे आर उपजैये । की मनुक्खेके बेर-बेर केचुआ बदलबा सँ छुटकारा दिएबाक लेल मनुक्खक सामाजिक विकासक गति के अहाँ रोक' चाहब अथवा बदल' चाहब? यदि रोक'-बदल' चाहब त' कोना?

राजमोहन झा: अशोक जी, ई प्रश्न बड़ कठिन अछि । रोक'-बदल' क अनिवार्यता सामने ठाढ़ अछि। मुदा कोना रोकल -बदलल जाय, से तकर बाट नहि सुझैत अछि। अनका बदलला सँ प्रायः किछु होयबो नहि करतैक । लोक कें स्वयं बदल' पड़तैक। लोक के बदलबा मे, ओकर परिष्कार करबा मे साहित्यक भूमिका सदा सँ रहलैक अछि । मुदा साहित्यक पाठकक संख्या जे दिनानुदिन घटि रहल छैक,

से चिन्ताक विषय अछि । एकरा एकटा विचित्र विडम्बना कहबैक जे विगत किछु वर्ष मे जेना-जेना साक्षरता बढ़लैक अछि, तेना-तेना साहित्यक पाठक कम होइत गेलैए। तहिना जेना स्कूल-कालेजक संख्या बढ़ने शिक्षाक स्तर खसैत गेलैए ।

अशोक : व्यक्तित्त्वक प्रश्न पर मोन पड़ल सन्धानक एही अंक मे प्रसिद्ध समाजशास्त्री डा० हेतुकर झा अपन निबन्ध मे कहलनि अछि जे मिथिलामे विद्या आ व्यक्तित्त्व संस्कृतिक दूटा मूल्य सभ दिन सँ जीवित रहल अछि । एहि सन्दर्भ मे ओ अयाची आ व्याधक उदाहरणो देने छथि । की मनुक्खक सामाजिक विकासक एहि गति मे मैथिल व्यक्तित्त्व नष्ट भ' रहल अछि अथवा मैथिल अपन व्यक्तित्त्व उतारि क' फेकि रहलाह अछि? एहि सँ की अहाँ कोनो खतरा अनुभव करैत छी?

राजमोहन झा: सांस्कृतिक विघटन ओना तँ सभतरि भेलैक अछि, लोक वैश्विक बेसी होब' लागल अछि, जीवन मे संघर्ष बढ़ि गेलैक अछि आ तें अपन आंचलिक संस्कृतिकेँ बचाक' रखबा दिस लोक ध्यान नहि द' रहल अछि । मुदा हमरा लगैत अछि, आन सांस्कृतिक इकाइ सभ अपना मे जतेक घनगर आ ठोस अछि, ततेक हम मैथिल सभ नहि छी । बंगाली वा पंजाबी देशक कोनो कोन मे रहय, अपन सांस्कृतिक पहिचान बनौने रहैत अछि । हमर मैथिल भाइ सभ की करैत छथि तँ दिल्ली पंजाब जा क' सभ सँ पहिने अपन मैंथिलत्त्व उतारि कें फेकैत छथि । हम देखने छी जे बहुत प्रवासी मैथिलकेँ अपना कें मैथिल कहबा मे लाज होइ छनि । जातीय व्यक्तित्त्व नष्ट भेने खतरा तँ छैहे। रूढ़ि सँ विच्छिन्न होयब एकटा बात होइ छै, परम्परा सँ विच्छिन्न होयब दोसर बात होइ छै । रूढ़ि हमरा आगाँ बढ़बासँ रोकैत अछि । मृत अतीतकेँ रूढ़ि कहबै। मुदा अतीतक एकटा जीवन्त तत्व सेहो होइत छैक जे सदा संग चलैत रहैत छैक। यैह परम्परा कहबैत छैक । एकरा छोड़ने व्यक्तित्त्व नहि बाँचि सकैत छै।

अशोक : यदि अहाँ कोनो खतरा अनुभव करैत छी त' अपन कथा मे कोना आ कत' एहि खतरा के रेखांकित, उल्लिखित केने छी ? यदि नहि केने छी त' की भविष्य मे करबाक निआर अछि ?

राजमोहन झा: आब कत' कोन कथा मे ई खतरा आयल अछि, आयल अछि कि नइँ, नइँ मन पड़ैत अछि । बहुधा अपनो कथा हमरा मन नइँ रहैत अछि । नेयारिक' तँ नइँ सोचने छी, सहज-स्वाभाविक रूप सँ कोनो कथा मे आबि सकैत अछि ।

अशोक : भाइ साहेब, एकटा बात पूछै छी । अपना में कतबा 'मैथिल व्यक्तित्त्व' अहाँ सुरक्षित-संरक्षित मानैत छी ?

राजमोहन झा: बेसी नहि । हमरा जेना लगैत अछि । ठेठ मैथिलत्त्वक प्रायः हमरा मे अभाव अछि । आब से जेना जे होय । व्यक्तित्त्व बहुत रास बाह्य आ आन्तरिक घटक सभक प्रभाव सँ बनैत छैक । तखन परिवेश आ संस्कारक कारणें मैथिलत्त्व सँ बहुत दूरो नहि गेल जा सकैत अछि । ओना हम संतुष्ट छी ।

अशोक: जीवनदर्शन आ व्यक्तित्त्वक प्रसंग चलि रहल अछि त' स्व० हरिमोहन बाबूक स्मरण होयब स्वाभाविक । ठेंठ मैथिल व्यक्तित्त्व छलनि हुनकर। की अहाँ हुनकर जेठ बालक होयबाक कारणें हुनकर जीवन दर्शन ओ व्यक्तित्त्व सँ प्रभावित भेलहुँ । यदि हँ त' कोना ? यदि नहि त' किएक ?

राजमोहन झा: प्रभावित नहि भेलहुँ, से कोना कहि सकैत छी ? कोनो व्यक्तित्त्वक प्रभाव दू प्रकार सँ होइत छैक । एक तँ व्यक्तित्व सँ प्रभावित भ' ओकर किछु बात

अहाँ सोझे ग्रहण क' लैत छी । आ किछु बात अहाँमे उन्टा प्रतिक्रिया उत्पन्न करैत अछि । तखन अहाँ विपरीत धर्म ग्रहण्‌ क' लैत छी । हम एहि दुनू तरहें प्रभावित भेल छी ।

जीवनदर्शन, अशोकजी, एहन वस्तु नहि होइत छैक जे सोझे-सोझ ककरो सँ ल' लेल जाय । ई तँ अपना भीतर विकसित कर' पड़ै छै । प्रभाव किछु अंश मे अवस्से अछि । मुदा अलगावो अछि । से प्रायः स्पष्टे अछि । पीढ़ीक अन्तर सेहो एकटा कारण अछि ।

अशोकः हरिमोहन बाबू पाखण्ड ओ अंधविश्वासक विरोध हँसैत-हँसबैत व्यंग करैत कएलनि । नीक बातक स्वागत सेहो कएलनि । हुनकर साहित्य ऐतिहासिक अनिवार्यताक अनुरूपे अछि । की अहाँ अपनो सम्बन्ध मे ई बात कहि सकैत छी?

राजमोहन झाः हँ, अशोक जी । कोनो युगक साहित्य अपन समय आ इतिहासक अनुरूपे होइत अछि । जँ से नहि होइत अछि, तँ ओ सार्थक साहित्य नहि अछि । ओहि समयक समस्या सभ भिन्न छलैक, एखनुका समस्या सभ किछु और छैक । दूनू समयक साहित्य अपन-अपन ऐतिहासिक अनिवार्यताक अनुरूप अछि ।

अशोकः मैथिली साहित्य मे अहाँक घरक योगदान अपूर्व आ स्तुत्य अछि। पितामह, पिता, अहाँ स्वयं, अहाँक अनुज प्रो० मनमोहन झा, अहाँक बहिनोइ स्व० शलैन्द्रमोहन झा मोटा-मोटी सभक प्रसिद्ध गद्ये ल' कए अछि । अहाँक बाबा स्व० जनसीदन जी, अहाँक बाबू स्व० हरिमोहन झा दुनू उपन्यास लिखलनि। की अहाँ कोनो उपन्यास लिखबाक अनिवार्यता अनुभव नहि केलहुँ? यदिनहि केलहुँ । त' किए?

राजभोहन झाः अनिवार्यता तँ नहि अनुभव कयलहुँ, इच्छा जरूर अछि जे उपन्यास लिखी । नाटको लिखबाक इच्छा अछि । ताहि समय मे केन्द्रीय विधा उपन्यासे रहैक। आब तकर स्थान कहानी ल' लेलक अछि । उपन्यास लिखबाक अनिवार्यता तँ भ' सकैत अछि जे नहि अनुभव कयने होइ । आ सत्य पूछी, अशोक जी, तँ उपन्यास लिखब हमरा कठिनो बुझाइत अछि । उपन्यास-लेखन एकटा नैरन्तर्य खोजैत छैक, एकटा दीर्घ-कालिक प्रक्रियाक माँग करैत छैक । से हमरा सँ नइँ होइत अछि । तें कहानी लिखब बेसी सुविधा जनक हमरा लेल होइए ।

अशोक : हरिमोहन बाबू चाहैत छलाह जे बुच्चीदाइ (कन्यादान उपन्यासक मुख्य चरित्र) चुप्प नहि रहथि । हुनकर सदिच्छाक लगभग 60 वर्षक बाद की अहाँ अनुभव करैत छी जे बुच्चीदाइ आइयो चुप्पे छथि, अथवा खुजलीह अछि, बाजि रहलीहे ? की हुनकर खुजनाइ आ बजनाइ आइ अहाँके पसिन्न पड़ि रहल अछि ?

राजमोहन झा : नइँ अशोक जी, बुच्चीदाइ आब चुप कहाँ छथि ? खुजलीहे, बाजि रहलीहे । हमरा लगैत अछि, बेसिए बाजि रहलीहे । खुजनाइ आ बजनाइ नीक बात, मुदा आवश्यकता सँ अधिक खुजनाइ आ बजनाइ नीक बात नहि। से मुदा की करबै, जेना प्रेमचन्दक एकटा कथामे छनि-नारी जे अछि से सदा अन्तिम छोर पर रहत, एहि दिस अथवा ओहि दिस, बीचक मार्ग ओकरा लेल नहि । बुच्चीदाइयो तँ तेहने छथि चुप्प छलीहे तँ चुप्प छलीहे, पढ़ि-लिखि अप-टू-डेट भ' गेलीह तँ लालकाकी कैं कहै छथिन-तो तँ देहाती जकाँ बजै छै । अंग्रेजी मे एहन बात कैं 'नौनसेन्स कहै छै ।

तँ ई अतिवाद नारीक स्वभाव मे छैक । सन्तुलन एत' बहुत विरले भेटत। ई बात हम अपना ऊपर दकियानूस कहल जयबाक खतरा उठा क' कहि रहल छी ।

अशोकः मिथिलाक राजनीति मे स्व० ललित नारायण मिश्र आ साहित्य मे स्व० हरिमोहन झा क नाम आम लोक श्रद्धा सँ लैत अछि । बहुत लोकप्रिय रहलाह वा छथिहे दुनू गोटे । एहिक्रम मे अहाँके अपना मादे आ विजय कुमार मिश्रक मादे की लगैए ?

राजमोहन झाः हे यौ, ई दुनूगोटे अपना-अपना क्षेत्र मे बहुत विराट व्यक्तित्त्व छलाह। हिनका दुनू गोटेक आगाँ हम दूनू गोटे कतहु ठाढ़ नहि होइत छी । अधिककाल, अशोक जी, अहाँ देखबै जे महापुरूषक उत्तराधिकारी लोकनि हुनक कीर्त्तिकें आगाँ बढ़यबाक स्थान पर ओकरा नष्टे करैत छथिन । डा० सर गंगानाथ झा-डा० अमरनाथ झा सन उदाहरण कम्मे भेटैत अछि ।

अशोकः एकटा कथाकारक रूप मे अपन लोकप्रियताक कोनो स्मरणीय क्षण अहाँके मोन पड़ैए ? कने सुनबियौ ने !

राजमोहन झाः नइँ अशोक जी, एहन कोनो बात तँ नहि मन पड़ैत अछि। हमरा एहू मे सन्देह अछि जे हम एतेक लोकप्रिय छी । ओ तँ अहाँ सभक स्नेह अछि जे ई मान देने छी हमरा । अपन कथाकारक लोकप्रियताक किञ्चित आभास भेल अछि, जखन कोनो सुदूर स्थान सँ कोनो अनजान पाठकक प्रशंसाक पत्र भेटल अछि। मुदा से हिन्दी मे-हिन्दी पत्रिका मे कथा छपला पर । मैथिली मे तँ अधिकांशतः लेखकें लोकनिक पत्र भेटल अछि, जाहि मे औपचारिकताक अंश प्रायः बेसी रहल अछि।

अशोकः भाइ साहेब, कने बीच मे अहाँ संग चौल करबाक इच्छा होइये। अपन कथा चक्रव्यूह(एकटा तेसर) मे अहाँ कहैत छी, ' अफसर रैंकक लोक घर मे बेसी दब्बू होयबे करतैक ।' ई बात अहाँ कोना कहैत छी ? अहाँ अफसरो रहल छी आ लेखको छी । कने फड़िछबियौक ने ?

राजमोहन झाः हम, अशोक जी, अफसर रहल छी,मुदा ओहि सामान्यतः पारम्परिक अर्थ मे नहि जाहि मे लोक 'अफसरी' करैत अछि । अहूँ ओहि अर्थ मे अफसर नहि रहलहुँ अछि । तें 'चक्रव्यूह' क उक्ति हमरा-अहाँ पर लागू नहि होइत अछि।

एहि उक्तिकें एना फड़िछा सकैत छी जे ऑफिस मे अफसरी झाड़' वला व्यक्ति किए अफसरी झाड़ैत अछि? एहि द्वारे जे घर मे पत्नी ओकरा झाड़ैत छैक। ओतुक्का हीनताकें ओ आफिस मे आबि अपन मातहत पर अफसरी झाड़ि 'कम्पेनसेट' अछि। 'रणे शूरा गृहे भीता' वला बात होइ छै । तें कहलिऐ जे अफसर रैंकक लोक घरमे दब्बू होयबे करत।

मुदा जेना कहलहुँ, अशोकजी, अहाँके आ हमरा एहि सँ कोनो खतरा नहि अछि।

अशोकः एकटा आर अहींक कहल बात । अन्तराल (झूठ-साँच) कथा मे एकठाम आएल अछि 'प्रेमक बात मैथिली मे कहनाइ कोनादन बुझाइत रहय। जेना मैथिली मे नौकर के डँटबाक होइत छैक तँ लोक हिन्दी मे डँटैत अछि।' की एहि कथन मे अहाँ अपनो-एखनो विश्वास करैत छी ? यदि विश्वास करैत छी त' किए ?

राजमोहन झाः हँ, करैत छी । देखियौ, हिन्दी मे जाहि सहजता आ स्वाभाविकताक संग नायक नायिकाकें कहि सकैत छै-'मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, से मैथिली मेऽ हम अहाँ सँ प्रेम करैत छी' कहि क' देखियो ने । कने उटपटांग जकाँ नहि लगैत अछि? तें मैथिलो नायक नायिकाकें प्रेमक अभिव्यक्ति लेल हिन्दिए वा अंग्रेजीक आश्रय लेब' पड़ैत छै । 'आइ लव यू' कतेक सरलता सँ अंग्रेजी मे कहल जा सकैत छै ? 'आइ

वान्ट टु मेक लव विथ यू' के मैथिली मे कहनाइ तँ और मोशकिल छै। 'आओ, प्यार करें' कें मैथिली मे की कहबै? अपन भाषा आ समाजक प्रकृति कोनो-कोनो बातक अभिव्यक्ति लेल बेसी अनुकूल होइत छैक आ कोनो कोनो अभिव्यक्ति लेल अनुपयुक्त। साहित्य मे विदेशी शब्दक प्रयोग सँ नाक-भौंह सिकोड़िनिहार लोक ई बात नहि बुझैत अछि।

अशोक: भाइ साहेब, एक कथाकार आ संगहि व्यक्तिक रूप मे सेहो, मिथिला मे प्रेम करब अहाँ कें असुविधाजनक लगैए ? ई मैथिली साहित्यक सीमा थिक अथवा मिथिला समाजक संकीर्णतावादी जातिगत विडम्बना ? अहाँ त' मैथिलीक आधुनिक कथाकार छी । की मिथिला समाजमे आधुनिकताक अभाव मैथिली साहित्य के एहि मामिला मे टांग घिचैत छैक ?

राजमोहन झा: मिथिला मे प्रेम करब असुविधाजनक नहि लगैत अछि । मैथिल लोकनि प्रेम करितहि छथि । जीवकान्त जी कतहु कहने छथि जे मिथिलामे लोक प्रेम नहि करैत अछि, छिनरपनी करैत अछि । हुनकर बात एक अर्थ मे ठीक भ' सकैत अछि । मुदा उदात्त प्रेमक रूप अपना समाजमे नहि होइत हो आ कि अपन साहित्यमे ओकर चित्रण नहि भेल हो से बात नहि छैक । 'प्रतिमा' आ 'मधुश्रावणी' उपन्यासकें दृष्टान्तक रूप मे राखल जा सकैत अछि । असल मे ई ने मैथिली साहित्यक सीमा अछि आ ने मिथिला समाजक संकीर्णतावादी जातिगत विडम्बना । किछु-किछु अपन जातिगत संस्कार कहि सकैत छी । मुदा असल बात छैक भाषाक प्रकृति । अंग्रेजी मे 'बास्टर्ड' शब्द बड़ सामान्य रूपें व्यवहृत होइत छैक । मुदा हिन्दी अथवा मैथिली मे 'हरामी' वा 'दोगला' कहियौक तँ, कतेक भारी शब्द भ' जाइत छैक ? अर्थ वैह छैक, मुदा शब्दक वजन मे कतेक अन्तर भ' जाइत छैक ? यैह कारण जे अंग्रेजी सम्भोगक वर्णन बड़ सामान्य रूपें कयल जाइत अछि, मैथिली मे से करियौक,तँ अश्लील भ' जायत ।

आधुनिकताक अभाव हमरा सभक एहि मामिला मे टाड. घिचैत अछि, से नहि कहि सकैत छिऐ ओना । प्रेम तँ एकटा चिरंतन शाश्वत भाव छैक, जाहि सँ चाहियो क' हम सभ फराक नहि रहि सकैत छी ।

अशोक: अहाँक कथा 'बिचला समय' (एकटा तेसर) मे साम्प्रदायिक तनाव, दंगाक पृष्ठ भूमि मे समाज आ मनुक्खक पराभव, एक-दोसरक प्रति शंका, दुरावक वर्णन अछि । कथानायक एहि सभ सँ छटपटाइत अछि । ओ मानैत अछि जे सभ किछु फेंर पहिने जकाँ भ' जयतैक । मुदा ई बिचलासमय बेकार, निरर्थक, घिनाओन अछि । अहींक शब्द मे 'ओकर बस चलैक तँ बिचलाई दिन कॉपीक पन्ना जकाँ नोंचि' फराक क' दैक । नेनामे ओकर हिस्सक रहैक काँपी पर लिखैत काल कोनो पन्ना जँ कनेको कटखुट भ' जाइक तँ ओ चर्र सँ ओहि पन्नेके फाड़िक' कापी सँ बाहर क' देअए। की अहाँक ओ कथानायक आइयो अहाँक ' आइ काल्हि परसू' क भयाओन, तनावग्रस्त, दंगाग्रस्त वातावरण सँ भरल समय के' बिचले समय' मानत? कटखुट भेल पन्ना जकाँ ओकरा चर्र सँ फाड़ि के बाहर क' देत ? की लगैये अहाँके?

राजमोहन झा: 'बिचला समय' क समय आ 'आइ काल्हि परसू क समय मे किछु अन्तर छैक । दंगाक अवधिक एकटा सीमा होइ छैक, जाहिमे ओ बन्हायल सिकुड़ल रहैत अछि ।ओकरा अधिक आसानी सँ नोंचि क' फाड़ल जा सकैत अछि।

'आइ काल्हि परसू' क भयाओन आ तनावग्रस्त समय एकटा दौर छैक, प्रवृत्ति छैक, जे बहुत दूर धरि पसरल छैक, दंगाक समय जकाँ सीमित नहि छैक। तँ ओकरा ओना चर्र सँ फाड़ल नहि जा सकैए । एकरा भीतर गहींर धरि जाय पड़त ।

अशोक: समाज मे व्याप्त एहि तरहक वातावरण के बदलबाक मादे अहाँक कथाकार मोन अथवा लेखकीय दायित्व कतबा आ कोना स्पन्दित होइए ? की मात्र सदिच्छा अथवा शुभकामना धरि दायित्वबोध सीमित रहबाक चाही? की नीक दिन फेर घुरबे करतैक से आस्था राखि मोन सँ एहि समय के फराक क' लेबाक चाही? अथवा लोक के एहि वातावरण के बदलबाक लेल प्रेरित प्रोत्साहित करबाक चाही? रस्ता सुझेबाक चेष्टा करक चाही? बदलावक नेतृत्व करक चाही? एहि मादे लेखकीय दायित्वक सीमा कतेधरि अहाँ मानैत छी ? आ किएक ?

राजमोहन झा: साहित्यकार तँ अपन सहित्येक माध्यम सँ वातावरण कें बदलबाक प्रयासक' सकैत अछि, से करबाक चाही । नेतृत्व करबाक उत्साह जँ ओ राखत, तँ प्राय: अपन साहित्यिक धर्म सँ च्युत भ' जायत । अहुना साहित्यक माध्यम सँ जे बदलाव अबै छै से एना सोचि विचारिक' नहि । सदिच्छा आ शुभकामने साहित्यमे ओ शक्ति आनि सकैत छै, जे बदलावक कारण बनैक । रास्ता सुझैबाक वा प्रेरित-प्रोत्साहित करबाक नेआर ल 'क' प्रभावकारी साहित्य नहि रचल जा सकैत अछि । ओकर हाल वैह होयतैक जे झंडा आ डंडा'क संग आब' बला साहित्यक भेलैक ।

अशोक: भाइ साहेब, अहाँक पाँचटा कथासंग्रह आबि चुकल अछि । एक आदि एक अन्त, झूठ-साँच, एकटा तेसर, आइ काल्हि परसू आ एकदम टटका मे अनुलग्न। एहिमे कुल उन्नासीटा अहाँक कथा संग्रहीत अछि । किछु आर प्रकाशित अप्रकाशित अछि। आइ, एहि घड़ी मे हम अहाँ सँ पूछ' चाहब, अहाँक कथा कोन रूपें समाज सँ जुटल अछि? मिथिला समाज जँ अहाँक कथा मे अपनाके देख' चाहय, ताक' चाहय त' की अहाँ कोनो सहायता कर' चाहबैक । अथवा एहि काज लेल आलोचक, समीक्षक के भार देबनि?

राजमोहन झा: कथा हमर कोन तरहें समाज सँ जुटल अछि, से हम की कहू? समाजे कहत । हम ठीके कोनो सहायता नहि कर' चाहबै । समीक्षको कें हम नहि भार देबैन्ह । मिथिला-समाज कतहु-कतहु हमर कथा मे अपनाकें देखलक अछि, से पाठकक पत्र सँ हमरा बूझल भेल अछि ।

अशोक: अन्त मे, अपन पाँचम कथा संग्रह 'अनुलग्न' क संग कथाक प्रतिवेदन प्रस्तुत करैत निष्कर्ष मे की कह' चाहब अहाँ ? की अहाँके निष्कर्ष लेल छठम संग्रह निकालबाक आवश्यकता अनुभव होइत अछि? यदि होइत अछि त' किए? यदि नहि होइत अछि, भाइ साहेब त' से किए ?

राजमोहन झा: 'अनुलग्न' क संग हम अपन कथाक कोनो प्रतिवेदन नहि प्रस्तुत कयने छी । अहुना निष्कर्ष मे हम नहि किछु कह' चाहब । छठम संग्रह तँ निकालबे करब, मुदा निष्कर्ष लेल नहि । निष्कर्ष तँ अहीं सभ कहब ।

☐

पोथी-1

हसीना मंजिल

दूर देस पलायनक मृगतृष्णा आ' श्रमशील स्त्रीक संघर्षगाथा

'हसीना मंजिल' उषाकिरण खान क नवका उपन्यासक नाम थिक । ई उपन्यास प्रकाशन मंच, बन्दर बगीचा, पटना सँ छपल अछि । श्रीमती खानक अनुत्तरित एवं दुर्वाक्षत नाम सँउपन्यास पहिनहुँ मैथिली मे निकलि चुकल अछि। चर्चित प्रशंसित भेल अछि। हिन्दी आ' मैथिलीक कतेको प्रसिद्ध कथाक रचनाक कारणे उषाकिरण खानक नाम आब बिहार मे जानल-बूझल अछि ।

पहिल नजरि मे, कोनो किताबक दोकान पर राखल 'हसीना मंजिल' मैथिली उपन्यास नहि, हिन्दीक किताब बुझाइत अछि । मुदा पोथी उनटबिते लगले बूझि जाइये लोक जे ई मैथिलिए उपन्यास थिक । उपन्यासक आवरण चित्र पद्मश्री उपेन्द्र महारथीक बनौल अछि । सुन्दर, मुस्लिम युवतीक चित्र । श्रीमती खान कहैत छथि जे ई कथा नायिकाक चित्र थिक । उपन्यासो मे एकर वर्णन अछि।

उपन्यास हाथ मे ल' पढ़बाक कोशिश कयला पर प्रारम्भ मे भाषाक अटपटी कने स्वाद बिगाड़ैत छैक । मुदा लगले भाषाक ठाठ आ कथाक प्रवाह 'काकटेल' क आनन्द दिअ' लगैत छैक । बड़का, छोटका हिन्दू आ मुसलमानी मैथिली क मजा लिअ' लगैत अछि पाठक । कोरो, बाती आ जौउर सँ बान्हल गेंठसन तीनू जाति-वर्गक मैथिलीक अपूर्व ठाठ,ठाढ़ करैत छथि लेखिका ।

हसीना मंजिल उपन्यास लहेरियासराय लग रहनिहार लहेरी जातिक मुसलमान परिवारक कथा थिक । लहठीक निर्माण आ विक्रय सैह हिनका लोकनिक मुख्य धन्धा छनि । राशि-राशिक लहठी बना ओकरा छिट्टा मे ल' कए भौरी लगाएब दस्तूर। काज-रोजगार । जीवन निर्वाहक साधन । उपन्यासक प्रारम्भे मे नायिका सकीनाक लहठी बनेबांक इलम सीखबाक वर्णन अछि संगहि मिथिला मे लहठीक महत्ता, उपयोगिताक संकेत सेहो । 'कनेके टा सँ अब्बा संगे बैसिक' जे सीखलक सकीना सएह जीवनक आधार भ' गेलैक । लाह बरकएबा मे कत्तेक आँचक जरूरति होइत छैक, कतेक लाह कतेक बालु आ कतेक कचरा फेंटल जाइत छैक तकर सही-सही अनुपातक ज्ञान जाहि लहेरी के भ' गेल से सभ सँ सेसर। पन्नी कतरब, मौका पर चप्प द' साटब आ बेलना पर लहठी रोलब, ई सभटा लूरि सकीना अब्बा सँ सिखलक। मोट-मोट लहठी बनएबा मे ओतेक इलिम के जरूरति नहि छैक । मिहिक्का तीसीफूल, कतरी आ सहाना बनएबा मे असली कारीगरी देखल जाइत छैक । आ अइ सभक जोर लगन मे सउसे तिरहुता मे होइ छै । जहाँ तलुक नजरि जाइ छइ सकीना के तहाँ तलुक तिरहुता छइ । आ तिरहुता मे लगन मे लोक इहे कच्चा लहठी पहिरलकं। ओइ

बिनु ने वियाह होइ छै, ने दुरागमन । ने बच्चा के छठियार पुजाइ छैक, ने मुड़न, जनेउ होइत छैक। छोटका सँ बड़का धरि लहठीक हाहि मारैत रहैत छैक ।'

एही लहेरी परिवारक दुखदर्द, संयोग-वियोग, साहस पलायन, अवनति-उन्नति, आत्मनिर्भरता, कर्मठता तथा मिथिलाक अन्य जातिक संग रचबाक-बसबाक कथा अछि हसीना मंजिल मे । सम्पूर्ण उपन्यास मे बूढ़ा उसमान पसरल अछि । सकीनाक त' सम्पूर्ण संघर्ष, दर्द, विछोह आ उपलब्धिक इतिहासे कहैए उपन्यास । सकीनाक माए हसीना । चौधरी जी क परिवार । अन्य अनेक महत्वपूर्ण चरित्र हसमत, विक्को मियाँ, मदीना, कमरू आदि । बूढ़ा उसमान जे कहियो जवान छल । देकुली सँ अइ नगर अपन बाबू संगे सीसाबला कंगना पहुँचाब' आबे । दुर्गापूजा मे लहठी बहुत रास बिकाइ। ओहिठाम एक दिन ओकर लगन के गप्प भेलै। हसीना संग निकाह भ' गेलै बीस टाका दैन मोहरक करार पर । से हसीना छल गजब के सुन्नरि । श्रीमती खानक शब्द मे, 'उज्जर शेखिन सन सकल आ आँखि केहेन कारी-कारी जेना चेड.। माछ तमचीनीक नबका कटोरी मे छटपटाइत होइ।' हसीना गौना भेलाक कइएक वर्षक बाद जखन गढुआरि भेल तखनहि लहेरियासराय मे दंगा-फसाद मे खून खच्चर भेल छलैक तकर आगि पझा गेल रहैक । मुदा किछु गोटेक हृदय क्षत-विक्षत भ' गेल छलैक । किछु नीक भविष्य आ' नवका सपनाक कारणें पड़ाय चाहैत छल । उसमान तकर प्रारम्भ केलक। नीक अवसर ताकि हसीना के कहलक, 'हसीना, हम तोरा सँ एकटा गप्प कहै छियह धियान सँ सुनह । हमरा संग पाकिस्तान चलह। ओतय नब राज मे बड़ पूछि छैक । एतय के पूछत अपना आर के । बतीस दाँतक बीच मे आँकर पाथर ज़काँ रहब ।' मुदा हसीना नहि मानलकै । ओ मानैत छल जे, 'अइठाम की घर, खेत आ रोजगार नहि अछि ओतय दूर देस मे की गादी लागल छैक ।' कतबो पोल्हौलक, तर्क देलक, आँखि देखौलक उसमान परन्तु हसीना किन्नहुँ पाकिस्तान जाय लेल तैयार नहि भेल । अपन पति उसमान संग नहि गेल । 'सभटा गहनाक पोटरी लेलकै आ चलि देलकइ ।' उसमान पाकिस्तान मे उद्योग-धंधा केलक। बियाह दान केलक। सुख सँ रह' लागल । एम्हर, 'उस्मानक बेरूखी सँ दुखी खाना-खोराक लेल तरसैत हसीना खुल्ला करा क' उसमानक छौ मास असरा देखलक । जखन ओ नहि आएल त' अपनहि बहिनोइ अहमद मियाँक घरनी भ' गेल।' एहि सँ पूर्व ओकरा एकटा बेटी भेलैक सकीना । अपन पूर्व पति उसमानक देल 'बेरूखी' के सहैत अपन पैर पर ठाढ़ हेबाक कोशिश केलक। श्रमशील नारीक आत्मविश्वास हसीना मे भरल छैक। सैह गुण ओकर बेटी सकीना मे आर नीक जकाँ अयलैक। उसमान पूर्वी पाकिस्तान मे रहय । जखन बंगलादेश बनलैक त' ओकर संसारे उनटि-पुनटि गेलैक । उसमानक शब्द मे, 'सभटा बेचि बिकिनि जनून मे आबि पाकिस्तान चल गेल छलहुँ । ई नहि कहबह जे औत्तय जाए उन्नति नहि कएलहुँ। से त' कएबे केलहुँ आ खूब धन-मान अरजलहुँ । परिवार बढ़एलहुँ । आन लोक जकाँ बंगाली सब सँ कहियो कोनो झंगड़ा-झाँटी नहि केलहुँ, ककरो किछु ने बिगाड़लहुँ। तइयो राज बदलि गेलै तँ हमरा निकालि देल गेल । निकालत की सउसे परिवारके काटिकए फेकि देलक, हमहु ओही मे रही बाँचि गेलहुँ । हमर ओइ मुलुक मे कोनो अपराध कएल नहि छल । हम बिनु अपराधे सजाय पओलहुँ । हँ, अइ मुलुक मे जरूर अपराध कएलहुँ, बूझि पड़ैत अछि ताही अपराधक ओहेन बड़का डंड भेटल।' पड़ा केए भारत आयल । घूमैत-फिरैत

पुनः लहेरियासराय । सभ दिन पहिने ठेंगा ठुक-ठुकबैत सकीनाक घर लग चल आबय। ने कोनो काज ने रोजगार। बाद मे ओकरे आहिठाम रह' लागल। सकीना के चीन्हि गेल जे ई ओकरे बेटी छियैक। बेटीजकाँ मानहु लागल ओकरा । अपन डाँड़ मे राखल बाँचल सभ गहना-गुड़िया ओकरा द' देलक । मुदा अपन 'चिन्हाइन' नहिये कहलक। सकीने सँ बुझलक जे ओकर पति अरब गेल छैक कमाइ लेल । मुदा ओकरा ई देखि अजगुत लगलै जे 'अरब कमेनिहारक कमाइ जाहि घर मे अओतैक तकर कनियाँ एहन टूटल-फूटल मट्टिक घर मे रहतै ? अइ गरम पसेना मे आगि फूकि लाह बरकौते आ' एहन जीर्ण-शीर्ण पियन लागल फूलदार पंजी नुआ पहिरतै । बिना टुम-टाम के देह, टूटल गेह आ दुब्बर खद्दु सनक बौआइत बुतरू के देखि के कहतै जे अइ घरक स्वामी अरब कमाइ छै ।' मुदा बूढ़ा उसमान के नहि बूझल रहैक जे, 'समद अपन गाँव हसनपुर मे जमीन कीनलक अछि आ हसनपुरक एकटा डाक्टरक बेटी सँ अरब मे निकाह करा लेलकै अछि ।' आब समद के 'सकीनाक देह पसीना जकाँ महकै'। ओ बड़का साहेब जकाँ रहय। मुदा अरब जाइत काल सकीनाक सभ गहना गुड़िया, टाका पैसका संग सौंसे मकान बन्हक ध' कए चल गेल छल। अरब सँ अयला पर ने घर गिरबी छोड़ेलकै ने सकीना के पर्याप्त टाका देलकै । सकीना सेहो अपन माय हसीना जकाँ लहठी बना छिट्टा मे राखि भौरी लगाबय । अपन धिया-पूताक पालन-पोषण करए। बाद मे बूढ़ा उसमान ओकर सहायता सेहो कर' लागल। ओकरा नवका सीसावाला लहठी बनाएब सिखा देलकै । जे लहठी 'मार्किट मे हल्ला' मचा देलक । लहठीक नाम राखल गेलैक 'नगीना' । खूब बिकाय लगलै । सकीनाक व्यापार बढ़ैत गेलैक। आब ओ अपन दोकान खोललक अपन घर मे । नाम रखलक 'हसीना मंजिल'। सरकार पन्द्रह अगस्त के सकीना के सम्मान केलकै ओकरा लोककला (लाहक चूड़ी) के विशिष्ट ज्ञान लेल कला अकादमीक माध्यम सँ। मैथिलबन्धु लोकनि सेहो सकीनाक सम्मान केलनि । ओकर नाम-यश भेलै । मुदा अंत धरि ओ अपन बाप लेल छटपटाइत रहल। बूढ़ा उसमान अपन परिचय नहि देलकै। एक राति भूकम्प अयलै। उसमान मस्जिद मे चल गेल रहए । धरती डोल' लगलै। लहेरियासराय-दरभंगाक पुरना घर सभ भहरि के खसि पड़लै । मस्जिद आ मदरसा सेहो ओहि चपेट मे अयलै। मस्जिद सँ खटिया पर लादि क' उसमानक निस्पन्द शरीर आनल गेल। करेज टा धक-धक करैत छलै । विक्को मियाँ सकीना क मौसा ठेंगा ठुकठुकबैत आंगन पहुँचलै। उसमान के चिन्हलकै ओ । सकीना के कहलकै, 'ई तोर अब्बा उसमान छथून । हमर संगी । हमर सार उसमान ।' 'सकीनाक विलाप सँ भोरपरहक, दाना टुनका पाबय लय आकास दिस उड़ैत पंक्षी हठात थमकि गेलै ।' विक्को मियाँ हाथ आकाश दिस उठौने फातेहा पढ़य लगलाह...हसीना मंजिल मे उसमान अपन आखिरी साँस लेलक।

सम्पूर्ण उपन्यास पढ़ि तत्काल मोन मे बूढ़ा उसमानक नाटकीय अंत अपन प्रभाव छोड़ैत अछि । कचोट आ पीड़ा दैत छैक । सोचबा-विचारबाक लेल विवश करैत छैक। अपराधबोध सँ ग्रस्त उसमान अंत धरि बेटी लग रहियो क' अपन परिचय ओकरा नहि दैत अछि । कहि नहि पबैत अछि जे ओ ओकर पड़ायल बाप थिकैक । अपन पहिल पत्नी हसीना क संग कयल व्यवहार ओकरा अपन दुर्दशाक कारण बुझाइत छैक । मुदा सकीनाक पति समद के से सभ किछु नहि होइत छैक । ओकरा कोनो कचोट वा अपराध वोध नहि छैक । ओकर पलायन आ सुख-समृद्धिक मृगतृष्णा घुरिके

पाछू तकबाक लेल एखन धरि विवश नहि कैलकैक अछि । अरबक जगमगी ओकरा मे प्रदर्शनप्रियता आ अपन देस आ लोकवेदक प्रति हीनमन्यता भरैत अछि । मुस्लिम पुरूखक दू पीढ़ीक ई मानसिकता हसीना मंजिल मे जगजिआर होइत अछि । ओना ई मात्र मुस्लिम पुरूखटा क मानसिकता नहि थिक, नहि भ' सकैत अछि । कोनो जाति वा' धर्मक पुरूख एहि मानसिकता सँ ग्रस्त भ' सकैत अछि । उल्लेखनीय तथ्य एतबेटा भ' सकैत अछिजे अपना ओहिठामक अथवा भारतक अन्य क्षेत्रोक मुस्लिम पुरूखक स्वतंत्रतापूर्वक पीढ़ी अपन कामना आ स्वप्न पाकिस्तान संग आ बादक पीढ़ी अरब देश संग जोड़ब सुविधाजनक मानैत अछि । अन्य जाति वर्गक लोक के एहि तरहक कोनो सीमा नहि छैक । मुदा, उपन्यास लेखिका के एहि बात के कहबा सँ बेसी प्रताड़ित आ पुरूखक 'बेरूखी' क आघात सहनिहारि स्त्रीगणक संघर्षगाथा कहबा मे रूचि छन्हि । उपन्यास क अंत एकटा दोसरो कोण सँ विचार करबाक लेल वाध्य करैत छैक । अकस्मात् मस्जिद मे भूकम्पक कारणे उसमानक जीवनक अंत किएक? उसमानक मृत्यु लेल प्राकृतिक आपदाक कोन प्रयोजन छलैक? की अपन पत्नी हसीना संग कएल अपराधक दण्ड आ प्रायश्चित भूकम्पे सँ आ मस्जिदे मे भ' सकैत छै? अथवा एहि देस मे बत्तीस दाँतक बीच आँकर-पाथर बनि नहि रहबाक आ' नवदेस पाकिस्तान मे अपन भविष्य देखबाक अपराध एहन अपमृत्यु के कारण अछि ? धर्म आ मजहब पर आधारित द्विराष्ट्रवादक सिद्धान्त क एहन करूण प्रायश्चित मस्जिदे मे सम्भव छैक ? अल्लाक घर मे ? ईश्वरक गोड़थारी मे? उपन्यासक आ बूढ़ा उसमानक अंत नाटकीय भइयो के अपन प्रभाव मे एहि सभ प्रश्न के उठबैत अछि। जहिना ई सभ प्रश्न ओ विचारक कोनो समाधान हठात् नहि देल जा सकैत अछि, सम्भव तत्काल नहि लगैत अछि, तहिना लेखिका सेहो एहि चुनौती के बूझि भरिसक एहन अंत सृजित केलनि अछि । एहि प्रकारें एहन नाटकीय अंत विचारक प्रश्न उठेबाक सामर्थ सँ ओत-प्रोत रहबाक कारणें उपन्यासक-कमजोरी नहि बनि पबैत अछि । जखन की प्रथमदृष्टि मे आन तरहक प्रभाव छोड़ितो कमजोरी लगैत छै।

उषाजीक आन उपन्यास एवं कथा सभक जेना अहू उपन्यास मे स्त्रीक कर्मठता, स्त्री संग कैल गेल अन्याय, स्त्रीक आर्थिक स्वाबलम्बन सँ अर्जित सामाजिक प्रतिष्ठा क गप्प नीक जकाँ अभिव्यक्त भेल अछि । लहेरी परिवार आ चौधरी परिवारक निकटता, मोह-ममत्व, इज्जति देबाक कथा सँ मिथिला मे साम्प्रदायिक सद्भावक उदाहरण सेहो प्रस्तुत कएल गेल अछि, जे नीक लगैत छै । अनेक छोट-छोट घटना आ वर्णन सँ उपन्यास लेखिका कथा-प्रवाह के पूर्णतया नियंत्रित केने छथि आ पाठक के एक बेर उपन्यास उठा लेला पर किछु कालक बाद छोड़बाक मोन नहि करैत छैक । उपन्यास क शैली विन्यस्त अछि।

मिथिला समाजक मुस्लिम परिवार क सुख-दुख, अभाव-अभियोग, समयक संग बदलैत मानसिकता, विकासक इच्छा, मिथिलाक प्रति प्रेम आदि विषय पर इंगित-आधारित बहुतो कथा मैथिली मे आएल अछि । मैथिली क आधुनिक कथा मे 'माइलस्टोन' मानल जाए बला स्व० ललितक कथा 'रमजानी ' मुस्लिम परिवारोक कथा कहैए। स्व० राजकमल चौधरीसँ लऽ कए रमेश धरि अनेक कथाकार क कथा मे मुसलमान चरित्र आ मुस्लिम परिवारक इति-वृत्त खूबे आएल अछि । उपन्यासो सभ मे आएल अछि । मुदा सम्पूर्णतः मिथिलाक अदौकालक बासिन्दा (डीही) लहेरी

परिवार पर आधारित उपन्यास मैथिली मे पहिल बेर आयल अछि । एहि अर्थ मे उषा किरण खानक लिखल हसीना मंजिल एकदम टटका आ पठनीय अछि । उपन्यास क एहि अकाल आ विकाल समय मे एहि उपन्यासक आगमन एक सुखद अनुभूति जगबैए तथा भविष्यक प्रति आश्वस्त करैए जे श्रीमती खानक संग आनो लेखक लोकनिक ध्यान एहि दिस जेतनि । मोटा-मोटी मैथिली उपन्यास अधिकांशतः मैथिल ब्राह्मण परिवारक कथा कहैये । मिथिला आ भारतक सार्वभौम समस्या सभ के उठबैत अछि । मुदा 'हसीना मंजिल' उपेक्षित आ पिछड़ल लहेरी परिवारक सुख-दुख क कथा कहि मैथिली उपन्यास लेखन के नव क्षेत्र मे प्रवेश करौलक अछि । कथानकेक क्रम मे आएल उपन्यासक किछु विन्दु-यथा मुस्लिम दू पीढ़ीक मानसिकता, नवदेस पलायन क महत्वाकांक्षा, कामना, अपन देस आ परिवारीक प्रति हीनभावना आदि उपन्यास के विचारो सँ लैस करबा मे सहायक बनल अछि । एतावता उषाकिरण खान के लहेरी परिवारक निकटता प्राप्त छनि, लहेरी जीवनके कहियो नजदीक सँ देखने छथि, लहेरी स्त्रीगणकश्रमशील स्वभाव, संघर्षशीलता आ' दैहिक-मानसिक सौन्दर्य प्रभावित केने अछि । उपन्यास क छपाइ साफ-सुथरा अछि। मुदा प्रूफक गलती अखर' वला अछि । एहन सुन्दर उपन्यास क प्रकाशन मे एहि प्रकारक लापरवाही नहि हेबाक चाहैत छलैक । भविष्य मे लेखिका एहि बातक ध्यान रखतीह से अपेक्षा सहजहिं हुनका सँ कएल जा सकैत अछि ।

ब.-अशोक

चर्चित उपन्यास :
हसीना मंजिल, लेखिका-उषाकिरण खान,
प्रकाशक-प्रकाशनमंच, बन्दर बगीचा, पटना, वितरक-जिज्ञासा प्रकाशन,
बन्दर बगीचा, पटना-1
मूल्य-साठि टाका ।



सन्धान-1

प्रसंग चारिटा कविता-संग्रहक

एकपेरिया आ राजपथ टपैत कविता

धार बहैत अछि टेढ-घोंच
थोड़ेक गति लेल
बहुत भार छैक ओकरा माथ पर
गाछ सभके देबाक छैक भोजन
ओकरा चिड़ेक ठोंठ भिजयबाक छैक
भरबाक छैक गहूमक घास मे
हजारटा दाना
बहुत छैक भार ओकरा माथ पर
एकटा नांन्हिटा धार
आ टेढ़-बकुली धार

(जीवकान्त)

डाकू छेकल बटोही जकाँ कलपैत
बसात बचा रौद तपैत
भाकुर माछ जकाँ मुँह बबैत
सत्तरि वर्षक बाबी
हारल नटुआ जकाँ झिटुका बिछैत छथि
आ घर सँ चोराक'
कीआ-ककबा
सिरहन्ना मे राखि लैत छथि

(उदय चन्द्र झा 'विनोद्र')

ओ अजन्मा भगीरथ !
पहिने पीढ़ीक उद्धार करू
तखन एहि बिकायलि धरती पर पएर धरू
ओना, अहाँक नाम
महाजनक खाता मे टिपा गेल अछि
सूद सहित मूर सभ लिखा गेल अछि,
जन्म लेबा सँ पूर्वहि अहाँक
जीवन बिका गेल अछि ।

(उपेन्द्र दोषी)

ई रुपया थिक/ दौड़ैत अछि, ई फाइल थिक/सड़ैत अछि, टाड. दुनूमे सँ ककरो नहि छैक, ई दूटंगे थिक जे ककरो दौड़बैत अछि, ककरो सड़बैत अछि,

(रमेश)

चेतना समिति, पटना द्वारा आयोजित विद्यापति पर्व 1996 मे लागल पोथी पंडालमे चारिटा सद्यः प्रकाशित कविता-संग्रह बेस चर्च-वर्च क संग आएल। वातावरणमे ककरो नाम, ककरो रूप चकभाउर कटैत रहल । एक विचित्रताक आभास दैत रहल पोथी सभ । स्वाभाविक रूप सँ विचित्रताक प्रति आकर्षण उपजै छै, से उपजलै । खाँड़ो (जीवकान्त) कहलनि पत्नी (उदय चन्द्र झा 'विनोद'),यंत्रणाक क्षण मे (उपेन्द्र दोषी), समवेत स्वरक आगू (रमेश) नाम पढ़लहुँ । पोथी सभकेँ उनटा-पुनटाक' देखलहुँ । सभहक छपाइ-सफाइ नीक । एक दिस 'खाँड़ो' आ दोसर दिस 'समवेत स्वरक आगू' बीच मे 'कहलनि पत्नी' आ 'यंत्रणाक' क्षण मे' । सभहक प्रकाशक अपन-अपन योग्यता-क्षमता प्रकट करैत। 'खाँड़ो' आ 'समवेत स्वरक आगूक' प्रकाशक किसुन संकल्प लोक, सुपौल तथा 'कहलनि पत्नीक' प्रकाशक उर्वशी प्रकाशन, पटना अपना दिस सँ कोनो 'प्रकाशकीय' वक्तव्य नहि देलनि अछि। मात्र 'यंत्रणाक क्षण मे' पोथीक प्रकाशक भूमिजा प्रकाशन, कलकत्ता 'प्रथम पुष्प' शीर्षक सँ लिखलनि अछि । अपन प्रकाशनक उद्देश्य प्रकट करैत प्रकाशक लिखैत छथि जे, 'मैथिली प्रेमी सुधी सभक प्रोत्साहन पाबि 'किछु' करबाक दिशामे एहि संस्थासँ सम्बद्ध हम सभ अग्रसर भेलहुँ ।' प्रकाशककेँ पोथी प्रकाशनक पूर्व अनुभव प्राप्त छनि मुदा मैथिली प्रकाशन क्षेत्र एकदम नवीन छनि । मैथिली प्रकाशन क्षेत्रक 'विहंगम सर्वेक्षण' कएला पर ई 'प्रतीत' भेलनि जे 'उपग्रह संचारक प्रेषणक युग मे एखनहुँ हम सब 'कठही गाड़ी' पर छी ।' तैं आधुनिक प्रबन्ध आ प्रौद्योगिकी सँ मैथिली केँ जोड़बाक परिकल्पनाकेँ साकार करबाक क्रम मे प्रकाशककेँ मैथिली कविताक सशक्त हस्ताक्षर उपेन्द्र दोषी 'हाथ लागि' गेलथिन । एहि प्रकारें प्रथम पुष्प अर्पित भेल । प्रकाशकक प्रति आभार प्रकट कएल जा सकैत अछि । एहन दरिद्रभंजन मैथिलीक प्रति बहुत कृपापूर्वक 'किछु' करबाक लेल प्रेरित भेलाह । उर्वशी प्रकाशन अपने त' नहि किछु बजलाह अछि मुदा 'कहलनि पत्नीक' 'कभर' पर सभ किछु कहि देलनि अछि । 'चटनी' पिसनिहार आ ओलक साना, रैता बनौनिहारमे फर्क होइत छैक तकर फड़िछौट उर्वशी प्रकाशनकेँ क' लेबाक चाही । चारू पोथीक प्रकाशन के देखैत ई

स्पष्ट होइत अछि जे प्रकाशनक पाछू प्रकाशकक स्पष्ट मानसिकता, सोच आ सर्वांगीण जानकारीक कतेक जरूरति होइ छै । मैथिलीक आन क्षेत्र जकाँ प्रकाशनोक क्षेत्रमे गम्भीरताक अभाव आब बरदास्त सँ बाहर बुझाइत छैक । ओना मैथिलीमे प्रकाशक छथिहे नहि वास्तविक अर्थमे ।

डेरा पर पोथी सभ पढ़ब प्रारम्भ केलहुँ । दृश्य पर दृश्य उभरैत गेल । क्लोज अप, इम्पोज, सुपर इम्पोज, जूमक प्रयोग । साज बजैत रहल । इसराज...... सारंगी...डफरा-बंसुली...ढोल-पिपही...तासा...धुतहू....। शब्द गामक एकपेरिया, खेतक आरि, बलुआह धार, खरंजावला सड़क, पीचरोड, राजपथ, टपैत रहल। दृश्य-श्रव्यक समानान्तर एक जीवन सेहो चलैत रहल । रससँ भरल, द्वन्द्व आ आकर्षण मे पड़ैत-चौंकैत, पीड़ासँ छटपटाइत, सुखमे इतराइत, बच्चा जकाँ ठुनकैत आ'आक्रोशमे पतक्खा लेने आगूए आगू दौड़ल चल जाइत । एक सोझमतिया, संवेदनासँ परिपूर्ण, अपनो पर हँसि सकबाक क्षमता रखनिहार, प्रेमक मारल, स्थिति सँ झमारल, नाक पर क्रोध रखने शुद्ध मैथिल मनुक्ख प्रकट भ' जाइत अछि सोझाँ। लगैये जेना टी० भी० स्क्रीनसँ बाहर मूड़ी निकालि कोनो दार्शनिक सन ई मनुक्ख कहि रहल हो, हे, जहिया अहाँक जीवनमे दुखे-दुख रहि जाय, अहाँ बूझब जे संसारक सभसँ सूखी प्राणी अहींटा छी ।

एहि सुख-दुखक परिभाषासँ बलजोरी अपनाके बिलगबैत देखैत छी जे चारू कविता संग्रहक कवि तीन पीढ़ीक कवि छथि । एक दिस जीवकान्त दोसर दिस रमेश आ बीच मे एकहि पीढ़ीक उदयचन्द्र झा 'विनोद' आ उपेन्द्र दोषी। मोटा-मोटी उपेन्द्र दोषीकेँ छोड़ि तीनू कविक टटका कविता (वर्ष 1994 सँ ल' कए जुलाइ 1996 धरिक) सभ संग्रह मे अछि । दोषी जीक त' अधिकांश 1980क पूर्वहिक अछि । अंतिम एकटा 1991 क थिक । आब कने पृथक-पृथक कविता-संग्रह सभकेँ देखल-परेखल जाय ।

खाँड़ो : गति लेल चौंकबैत कविता

मैथिलीक श्रेष्ठ कवि जीवकान्तक कविता-संग्रह 'खाँड़ो' पढ़ैत लगैत अछि जे अन्ततः गति जरूरी अछि जीवन लेल । जड़ समाज आ ठमकल मनुक्खके स्वभावमे गतिशीलता अएबाक चाही । टेढ़-बकुली धार सैह सिखबैए । कवि जीवकान्त गति लेल चौंकि उत्पन्न करैत छथि, मुदा सम्पूर्ण कविता-संग्रहक आन्तरिक लयमे डूबल पाठक एहि गतिक चौंकि सँ चौंकि जाइये ।'

जीवकान्तक कवि बहुत आवेस, लगाव आ ममत्व सँ प्रकृति केँ निहारैत अछि, दुलारैत अछि । पृथ्वीक प्रति, मायक प्रति, चिड़ै-चुनमुनीक प्रति, गाछपातक प्रति अनुरागसँ भरल आ एहि सभसँ जीवनरस पबैत जीवकान्तक कवि जीवन केँ सोझ मानैत अछि, देखौआ नहि बुझैए । ओ जनैत अछि जे जीवन ओतबे हरियर अछि जतबा हरियर छथि सूर्य सीसोक पात मे । जीवन लेल रस बचाक' रखनिहार धरतीक प्रति कृतज्ञताज्ञापन करैत अछि कवि ।

वायुमे बचल प्राणवायु आ संजीवनीक बल पर जीबैत प्रकृतिए सन सोझमतिया, रंग-विरंगी लोक छोट-छोट चिड़ै सभक साझी उड़ान, साझी स्वर, साझी जीवनक सुन्दर

एकलयता, मधुर एकस्वरता सँ मोहित होइत अछि। सोझमतिया लोकक संतोषी जीवनक रहस्य खौलैत कवि जीवकान्त कहैत छथि,

रंग उठाउ जतबा जरूरी हो जीबाक लेल
उठबैत अछि जतबा रंग आमक पात
नवका कलशमे
....
गन्ध ओतबे जे जरूरी हो जीबाक लेल
गन्ध जतबा आमक मज्जर उठबैत अछि।

प्रकृतिमे व्यवहारिक ज्ञान पबैत कवि जीवकान्त अनावश्यक तथा अतिरिक्त साधन स्रोत हड़पबाक प्रवृत्ति छोड़बाक लेल सेहो कहैत छथि। प्रकृतिक लग रहनिहार लोककेँ लोभाइत नहि देखैत छथि कवि। एहन लोककेँ लग चालाकी आ अविश्वास नहि छैक। ओकरा शब्द सिखबाक कोनो छटपटी नहि छैक। मुदा एहन लोकक संतानकेँ ठक आ अहंकारी लोक हड़पि लैत अछि। संतान तखन शब्दक नटखेल सीखि जाइत अछि। ठक भ' जाइत अछि।

किछु कविता मे शाश्वत ज्ञानसँ लोकमे संस्कार भरैत छथि कवि। बिना जरने कियो सूर्य नहि कहा सकैत अछि। सुगन्ध जोगेबाक लेल तपस्या कर' पड़ैत छैक। जीवनकेँ सार्थक कर' पड़ैत छैक। चुप्प रह' पड़ैत छैक एगारह मास। बनय पड़ैत छै गाछ, नीम चमेलीक गाछ। माए कैँ देखि सेहो बहुत किछु सीखल जा सकैत अछि। माए अपसियांत घरक-चुआठ सँ बीज कैँ बचबैत छथि। माए बोध दैत छथि। ई बोध करबाक लेल बहुतरास बाँचल काज, बचएबाक लेल बहुत रास वस्तु दिस इंगित करैत अछि।

कवि जीवकान्त गाममे सहज, उत्फुल्ल, रससिक्त बुझाइत छथि मुदा शहर मे डीजलक धुआँ पीबैत गाछ-वृक्ष, ट्रक-बस, सड़ल पानि सँ भरल नाली, करिया गादि देखैत छथि। शहरक प्रति कोनो आकर्षण नहि छनि। रोगाह कनैल गाछ कैँ शहरो मे फुलायब नहि छोड़ैत देखैत छथि मुदा साफ-सफाइ कर' बला लोक शहर छोड़ि देलक अछि। श्रम कर'बला तथा प्रकति सँ प्रेम कर'बला शहर छोड़ि रहल अछि। शहर मे कविकेँ मात्र रचि-रचि क' बनाओल कटगर ग्रिल आकर्षित करैत छनि। खॉड़ोमे शहर आ गाम पर अनेक टिप्पणी अछि। चिन्ता अछि। शहरमे रहैबला लोक प्रकृतिसँ दूर आ आलसी भ' रहलए से लक्ष्य करैत छथि कवि जीवकान्त।

शहर मे जेना कटगर ग्रिल दिस आकर्षित होइत छथि कवि तहिना गाममे बहैत धार सेहो आकर्षित करैत छनि, मुदा दूनूक आकर्षणमे निहित तत्व मे अन्तर बुझाइत अछि। ग्रिलक कलाकारी आकर्षक अछि त' धारक स्वभाव तथा स्वभाव बचा क' रखबाक प्रवृत्ति आकर्षक अछि। गति धारक स्वभाव छैक। अपन स्वभाव धार उत्तरदायित्व तथा कर्तव्य पूर्ण करबाक लेल बचाक' राख चाहैत अछि। भले टेढ़-बकुली भ' जाय। तरूआरिक सम्बन्ध सेहो गति सँ छैक। खॉड़ो तरूआरि थिकीह। धारक प्रति लगाव गतिक प्रति लगाव थिक। कवि जीवकान्त मानैत छथि जे प्रकृतिसँ बहुत किछु सीखल जा सकैए। तैं प्रकृति सँ लोककेँ दूर नहि जेबाक चाही। एहिसँ लोकक स्वभाव बदलि जाइत छैक। लोक निष्क्रिय होइये।

कहलनि पत्नी : उत्तर द्वैत कविता

लोकप्रिय कवि उदयचन्द्र झा 'विनोद' क आठम कविता-संग्रह (दोहा लगाक') 'कहलनि पत्नी' मे पत्नी आ खास क' कए स्त्री पर आधारित बहुत रास कविता संग्रहीत अछि। विभिन्न बएसक स्त्रीक राग, अनुराग, लालसा, बिछोह, पीड़ा, बुधियारी चित्रित भेल अछि। आनो विषय पर आधारित कविता सभक अतिरिक्त कविता पर आधारित कविता सेहो अछि। जाहि मे कविता चाही आ' घुरिऔती कविता शीर्षक कविता कवि द्वारा कविता पर टिप्पणी थिक। कविता चाही मे कवि विनोद कहैत छथि जे कविता लिखब आइ आर अधिक भ' गेल अछि आवश्यक। संगहि हुनका इहो विश्वास छनि जे अन्हारकेँ उकन्नन करती कविता। ओ, अऔती, घुरि अऔती कविता। मुदा संग्रहक शीर्षक कविता 'कहलनि पत्नी' मे पत्नी पति कैँ अंतिम रूपसँ कहैत छथिन जे-

काज की अछि कविताके
एहन सघन अछि अन्धकार
आनू सविताके
अपनो सोचियौ
रहल न दिन
बाँचल कविताके।

कोनो पत्नी द्वारा कविता पर सन्देह आ अनास्थाक एहना स्थितिमे कविक कविता पर विश्वास; आस्था आ प्रयोजनीयताक विचार प्रस्तुत करब प्रशंसनीय कहल जा सकैए। लगैए जेना शीर्षक कवितामे कहल मन्तव्य पर कवि टिप्पणी क' रहल होथि। ओकर उत्तर द' रहल होथि।

स्त्री पर आधारित विभिन्न कवितामे नीरव बालिका, बड़की पीसी, बाबी मे जीवनक प्रति लालसा, दुख, स्थितिबोध बहुत प्रच्छन्न रूपें प्रकट भेल अछि। कवि विनोद मैथिल जीवनक चित्र खींचबामे बहुत पारंगत मानल जाइत छथि। मिथिलाक गाम-घर, बाध-बोन, लोक-वेद, माटि-पानि हुनकर कवितामे अपन खास शब्दावली आ भंगिमाक संग अबैत रहल अछि। लोक हुनकर कविता सुनबा अथवा पढ़बाकाल मिथिला मे बुलबाक-टहलबाक सुख उठा लैत अछि। वातावरण आ चरित्र सभ मैथिलाम भेटि सकैत अछि विनोदक कवितामे। कविता कहबाक ढंग सेहो मैथिलाम रहैत अछि। भाषाक प्रकृति सेहो मिथिला समाजसँ उठाओल लगैत छै।

बहुत ठाढ़ रहलियै
बैसि जइयौ अपने
बहुत रास रचौलियै
बैसि जइयौ अपने
बहुत फूसि बजलियै
बैसि जइयौ अपने
बहुत मंत्री बनलियै
बैसि जइयौ अपने।

कवि उदयचन्द्र झा 'विनोद' क 'कहलनि पत्नी' कैँ पढ़लाक बाद लगैए जे मिथिला आ मैथिल विनोदजीक खूबी आ सीमा दुनू छनि। जखनहि ओ एहि सीमा कैँ टपबाक कोशिश करैत छथि देखार हुअ' लगैत छथि। मुदा अपन खूबी मे अप्रतिम छथि कवि

उदयचन्द्र झा 'विनोद'।

यंत्रणाक क्षण मे : मकैक लाबा सन फुटैत कविता

भोक्ता कवि उपेन्द्र दोषीक कविता संग्रह' यंत्रणाक क्षण मे' पढ़लाक बाद एक सम्पूर्ण मैथिली कवि सम्मेलन सुनि लेबाक सुखद अनुभूति होइत छैक। कवि-समीक्षक भीमनाथ झा संग्रहमे अपनत्व सँ भरल 'भीड़ सँ फराक' भूमिका मे लिखैत छथि जे, 'जे कवि होइत अछि तकर हृदय सँ कविता फुटैत छैक-मकैक लाबा जकाँ। जेहन धीपल बालु, तेहेन फुटल-फुटल लाबा। बालु जँ धीपल नहि हो त' कवितो किरड़ी भ' जाइत छैक।' यंत्रणाक क्षण मे संग्रहीत कविता सभहक अध्ययन-अवलोकन सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे कविता सभ मकैक लाबा सन फुटल अछि। बालु अवश्य धीपल छनि। मुदा ई नहि कहल जा सकैत अछि जे किरड़ी एकदम्मे नहि छैक। एकर कारण बेर-बेर बालुकेँ आगि पर सँ उतारब लगैत अछि। तेँ कविक हृदय-कंसारक प्रबन्धन ठीक नहि छनि से कहल जा सकैत अछि।

'यंत्रणाक क्षण' मे कविता-संग्रह के पढ़ैत कोनो संग्रहक सार्थकता आ परिभाषा पर विमर्श करबाक इच्छा हुअ' लगैत छै। संग्रहक अर्थ की ? आइ धरि जे किछु लिखल अछि-अपना मोन सँ, फरमाइसी सभटा केँ ओहि मे संग्रहीत क' दी ? आब पाठक 'वस्तुस्थिति' के चिन्हैत रहथु। 'व्यक्तित्त्व' तकैत रहथु। कथा वा कविताक संग्रहमे रचनाक तारतम्यता, आन्तरिक प्रवाह, एकसूत्रता, विषयक चयन, रूपक ठेकान राखब की आबो जरूरी नहि बुझाइत छनि मैथिली रचनाकार के ? मानल जे दोषीजी क ई पहिल कविता संग्रह छियनि। मुदा कोनो किशोर कवि त' ओ नहि छथि। दुनियाँ कत' सँ कत' चल गेल। व्यवस्था आ प्रबन्धकलाक एतेक विकास भ' गेल। दोषीजीकेँ जे मोन भेलनि तकरा उठाक' संग्रह मे ध' देलथिन। एहि सभमे दिमाग लगेबाक कोन काज ? बानगी सभ देखल जाय–

'सहटि चलू कोबर सँ भोर भेल बहिना.....'
' परसूखन श्री कृष्णजी अयला हमरा द्वारि.....'
'हे, रौ, फुलेना आ ने रौ......'
'भोजक समय तुलायल आ केरा धुकै छी हम....'
'एहि असार संसार मध्य उल्लू हमही छी......'
'मोन उखड़ल, बात उखड़ल सन लगै...ए....'
'सुधा बूझि पीबि गरल, काल सँ लड़ैत छी......'
'सुनगि गेल छै बन-पलास मे आगि.....'

गीत, गजल, भजन, कविता सभटा एक्केठाम गेंटल। जेकरा जे मोन हुअए तकर आनन्द लिअ'। एहिठाम सभ किछु भेटि सकैत अछि।

ओना फराक-फराक कवि दोषीक कविताक आनन्द उठाओल जा सकैत अछि। जाहि विषयकेँ ओ अपन कविता मे उठबैत छथि ओकरा ओहि क्षण डूबि क' व्यंजित करबाक कोशिश करैत छथि। विन्यसित करैत छथि। असल मे कवि दोषीकेँ 'कमेन्ट पास' करबामे महारत हासिल छनि। उपेन्द्र दोषीक टिप्पणी/ मन्तव्य अपूर्व होइत अछि। प्रभावशाली होइत अछि। ओहिमे कने वक्रता हास्य-व्यंग उत्पन्न करैत अछि। एहि

कारणे कवि दोषीक छोट-छोट कविता बेसी सटीक लगैत अछि। जखनहि ओ विस्तार मे जाइत छथि ढील-ढाल भ' जाइत छथि। पैघ कवितामे बेंसी सचेत सन सेहो लगैत छथि कवि दोषी। जेना पैघ कविता रचबाककाल हुनकर चेतना कने बेसिए साकांक्ष भ' गेल हो। तेँ पैघ कवितामे तीव्रता आ' औचित्यक निर्वाह नहि भ' पबैये।

सहजता दोषीक प्रमुख गुण थिक। सहजभाव सँ बिना कोनो पेंच-पांच केँ ओ अपन बात कहि देबाक अभ्यासी छथि। जखने पेंच-पाँच कर' लगैत छथि देखार हुअ' लगैत छथि। कवि दोषीक यैह प्रकृति हुनका घिनाओन, झंझटिया विपरीत, परेशानी सँ भरल वातावरण सँ उबा दैत अछि। ओ एकरा सह्य नहि क' पबैत छथि। हुनका मोन हुअ' लगैत छनि जे एहि वस्तु, वातावरण क मूलोच्छेदन क' दी। ह'......ह'....ह'...चल...गेल...। यैह भाव 'संवैधानिक शिशुकेँ' बेर-बेर नपुंसक, डपोरशंखी, पतंगबाज, रीढ़हीन, भ्रष्ट जनमैत देखि क' विखिन्न भ' जाइत अछि। हुनका हुअ' लगैत छनि जे एहन कोनो 'वैज्ञानिक अस्त्र' होइते जे एहन शिशुके गर्भ सँ झीकि क' खलास क' दितैक,

आवश्यक अछि एहन कोनो वैज्ञानिक अस्त्र
जे गर्भस्थ शिशु केँ झीकि
क' दिअए खलास
कोखि भ' जाय-शुद्ध आ' बाँझ
ने रहत बाँस, ने बाजत बसुली....।

समवेत स्वरक आगू : चकविदोर लगबैत कविता

कथाकार-कवि रमेशक 'समवेत स्वरक आगू' पढ़ैत रचना सभ चकविदोर लगबैत अछि। पेटमे जेना किछु हौंड़' लगैए। शरीरक हवा जेना निकलि जाइए। एतेक लम्बा 'रेंज' छनि, आज्ञा डेला सँ ओनिडा-ओनिडा धरिक जे पाठक के लगैत छैक जे विशाल समुद्रक पानि घुमबैत-फिरबैत बलुआह जमीन पर पटकैत हो। मुदा एहि मे मजा सेहो अबैत छैक। ऐहि लेल लोक बेस उत्साह सँ समुद्रक कात जाइत अछि। रामहिंडोला पर चढ़ैत अछि। एहि सभमे 'एडभेंचर' अनुभव होइत छैक। हिंडोला पर घुमबाक, समुद्रक लहरि लेबाक। रमेशक तोड़-फोड़ समुद्रक ज्वार-भाटा सन बुझाइत छैक। मुदा एहि लेल रिस्क त' लिअहि पड़तैक। पहिनहिं जँ गरजैत समुद्रकेँ देखि पतनुकान ल' लेत त' सुख कोना उठाओत? मोती कोना भेटतै?

जहिना समुद्र निस्सीम अछि, तहिना रमेश सेहो कोनो प्रकारक बन्धन सँ मुक्त छथि। केवल अनुभव केलहुँ आ ओकरा अभिव्यक्त क' देलहुँ। कखनो लक्षणा-व्यंजना मे, कखनो ठाँहि-पठाँहिं। कहबाक वेगरता, स्थितिक चुभनि हुनका तीलिया-फुलिया करबाक 'टेम' नहि दैत छनि। इहो भ' सकैए जे यदि ओ निचेन भ' कए कह' लगताह त' बात गड़बड़ा ने जाय। तेँ रमेशक कविताक लहरि लेबाक चाही। ओकर रूप आ अव्यवस्था सँ घबड़ेबाक, भरकबाक नहि चाही। लहरिलेबा मे अहाँक नाक-कान, मुँह बालु सँ भरि जा सकैत अछि। लहरि कखनो नीक जकाँ पटकियो देत। मुदा एहि सभ 'टीस', दर्द मे जे 'मजा' छैक से बैसले-बैसल रमेशक कविताकेँ पढ़ि उठाओल जा सकैए, जानल जा सकैत अछि।

'डाँस कटैत, जोनि मे कौआ लोल मारैत, पोसनिहार केँ कसाइक प्रतीक्षा, देखनिहार केँ असाइक नकघोंकची आ अपना-आपकेँ डकहाक प्रतीक्षा , डिड़िआइत-सड़लगड़ल तांत्रिक जकाँ, रड़ियाइत-बातरसी वृद्ध पहलवान जकाँ, मुक्ति-कामना-कालीघाटक वृद्धा वेश्या जकाँ, आँखि पथरायल-मिथिलाक थाकल-हारल कर्मकाण्डी जकाँ, क्रान्ति प्रतीक्षा ?- भारतीय बुद्धिजीवी जकाँ, एहि महापूर महींसक गोंत आ छेरकट सँ आब नकमनि भ' गेल भाइ',

रमेशक एहि नकमनि सँ नाक घोंकचायब त' हुनकर कविताक दोसर रूप कोना देखि सकब ?

'कतओक मन्वन्तर सँ नीम-भाँटा आ हुड़हुड़क छौंक ले हमर जीह पनिआएल अछि नानी, खड़ना आ पड़नाक कठिया-लाड़निक अर्थ के बुझाओत हमरा ? डराडोरि मे लहसूनक जाबा गाँथिक' दसमी मे रछिया देब' बाली आ बाकसक पात-भाँटिक मूड़ी पीसि क' खुरचन मे पियाब' वाली हमर नानी ! अहाँ दरदमेदाक रस पीबि क' कत' लटुआएल छी ? अहाँ गोठुल्ला मे किए बैसल छी-की भेलए नानी ?'

एहिना घुमबैत-फिरबैत, भीजबैत, तीतबैत, गरम हवा दैत, सुखबैत, घुर्मा लगबैत, हुलास भरैत रमेश 'अहाँके उठा क' ठाढ़ क' देताह । आ' जोर-जोर सँ हाथ चमका क' कह' लगताह,

'बर्फ मे गलबाक इतिहास मनुक्खक छै । आगि मे झरकबाक इतिहास मनुक्खक छै । भरल कटोरा माहुर एक छाक मे पीबाक इतिहास मनुक्खक छै। रेशमी तागक फॉस मुसकीक संग गरदनि मे पहिरि लेबाक इतिहास मनुक्खक छै । मुदा हारि मानबाक कोनो टा इतिहास मनुक्खक नहि छै ।'

रमेश अपन एहि 'ट्रीटमेंट' सँ अहाँके मनुक्ख बनब' चाहैत छथि से बुझबामे अहाँके भांगठ नहि रहबाक चाही । एहन मनुक्ख जे एहन विक्षिप्त समयमे बन्न कोठलीमे ठरड़ नहि पाड़य ।

एहि प्रकारेँ चारू कविता संग्रह केँ पढ़ैत पाठक- प्रकृति, गाम, सोझमतिया लोक, सोझ-साझ जीवन केँ देखैत गति धरैत अछि । मोन मे ममत्व, शाश्वत ज्ञान ओ संस्कारक सुगन्धि लेने घर-बाहर करैत, मिथिला मे बुलैत-टहलैत, मैथिल सभ सँ भेंट-घाँट करैत, विभिन्न कमेंट सभ सुनैत अछि । गीत, गजल, भजन बजबैत अछि । मुदा नपुशंक वातावरण, घिनाओन समयक दबाब सँ विखिन्न होइए । ओ राम हिंडोला पर चढ़ैत अछि । समुद्रक लहरि लैत अछि । 'टीस' सहैत अछि। हुलसैत-फुलसैत अछि । विहुँसि क' सभटा विचार सुनैत अछि । मैथिली कविता के एक पेरिया आ राजपथ टपैत देखैए । कविताक मैथिल मनुक्खक उपदेश सहैए......।

-अशोक

चर्चित पोथी :

खाँड़ो- जीवकान्त, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, मूल्य-पन्द्रह टाका
कहलनि पत्नी-उदयचन्द्र झा 'विनोद', उर्वशी प्रकाशन, पटना, मूल्य-पन्द्रह टाका
यंत्रणाक क्षण मे-उपेन्द्र दोषी, भूमिजा प्रकाशन, कलकत्ता, मूल्य-तीस टाका
समवेत स्वरक आगू-रमेश, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, मूल्य-पन्द्रह टाका

एहि अंकक रचनाकार

हेतुकर झा : जन्म-फरवरी 1944 ग्राम सरिसव, (मधुबनी), प्रसिद्ध समाजशास्त्री, 'चेतिका' एवं 'परिस्थिति' (कविता) आ 'उपनिवेशकालीन मिथिलाक गाम ओ गामक निम्नवर्ग' पोथी मैथिली मे प्रकाशित । एकर अतिरिक्त विभिन्न निबन्ध ओ शोघ-पत्र अंग्रेजी, मैथिली ओ हिन्दी मे प्रकाशित । सम्पर्क-आशियानानगर खाजेपूरा, पटना ।

महेन्द्र नारायण कर्ण : प्रसिद्ध समाजशास्त्री, अंग्रेजी ओ हिन्दी मे अनेक शोधपरक निबन्ध प्रकाशित । मैथिली साहित्यक प्रति विशेष अभिरूचि, पूर्व निर्देशक ए० एन० सिन्हा, इंस्टीच्यूट, पटना । सम्पर्क-समाजशास्त्र विभाग, पुर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग (793014)

गोविन्द झाः अक्टूबर 1923 मे जन्म । 'बसात', 'राजा शिवसिंह', 'अंतिम प्रणाम', 'रूक्मिणीहरण' शीर्षक सँ नाटक प्रकाशित । 'सामाक पौती' तथा 'नखदर्पण' कथा संग्रह । कतेको पोथीक सम्पादन ओ लेखन। भाषाशास्त्री । साहित्य अकादमी सँ पुरस्कार प्राप्त । सम्पर्क-9, पटेलनगर (पूर्व), पटना ।

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' : जन्म-23 नवम्बर 1951 । कवि-नाटककार, प्रसिद्ध भाषाविज्ञानी । 'अमृतस्य पुत्राः, कवयोवदंति (कविता संग्रह) एवं 'रामलीला', 'एक छल राजा', प्रत्यावर्त्तन (नाटक) आदि एक दर्जन सँ बेसी पोथी प्रकाशित । सम्पर्क-अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद ।

नारायणजीः जन्म-1 जनवरी 1956, घोघरडीहा, मधुबनी । 'हम घर घुरि रहल छी ' (कविता संग्रह) प्रकाशित । मैथिलीक कवि-कथाकार। सम्पर्क-घोघरडीहा, मधुबनी (847402)

संजय कुन्दनः जन्म- 7 दिसम्बर 1969, पटना मे । हिन्दी मे एम० ए० । पत्रकारिता। हिन्दी मे कतेको कविता प्रकाशित । मैथिली मे किछु कविता प्रकाशित तथा आकाशवाणी सँ प्रसारित । कविताक अतिरिक्त नाट्य लेखन । सम्पर्क-रेंटल फ्लैट-417, लोहियानगर, कंकड़बाग कालोनी, पटना-20

धीरेन्द्र कुमार झाः जन्म- 29 जून 1960 । पटना उच्च न्यायालय मे अधिवक्ता। मैथिली मे किछु कविता ओ कथा प्रकाशित एवं प्रसारित । सम्पर्क-श्री भवन, कविरमण पथ, बोरिंग रोड, पटना ।

शिवशंकर श्रीनिवास : जन्म- 2 जुलाइ 1953, लोहना (मधुबनी) । 'अदहन' शीर्षक सँ कथा संग्रह प्रकाशित । विभिन्न भाषा मे कथा सभ अनूदित । मैथिलीक कथाकार-कवि-समीक्षक । सम्पर्क-ग्रा० पो०-लोहना, भाया-सरिसव-पाही, जि० मधुबनी ।

मोहन भारद्वाज : जन्म-9 फरवरी 1943, मैथिलीक चर्चित आलोचक-समीक्षक एवं सम्पादक । 'अनवरत' नाम सँ निबन्ध संग्रह प्रकाशित । सम्पर्क-5/25 आर०ब्लाक, पटना ।

मनमोहन झाः जन्म-11 अक्टूबर 1920, सरिसव ग्राम मे । 'अश्रुकण' आ 'वीरभोग्या' कथा संग्रह प्रकाशित । मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार । सम्पर्क-ग्रा०-सरिसव, पो०-सरिसव-पाही, जिला-मधुबनी ।

अनीता देसाइ : जन्म- 1937, अंग्रेजीक कथाकार एवं उपन्यासकार । 'फायर ऑन दी माउन्टेन' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार 1978 मे प्राप्त । अनेक पोथी प्रकाशित।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया स्टाफ कोऑपरेटिव क्रेडिट एण्ड थ्रीफ्ट सोसाइटी लि०, पटना

उत्तरोत्तर प्रगति की ओर

31-3-95 को प्रगति की एक झलक (अनाकेंक्षित)

सदस्य संख्या	–	454
हिस्सा-पूँजी	–	7,41,030
सदस्यों को ऋण	–	18,54,595
ऋण बसूली	–	16,88,903

विशेष आकर्षण–सावधि जमा पर बैंक दर से 2% अधिक ब्याज ।

आपके उत्तरोत्तर सहयोग के आकांक्षी

डी० राम
अध्यक्ष

पी० के० सेन
कोषाध्यक्ष

घनश्याम प्रसाद सिन्हा
अवैतनिक सचिव

मूल्य–20 टाका सन्धान–1 जनवरी' 1997

सन्धान

मिथिला समाजक प्रगतिशील चेतनाक रचनात्मक अभिव्यक्ति लेल समर्पित ओ प्रतिबद्ध अछि

सम्पादकीय सम्पर्क: सी० 407, आफिसर्स हॉस्टल, बेलीरोड, पटना